लेखक की अन्य पुस्तकें

पुस्तकालय संगठन और संचालक

पुस्तकालय-विज्ञान



आवरण-शिल्पी

कांजिलाल



संस्करण :

प्रथम--नवम्बर, १९५७

मूल्य :

पाँच रुपये



प्रकाशक

ओम्प्रकाश बेरी

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

पो० बॉ० न० ७०, ज्ञानवापी

वाराणसी-१

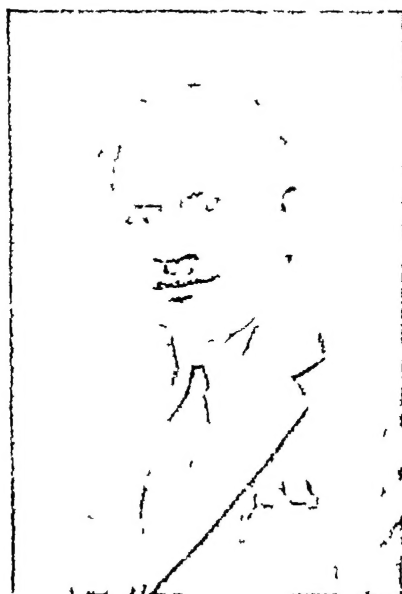


मुद्रक

दुर्गा प्रेस

आदिविश्वेश्वर, वाराणसी

भूमिका लेखक



श्री मगलानन्द एम ए, डिप एल एस्सी, पी ई एस
अध्यक्ष
राजकीय केन्द्रीय पुस्तकालय
उत्तर-प्रदेश, प्रयाग

भूमिका

ज्ञान और विज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र का विकास सदैव ही क्रमिक रहा है और पुस्तकालय-क्षेत्र भी इसका अपवाद नहीं है। अतः अन्य क्षेत्रों की भाँति पुस्तकालय-क्षेत्र के उद्भव और विकास का अनुसंधान भी आवश्यक है। श्री द्वारकाप्रसाद जी शास्त्री की यह पुस्तक–जिसकी भूमिका लिखने के लिए उन्होंने मुझे आमंत्रित किया है--इस दिशा की ओर एक अनूठा और सराहनीय प्रयास है।

अभी तक पाश्चात्य लेखकों की यह धारणा रही है कि भारतीय पुस्तकालयों के विकास का कोई सुव्यवस्थित रूप नहीं रहा। उनकी यह धारणा इस मान्यता पर आधारित है कि भारतीयों ने ईस्वी सन् की सातवीं, आठवीं शताब्दी में विदेशियों से लिपि-ज्ञान प्राप्त किया। किन्तु लेखक ने प्रस्तुत पुस्तक के प्रथम अध्याय में ही भारतीय भाषाओं और लिपियों का विवेचन करते हुए भारतीय वाङ्मय के अन्तर्साक्ष्यों और कतिपय वहिर्साक्ष्यों से यह सिद्ध करने का सफल प्रयास किया है कि भारत में अति प्राचीनकाल से ही लिखने की परम्परा रही है और फलतः भारतीय पुस्तकालयों का विकास भी सुव्यवस्थित योजना का एक अङ्ग रहा है।

इस मान्यता के आधार पर लेखक ने सिन्धु सभ्यताकाल से लेकर आधुनिक काल तक के लम्बे युग को कतिपय अध्यायों में वैज्ञानिक रीति से विभक्त कर के तत्कालीन पुस्तकालयों की परम्पराओं का सप्रमाण विवेचन किया है। यद्यपि राजनीतिक उलट फेर तथा अन्य कारणों से प्राचीन काल के पुस्तकालयों के सम्बन्ध में आज पर्याप्त सामग्री उपलब्ध नहीं है, फिर भी सम्पूर्ण पुस्तक में प्राप्त सामग्री का व्यवस्थापन, विषय का सरस वर्णन, आँकड़ों और तथ्यों का विधिवत् संग्रह और विभिन्न विचारधाराओं का सुन्दर समन्वय इस बात को प्रकट करता है कि लेखक ने बहुत लगन के साथ इस कार्य को किया है और यत्र-तत्र बिखरी हुई विविध सामग्री को सुचारु रूप से संगृहीत करके उन्हें यथास्थान

व्यवस्थित दिया है। वैदिककाल, बौद्धकाल, मुस्लिम एव बृटिशकाल तथा स्वाधीनकालीन पुस्तकालयों का एक शृंखलाबद्ध वर्णन पुस्तकालयाध्यक्षों एव सामान्य पाठकों के लिए भी महत्त्वपूर्ण सूचना सामग्री एव ज्ञानवृद्धि का साधन प्रदान करता है।

प्रस्तुत विषय के विवेचन की गम्भीरता और पूर्णता तो विशेषज्ञों के लिए भी पर्याप्त शोध की अपेक्षा रखती है। फिर भी शास्त्री जी ने व्यक्तिगत सीमित साधनों के अन्तर्गत इस ओर जो प्रयास किया है वह अपने ढग का सर्व प्रथम होने के कारण इस क्षेत्र के अन्य अनुसधानकर्त्ताओं के लिए अवश्य ही पथ-प्रदर्शक होगा। अभीतक कुछ फुटकर लेखों को छोड़ कर भारतीय पुस्तकालयों के सुव्यवस्थित इतिहास का पुस्तक रूप में पूर्णतः अभाव रहा है। वर्त्तमान युग मे पुस्तकालयों के मानव जीवन का अभिन्न अङ्ग हो जाने के कारण श्री शास्त्रीजी की यह पुस्तक अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। अतः यदि इस पुस्तक का भारतीय तथा विदेशी भाषाओं में अनुवाद हो सके तो पुस्तकालय-जगत् के लिए बहुत ही हितकर होगा। साथ ही इससे भारत के सामाजिक और आर्थिक जीवन के अनुरूप पुस्तकालय-विकास की योजना बनाने में भी सहायता मिल सकेगी।

राष्ट्रभाषा हिन्दी में लिखित इस पुस्तक द्वारा भारतीय पुस्तकालय-साहित्य के एक रिक्त स्थान की पूर्त्ति हुई है। अतः इस कृति के लिए श्री शास्त्री जी समस्त पुस्तकालय-जगत् की बधाई के पात्र हैं। मुझे आशा है कि भविष्य में भी इसी प्रकार उनकी अनूठी कृतियाँ प्राप्त होती रहेंगी।

राजकीय केन्द्रीय पुस्तकालय
इलाहाबाद
२६–१०–'५७ } —मगनानन्द

दो शब्द

विश्व की संस्कृति इसके पुस्तकालयों में सुरक्षित रहती है और वह भवि
की शान्ति और समृद्धि की योजना बनाने में बहुत सहायक सिद्ध होती है
भारतीय सभ्यता और संस्कृति भी अतीत के व्यक्तियों और कार्यों का लेर
अपने पीछे छोड़ चुकी है जो कि धीरे-धीरे बढ़ता रहा है। ऐसा संग्रह य
भोज-पत्रों, ताड़-पत्रों, हस्तलिखित पोथियों और अंत में मुद्रित पुस्तकों औ
दृश्य-श्रव्य उपकरणों के रूप में पाया जाता है। इस प्रकार भारतीय सभ्य
नाना रूपों से एक साधन उपस्थित करके विजयपूर्वक आगे बढ़ती रही है
इसलिए सम्पूर्ण सम्भव उपायों और विधियों से पुस्तकालयों की रक्षा औ
उनका उपयोग होना चाहिए।

खेद है कि पाश्चात्य विचारकों ने भारतीय पुस्तकालय की प्राचीनता व
यथोचित सीमा तक स्वीकार नहीं किया है। उनमें से अधिकांश विद्वानों व
मत है कि भारतीयों ने लिखने की कला भी सातवीं, आठवीं शताब्दी म
विदेशियों से सीखी तथा मूल ब्राह्मी लिपि भी मौलिक आविष्कार नहीं है। स्पष्ट है कि उनके मत से भारत में पुस्तकालयों की परम्परा भी बहुत बाद की हैं। परन्तु यह मत सर्वथा भ्रामक और निराधार है। यदि वे भारतीय सभ्यता और संस्कृति को अति प्राचीन न स्वीकार करें तो भी आज से ५,००० वर्ष पूर्व सिन्धुघाटी की सभ्यता से अब तक के लम्बे युग के अन्तर्साक्ष्य से यह प्रमाणित होता है कि यहाँ के निवासियों की अपनी भाषा और लिपि थी और वे लिखना-पढ़ना जानते थे। वे अपने विचारों को विविध रूपों से प्रकट करते थे। आज की भारतीय भाषाएँ, लिपियाँ और पुस्तकालय उसी परम्परा के विकसित रूप हैं।

इस पुस्तक में मैंने प्राप्त सामग्री के आधार पर सिन्धु सभ्यता से अब तक

के काल को सात भागों में विभाजित करके पुस्तकालयों के उद्भव और विकास का सप्रमाण विवेचन किया है। राजनीतिक उथल-पुथल के घोर संघर्ष से गुजरने के कारण भारत के विभिन्न कार्यालयों से तथ्यपूर्ण आँकड़े पर्याप्त रूप में नहीं मिल सके हैं। फिर भी सिन्धु-घाटी की चित्रलिपि की कड़ी से द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत आयोजित पुस्तकालयों की कड़ी क्रमबद्ध मिली हुई है।

अन्त में मैं उन समस्त मित्रों और संस्थाओं के प्रति अपना आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने इस पुस्तक के लिए सामग्री जुटाने में अपना सहयोग प्रदान किया है। मेरे आदरणीय मित्र श्री मगनानन्दजी, अध्यक्ष, सेन्ट्रल स्टेट लाइब्रेरी, उत्तर प्रदेश ने इस पुस्तक की भूमिका लिखने का कष्ट किया है। एतदर्थ मैं उनका विशेष रूप से आभारी हूँ। यदि इस पुस्तक द्वारा भारतीय पुस्तकालय-जगत को कुछ भी लाभ हुआ तो मैं अपने परिश्रम को सफल समझूँगा और चेष्टा करूँगा कि इसका द्वितीय संस्करण अपेक्षाकृत अधिक परिवर्द्धित रूप में उपस्थित किया जा सके।

दीपावली
२०१४

—द्वारकाप्रसाद शास्त्री

विषय-सूची

अध्याय १

भारतीय पुस्तकालयों की पृष्ठभूमि

पुस्तकालय की मान्यता

अब यह बात सार्वभौम रूप से स्वीकार कर ली गई है कि पुस्तकालय केवल शिक्षण-संस्थाओं के लिए ही आवश्यक सहायक नहीं हैं, बल्कि सभी प्रकार के बौद्धिक, सामाजिक और आर्थिक क्रियाकलाप के लिए भी जरूरी हैं। पुस्तकालयों और उनमें व्यवस्थित पुस्तकों की संख्या से किसी भी देश की प्रगति का अनुमान सरलतापूर्वक लगाया जा सकता है। पुस्तकालय की सबसे बड़ी कसौटी उसके उपयोग करनेवालों की संख्या है जिनके लिए वह स्थापित किया गया हो। अतः अब राष्ट्रीय उत्थान में पुस्तकालय-आन्दोलन को धीरे-धीरे एक प्रभावकारी साधन के रूप में मान्यता मिल रही है। साथ ही यह अनुभव किया जाने लगा है कि पुस्तकालय की व्यवस्था एक आर्थिक व्यवस्था है, उसके अभाव में प्रारम्भिक शिक्षा पर व्यय की जाने वाली धनराशि व्यर्थ हो जायगी क्योंकि वह शिक्षा फिर निरक्षता में बदल जायगी।

पृष्ठभूमि के आधार

भारत का क्षेत्रफल लगभग १२,६६,६०० वर्गमील है। जन-संख्या के दृष्टिकोण से संसार में इसका दूसरा स्थान है। १९५१ की जन-गणना के अनुसार यहाँ की जन-संख्या ३५,६८,७९,३९४ थी। यह संख्या बढ़ कर १९५६ में ३८·६५ करोड़ तक पहुँच चुकी है। यह विशाल जन-संख्या १४ प्रदेशों तथा ६ केन्द्र द्वारा शासित क्षेत्रों के ३०१८ नगरों और ५,५८,०८९ गाँवों मे बसी हुई है। इनमें से १९५१ की जन-गणना के अनुसार केवल १६·६१ प्रतिशत लोग ही साक्षर हैं और साक्षरता के सुलभ साधन पुस्तकालयों की संख्या तो कुल ३२००० ही है। फिर भी लिपि के आविष्कार से लेकर अब तक के इन पुस्तकालयों का भारत में क्रमशः विकास कैसे हुआ ? यह एक मनोरञ्जक एवं खोजपूर्ण कहानी है। स्वतन्त्र भारत में पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत पुस्तकालयों के विकास का जो प्रयास किया जा रहा

है, वह भी पुस्तकालय के इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण अङ्ग है। लेकिन इस विषय को भलीभाँति समझने के लिए भारत की भाषाओं, भारतीय लिपियों, भारत में लिखने के प्रचार की प्राचीनता और भारतीय इतिहास की राजनीतिक उथल-पुथल को संक्षेप में जान लेना आवश्यक है क्योंकि इन बातों का भारतीय पुस्तकालयों के ऊपर विशेष प्रभाव पड़ता रहा है। ये ही भारतीय पुस्तकालयों की पृष्ठभूमि हैं। भारतीय शिक्षा का तो पुस्तकालयों से घनिष्ट सम्बन्ध रहा ही है, अतः उसका वर्णन पुस्तकालयों की बदलती हुई स्थिति के साथ-साथ ही करना उचित होगा। अब उपर्युक्त चार विषयों में से प्रत्येक की संक्षिप्त चर्चा की जायगी।

भारतीय भाषाएँ

भारतीय गणतन्त्र में अनेक जातियों और नाना भाषाओं के लोग बसे हुए हैं। भारत के इस भाषा-समूह का विवेचन स्वर्गीय सर जार्ज ग्रियर्सन ने 'लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इण्डिया' नामक ग्रन्थ के बीस खण्डों में किया है। इसमें उन्होंने भारत की भाषाओं की संख्या १७९ और उपभाषाओं की संख्या ५४४ दी है। इन १७९ भाषाओं में से १०६ भोट-चीन भाषा गोष्ठी के अन्तर्गत आती हैं जिनमें से कितनी ही तो छोटे-छोटे कबीलों या उपजातियों की भाषाएँ हैं। इनमे से कुछ भाषाएँ तो बहुत थोड़े से लोगों में प्रचलित हैं।

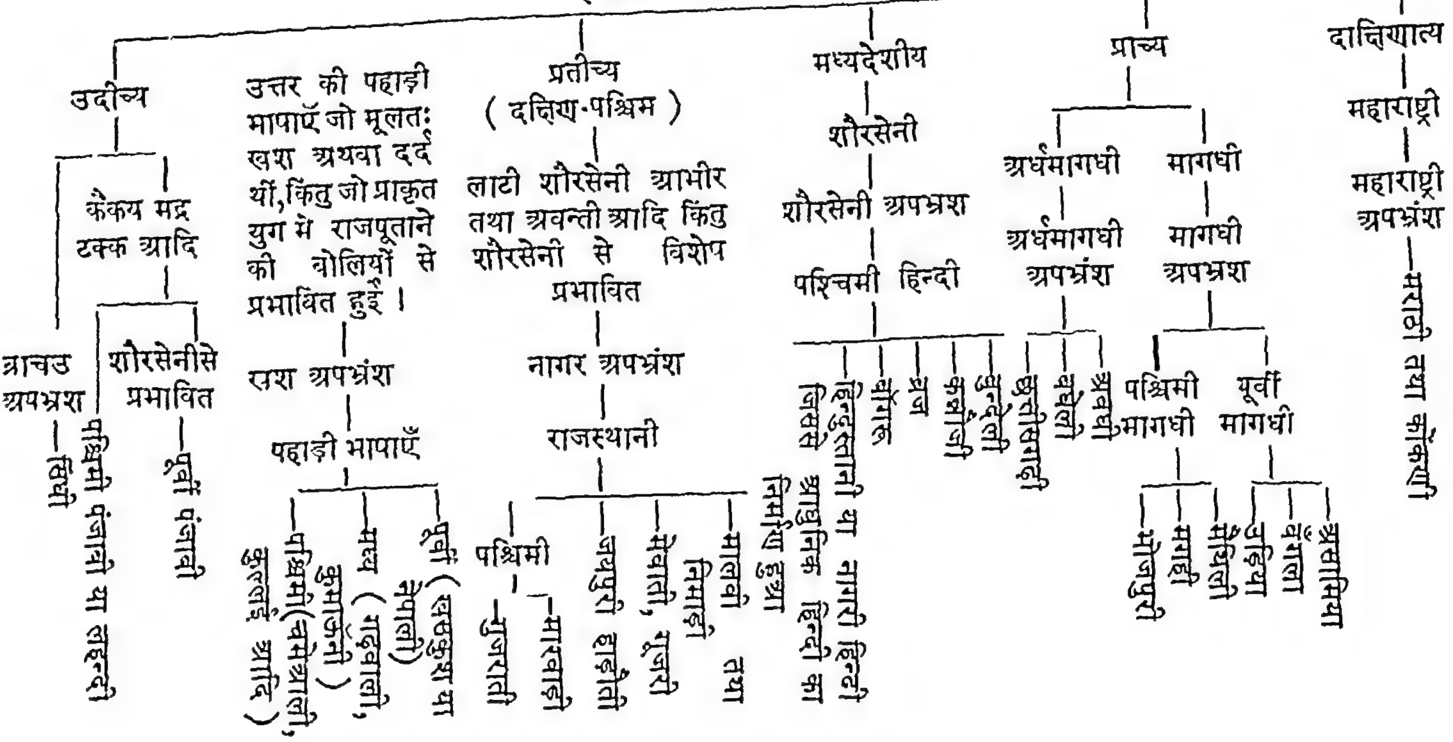
इनके अतिरिक्त २४ और भाषाएँ अन्य भाषा-गोष्ठियों के अन्तर्गत हैं जो नगण्य हैं। शेष जो भाषाएँ बचती हैं उनमें से निम्नलिखित १५ भाषाएँ ऐसी हैं जो भारत की प्रधान, मुख्य या साहित्यिक भाषाएँ कही जा सकती हैं :—

हिन्दी, उर्दू, बँगला, उड़िया, मराठी, गुजराती, सिन्धी, काश्मीरी, पंजाबी, नेपाली, आसामी, तेलगु, कन्नड़, तामिल और मलयालम।

इनमें से एक से ग्यारह तक की भाषाएँ आर्य गोष्ठी की और शेष चार द्राविड़ गोष्ठी की हैं।

भारत में प्राचीन तथा मध्य युग में भाषाओं का इतना विभेद नहीं था। हजार बारह सौ या दो हजार वर्ष पहिले देश के एक बड़े हिस्से में तब एक ही भाषा चलती थी। उस समय इन सारी भाषाओं और उपभाषाओं के आदि रूप में चार, पाँच या छः प्रकार की प्राकृतें चलती थीं। वे एक दूसरे के इतना निकट थीं कि लोग परस्पर व्यवहार से ही उनको समझ लिया करते थे। धीरे धीरे उन्हीं प्राकृतों से इन भाषाओं का उद्गम और विकास हुआ। इसको इस प्रकार समझा जा सकता है :—

भारतीय आर्य भाषाओं का विकास (डा० सुनीतिकुमार चटर्जी के मतानुसार)



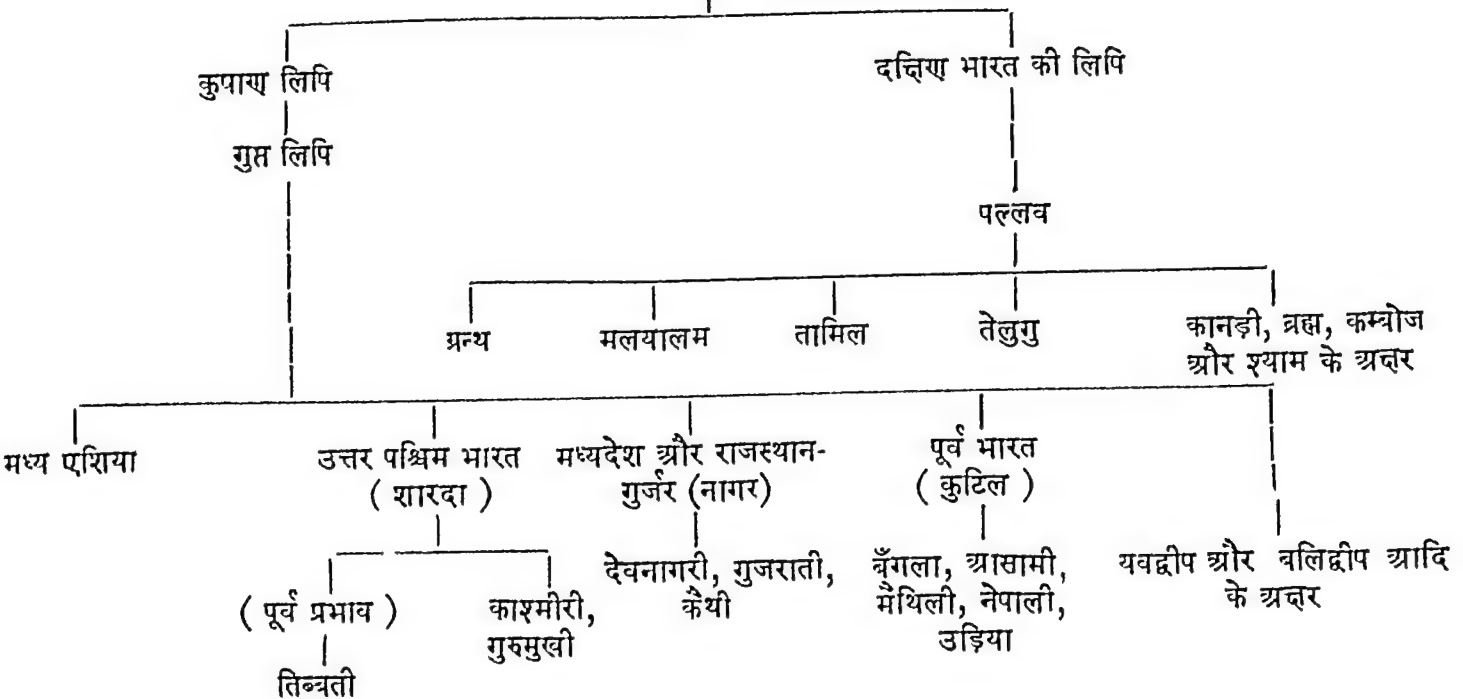
जब देश में प्राकृतों का प्रचलन था उस समय जनता अपनी प्रान्तीय या स्थानीय बोलचाल की भाषा को लेकर अपना दैनिक कार्य चलाती थी। लेकिन उच्च स्तर के तथा शिक्षित लोग जिनके हाथों में देश के संचालन का भार था, हिन्दू राज्य में संस्कृत भाषा की सहायता से कार्य चलाते थे। इसी परम्परा के अनुसार मुसलमानी शासनकाल में फारसी की सहायता से तथा अँग्रेजी शासन काल में अँग्रेजी भाषा की सहायता से कार्य होता रहा। अब स्वतन्त्र भारत में हिन्दी भाषा को इसके लिए चुना गया है।

ऊपर जिस संस्कृत भाषा का जिक्र किया गया है, वह आर्यों की भाषा थी। उसी भाषा में आर्यों के मुख्य और आदि ग्रन्थ 'वेद' आज भी पाये जाते हैं। इस संस्कृत भाषा के प्राचीन रूप को वैदिक संस्कृत और बाद के रूप को लौकिक संस्कृत कहते हैं। बाद का साहित्य जिसमें पुराण, रामायण आदि सम्मिलित हैं, सब लौकिक संस्कृत में लिखा गया।

इस प्रकार प्राचीन भारत के पुस्तकालयों में संस्कृत तथा प्राकृत आदि की पोथियों की प्रधानता रही। समय के परिवर्तन के साथ-साथ उनमें अन्य भाषाओं के ग्रन्थों को स्थान मिला और आज के भारतीय पुस्तकालयों मे भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त अनेक विदेशी भाषाओं की पुस्तकें बहुत बड़ी संख्या मे पाई जाती हैं।

भारतीय लिपियाँ

चूँकि पुस्तकालयों में लिखित ज्ञान-सामग्री का संग्रह होता है। इस-लिए भारतीय पुस्तकालयों की परम्परा के सम्बन्ध में यहाँ की लिपियों का भी ज्ञान आवश्यक है। प्राचीन काल में भारत में ब्राह्मी (पाली ब्रभी) और खरोष्ठी नामक दो लिपियाँ प्रचलित थीं। इनमें से ब्राह्मी एक प्रकार से राष्ट्रीय लिपि थी। इसका प्रचार पश्चिमोत्तर प्रदेश को छोड़ कर समस्त भारतवर्ष में था। यह बाईं ओर से दाहिनी ओर को लिखी जाती थी। पश्चिमोत्तर प्रदेश मे खरोष्ठी लिपि का प्रचार था और यह दाहिनी ओर से बाईं ओर को लिखी जाती थी। खरोष्ठी लिपि का सम्बन्ध विदेशी सेमिटिक अरमइक लिपि से है। लेकिन ब्राह्मी लिपि आर्यों का मौलिक आवि-ष्कार था। यद्यपि आर्य सभ्यता बहुत पुरानी है फिर भी ई० पू० ३०० के पहिले की आर्य भाषा में लिखा हुआ कोई भी लेख न तो अभी तक मिला है और न पढ़ा ही गया है। इस लिए मौर्ययुग की ब्राह्मी लिपि को ही आधुनिक भारतीय लिपियों में आदि लिपि मानना पड़ता है। मध्य तथा आधुनिक कालों की समस्त भारतीय लिपियाँ इस ब्राह्मी लिपि से निकली हैं। इनको इस प्रकार समझा जा सकता है :—


प्राचीन भारत की
ब्राह्मी लिपि
कुषाण लिपि
गुप्त लिपि
दक्षिण भारत की लिपि
पल्लव
ग्रन्थ
मलयालम
तामिल
तेलुगु
कानड़ी, ब्रह्म, कम्बोज और श्याम के अक्षर
मध्य एशिया
उत्तर पश्चिम भारत (शारदा)
मध्यदेश और राजस्थान-गुर्जर (नागर)
पूर्व भारत (कुटिल)
(पूर्व प्रभाव)
तिब्बती
काश्मीरी, गुरुमुखी
देवनागरी, गुजराती, कैथी
बँगला, आसामी, मैथिली, नेपाली, उड़िया
यवद्वीप और बलिद्वीप आदि के अक्षर

भारतीय प्राचीन पुस्तकालयों में भी ब्राह्मी लिपि में लिखे ग्रन्थ नहीं मिलते किन्तु शिलालेख आदि कुछ फुटकर नमूने प्राप्त हैं। पुस्तकालयों में ब्राह्मी लिपि से उत्पन्न अन्य प्रसिद्ध लिपियों में लिखे एव छपे ग्रंथ पाये जाते हैं।

भारत में लिखने के प्रचार की प्राचीनता

भारत में लिखने की प्रथा अति प्राचीन काल से चली आ रही है। यहाँ प्रकृति की कृपा से भोज-पत्र और ताड़-पत्र प्राप्त थे। अतः उन पर लिखाई का काम होता था। लेकिन यहाँ की जलवायु ऐसी है कि भोज-पत्र, ताड़-पत्र और कागज पर लिखे ग्रथ हजारों वर्ष तक नहीं ठहर सकते। फिर भी भोज-पत्र पर लिखा हुआ सबसे पुराना सस्कृत ग्रन्थ 'सयुक्तागम' नामक बौद्ध सूत्र है। वह डा० स्टाइन को खेतान प्रदेश के खड़लिक स्थान में मिला था। उसकी लिपि ई० सन् की चौथी शताब्दी की मानी जाती है। ताड़-पत्र पर सबसे पुराना ग्रन्थ तुरफान मध्य एशिया में अश्वघोष के तीन नाटकों का ब्राह्मी लिपि में लिखित त्रुटित अश के रूप में मिला है। वह ई० सन् की दूसरी शताब्दी के आस-पास का लिखा माना जाता है। कागज पर लिखे चार सस्कृत के ग्रथ मध्य एशिया में यारकन्द नगर से ६० मील दक्षिण में 'कुगिअर' स्थान से श्री वेबर महोदय को प्राप्त हुए जिनका समय डा० हार्नली ने ई० सन् की पाँचवीं शताब्दी का अनुमान किया है। प्राचीन शिलालेख मौर्यवशी राजा अशोक के समय ई० सन् की तीसरी शताब्दी के हैं जो पत्थर के विशाल स्तम्भों पर और चट्टानों पर प्रायः सारे भारतवर्ष में पाये जाते हैं। अशोक से पूर्व के भी दो छोटे शिलालेख अजमेर जिले के बड़ली गाँव से तथा नेपाल की तराई के पिप्रावा नामक स्थान के एक स्तूप के भीतर से पात्र पर मिले हैं। इसकी लिपि अशोककालीन लिपि से पुरानी है और सम्भवतः ई० पू० ४४३ की है। इन शिलालेखों से ऐसा मालूम होता है कि ई० सन् के पूर्व पाँचवीं शताब्दी में लिखने का प्रचार इस देश में साधारण बात थी।

इनके अतिरिक्त ई० पू० ३२६ में भारत पर आक्रमण करने वाले सिकन्दर महान के एक सेनापति निआर्क्स ने भी लिखा है कि 'यहाँ के लोग रूई (रूई के चिथड़ों) को कूट कर लिखने के लिए कागज बनाते हैं।' मेगस्थनीज ने भी लिखा है कि 'यहाँ पर दस-दस स्टेडिआ (एक स्टेडिआ=६०६ फीट ६ इच) के अन्तर पर पत्थर लगे हैं, जिनसे धर्मशालाओं का तथा दूरी का पता चलता है। नये वर्ष के दिन भावी फल (पचाङ्ग) सुनाया जाता है। जन्म-पत्र बनाने के लिए जन्म समय लिखा जाता है और न्याय स्मृति के

अनुसार होता है।' इन दोनों यूनानियों के वक्तव्य से स्पष्ट है कि ई० सन् की चौथी शताब्दी में यहाँ के लोग कागज बनाना जानते थे। पञ्चाङ्ग और जन्म-पत्र बनते थे और मीलों के सूचक पत्थर भी लगते थे। ये बातें लेखन-कला की प्राचीनता को प्रकट करती हैं। बौद्ध ग्रंथों में लिखने की कला की प्रशंसा की गई है। जातक के ग्रंथों में खानगी तथा सरकारी पत्रों, कर्जदार की तहरीरों, पोत्यकों (पुस्तकों), कुटुम्बसम्बन्धी आवश्यकीय विषयों, राज-कीय आदेशों तथा धर्म के नियमों को सुवर्ण-पत्रों पर खुदवाए जाने का वर्णन मिलता है। महावग्ग (विनयपिटक का एक ग्रन्थ) में लेखा (लिखना) गणना (पहाड़ा) और रूप (हिसाब) की पढ़ाई का, जातकों में पाठ-शालाओं तथा विद्यार्थियों के लिखने के फलक (तख्ती) का और 'ललित विस्तर' ग्रंथ में बुद्ध का लिपिशाला में जा कर अध्यापक विश्वामित्र से चन्दन की पाटी पर सोने के वर्णक (कलम) से लिखना सीखने का वर्णन मिलता है।

इन उद्धरणों से ई० पू० की छठीं शताब्दी के आस-पास की लेखन दशा का पता लगता है और सिद्ध होता है कि उस समय लिखने का रिवाज एक साधारण बात हो गई थी। स्त्रियाँ और बालक भी लिखना जानते थे और प्रारम्भिक पाठशालाओं की पढ़ाई ठीक ऐसी ही थी, जैसी कि आज देहाती खानगी पाठशालाओं की है।

महाभारत, स्मृति, कौटिल्य के अर्थशास्त्र और वात्स्यायन के कामसूत्र आदि ग्रन्थों में भी लिखना और लिखित पुस्तकों का उल्लेख पाया जाता है। पाणिनि (ई० पू० ५००) ने अष्टाध्यायी में 'लिपि' (लिखना), लिपि-कर शब्द, स्वस्ति के चिह्न और ग्रन्थ का भी उल्लेख किया है। उन्होंने कई ग्रंथों और अपने पूर्ववर्त्ती लगभग १२ वैयाकरणों के नाम भी गिनाए हैं। पाणिनि से भी पूर्व यास्क ने अपने निरुक्त मे अपने से पूर्ववर्त्ती निरुक्तकारों के नाम गिनाए हैं जिनसे पता चलता है कि यास्क और पाणिनि से बहुत पहले व्याकरण और निरुक्त के ग्रंथ लिखे गए थे, जो आज प्राप्त नहीं हैं। छांदोग्य उपनिषद और ऐतरेय आरण्यक में क्रमशः स्वरों और उनके प्रयत्नों का विवेचन मिलता है। शतपथ ब्राह्मण मे लिङ्गों के भेद एक वचन, बहुवचन आदि पाये जाते हैं।

उपर्युक्त प्रमाणों से, उपनिषद्, आरण्यक और ब्राह्मण ग्रंथों से पूर्व व्याक-रण ग्रन्थों के होने का पता लगता है। यदि उस समय तक लिखने का प्रचार न होता तो उसके व्याकरण और पारिभाषिक शब्दों की चर्चा कैसे

होती ? व्याकरण रचना लेखन कला की उन्नत दशा में होती है। अतः उस समय लेखन-कला उन्नत दशा में थी, ऐसा अनुमान किया जाता है।

ऋग्वेद में छन्दों के नाम दिए गये हैं। वाजसनेयि सहिता में कुछ छन्दों के भेद भी दिए गए हैं। अथर्ववेद में छन्दों की सख्या भी ११ लिखी है। तैत्तिरीय सहिता, मैत्रायणी सहिता, काठक सहिता तथा शतपथ ब्राह्मण में कई छन्दों और उनके पादों के अक्षरों की सख्या भी गिनाई गई है। लिखना न जानने वाली जातियों में छन्दों के नाम का ज्ञान नहीं होता। अतः ब्राह्मण ग्रन्थों और वेदों में मिलने वाले छन्दों के नाम आदि से स्पष्ट है कि उस समय लेखन कला की उन्नति हो चुकी थी।

वेदों की सहिताओं में कितना एक अश और ब्राह्मण ग्रन्थों का बहुत बड़ा भाग गद्य मे है और वे वेदों की टीका स्वरूप हैं। लिखना न जानने से और वेदों के लिखित ग्रथ पास न होने से ब्राह्मण ग्रथों आदि की रचना की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

पठन शैली और लिखित पुस्तक

वेदों के मन्त्रों के शुद्ध उच्चारण का बहुत महत्त्व है। उसके पाठ में स्वर और वर्ण का अशुद्ध उच्चारण बहुत ही हानिकर बताया गया है। इस लिए उनका शुद्ध उच्चारण गुरु के मुख से सुन कर ही किया जाता था। यही कारण है कि वैदिक काल में वेदों को कठ करने की प्रथा थी। गुरु मत्र का एक एक अश पढ़ता था और शिष्य उसे उसी रूप में कण्ठ कर लिया करते थे। वेदों को लिख कर पढ़ने की मनाही थी और ऐसे लिखित पाठक को 'अधम पाठक' कहा जाता था। इससे यह भी स्पष्ट है कि वेदों के भी लिखित ग्रथ थे। वे ग्रथ भूलने पर सहायता देने के लिए अवश्य रहते थे। इसके अतिरिक्त व्याख्यान, टीका, व्याकरण, निरुक्त, प्रातिशाख्य आदि मे सुभीते के लिए उनका उपयोग किया जाता था।

धीरे-धीरे वेद के पठन-पाठन में लिखित पुस्तक का अनादर एक प्राचीन परम्परा-सी बन गई। उसी की देखादेखी वेदोत्तरकालीन अन्य ग्रथ भी कण्ठस्थ किये जाने लगे। इस प्रकार यहाँ शताब्दियों में यही परिपाटी हो गई कि मस्तिष्क और स्मृति ही पुस्तकालय का काम दे। इसीलिए बाद को ज्योतिष, वैद्यक, कोश आदि सभी विषयों के ग्रन्थ याद करने की सुविधा के कारण श्लोकबद्ध लिखे जाने लगे।

अतः अन्त में हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि रचनाकाल में सब ग्रथ विचारपूर्वक लिखकर ही बनाए गए। केवल अध्ययन-प्रणाली मे ही कण्ठस्थ

करना मुख्य समझा जाता रहा। इसीलिए बूलर महोदय ने बहुत खोज के बाद लिखा है कि 'इस अनुमान को रोकने के लिए कोई कारण नहीं है कि वैदिक समय में भी लिखित पुस्तकें मौखिक शिक्षा और दूसरे अवसरों पर सहायता देने के लिए काम में लाई जाती थीं।' बोधलिङ्क ने भी लिखा है कि 'मेरे मत में साहित्य के प्रचार में लिखने का उपयोग नहीं होता था परन्तु नए ग्रथों को बनाने में इसको काम में लाते थे। ग्रन्थकार अपना ग्रंथ लिख कर बनाता परन्तु फिर या तो उसे स्वय कण्ठस्थ कर लेता या औरों को कण्ठस्थ करा देता। कदाचित् प्राचीन काल मे एक बार लिखे ग्रंथ की प्रतिलिपि नहीं उतारी जाती थी, परन्तु मूल लिखित प्रति ग्रंथकार के वश में उसकी पवित्र यादगार की तरह रखी जाती रही और प्रायः गुप्त रहती थी।' रॉथ का मत है कि 'लिखने का प्रचार भारतवर्ष में प्राचीन समय से ही होना चाहिए क्योंकि यदि वेदों के लिखित ग्रंथ विद्यमान न होते तो कोई व्यक्ति प्रातिशाख्य न बना सकता।'

इस प्रकार उन पाश्चात्य विद्वानों के मत का कोई महत्त्व नहीं रह जाता जो यह मानते हैं कि भारतवासियों ने विदेशियों से छठीं, सातवीं शताब्दी मे लिखना सीखा।

भारत में ताड़-पत्र, भोज-पत्र, कागज, रूई का कपड़ा, लकड़ी की पाटी, रेशमी कपड़ा, चमड़ा, पत्थर, ईंट, सोना, चाँदी, ताँबा, पीतल, काँसा और लोहा लिखने के आधार थे और वर्णक (नड की कलम, बाँस की कलम) शलाका (लोहे की कलम), परकार और रेखापाटी का प्रयोग किया जाता था। इनके नमूने भी खोज में प्राप्त हुए हैं। अत. हमारे देश में पुस्तकालयों की परम्परा वैदिक काल से भी पुरानी रही है।

भारतीय इतिहास की रूपरेखा

भारतीय इतिहास को निम्नलिखित भागों में बाँटा जा सकता है :—

१—४००० ई० पू० से २००० ई० पूर्व तक।

२—२००० ई० पूर्व से ६०० ई० पूर्व तक।

३—६०० ई० पूर्व से ३०० ई० पूर्व तक।

४—३०० ई० पूर्व से इस्लामी विजय तक।

५—मुस्लिम काल।

६—अँग्रेजी काल।

७—स्वतन्त्र भारत।

इनमें से प्रथम चार भाग प्राचीन काल के अन्तर्गत आते हैं।

(१) ४००० ई० पूर्व से २००० ई० पूर्व तक

इस काल का क्रमबद्ध इतिहास बहुत ही विवादग्रस्त है। भारत के आदि निवासी कौन थे ? आर्य यदि बाहर से आये तो उनके पहले यहाँ किस जाति के लोग रहा करते थे ? क्या वे भी बाहर से आए थे अथवा यहीं के मूल निवासी थे ? आदि बातों पर अभी तक विद्वानों में एक मत नहीं हो पाया है। फिर भी हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की खुदाई से जो सामग्री प्राप्त हुई है, उससे यह सिद्ध होता है कि आज से चार हजार वर्ष पहले सिन्धु घाटी में एक उच्चकोटि की सभ्यता का विकास हो चुका था। इस काल की दूसरी महत्वपूर्ण घटना आर्यों का भारत में बाहर से आगमन है। ऐसा इतिहासकारों का मत है कि आर्य लोग ३००० ई० पू० से २५०० ई० पू० भारत में आए। उनकी अपनी उच्चकोटि की सभ्यता एवं संस्कृति थी।

(२) २००० वर्ष ई० पू० से ६०० ई० पू० तक

इस काल में आर्यों ने २००० ई० पू० से १५०० ई० पूर्व तक पूर्व और दक्षिण में अपने उपनिवेश बनाए। धार्मिक ग्रंथों की रचना की। अपने अनेक छोटे छोटे राज्य स्थापित किए। इस प्रकार इस काल में आर्य सभ्यता का उत्तरोत्तर विकास होता रहा।

(३) ६०० ई० पूर्व से ३०० ई० तक

इस काल में भारत का अधिकाश भाग आर्य सभ्यता से प्रभावित हो चुका था। सम्पूर्ण भारत अनेक जनपदों में बँट गया था। पाँचवी शताब्दी पूर्व से लोगों में आधिपत्य की भावना जोर पकड़ने लगी थी और सघर्ष शुरू हो चुके थे। इसके फलस्वरूप मगध में शिशुनाग वश की स्थापना हुई। साम्राज्यवादी नीति को अपना कर उसने अग और लिच्छवि जैसे गणतन्त्रों पर विजय प्राप्त की। धीरे धीरे ई० पू० चौथी शताब्दी तक पजाब और सिंधु को छोड़कर पूरा भारतवर्ष मगध राज्य के घेरे में आ गया था। इसी काल में ३२७ ई० पू० से ३२५ ई० पू० के बीच सिकन्दर महान् ने भारत पर चढ़ाई की। इसी बीच वैदिक धर्म के विरोध में धार्मिक क्रांतियाँ भी हुईं जिनके फलस्वरूप, भारतीय समाज वैदिक, जैन एव बौद्ध इन तीन धर्मों में बँट गया। ३२१ ई० पू० मगध का सिंहासन मौर्यों के हाथ आ गया। चन्द्रगुप्त मौर्य ने मगध साम्राज्य को हिन्दुकुश तथा हिरात तक फैला दिया। २७० ई०पू० से २३० ई०पू० तक सम्राट् अशोक मगध के सिंहासन पर रहा। उसके राज्यकाल में लगभग सारा भारतवर्ष मगध साम्राज्य के

अधीन आ गया। कलिङ्ग के युद्ध में घोर नर संहार से खिन्न हो कर उसने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया। फिर तो बौद्ध धर्म के भाग्य जग गए। भारत के कोने-कोने में तथा पड़ोसी राष्ट्रों में भी बौद्धधर्म का प्रचार एवं प्रसार हो गया। बौद्धधर्म की अहिंसा और शान्तिप्रियता की नीति का देश की राजनीति पर बुरा प्रभाव पड़ा। सम्राट् अशोक की सैनिक शक्ति का ह्रास होने पर देश के ऊपर विदेशी हमलों का तोंता सा बँध गया। यूनानी, शक, कुशन और हूण आदि विदेशी जातियों ने पश्चिमोत्तर की ओर से भारत पर भीषण आक्रमण किए। इस प्रकार २०० ई० पू० से ईसा की तीसरी शताब्दी तक राजनीतिक स्थिति बहुत ही डावाँडोल रही। धीरे-धीरे ३२० ई० में मगध में गुप्त साम्राज्य का उदय हुआ जिसने फिर एक बार देश मे एक सुदृढ़ राज्य स्थापित कर लिया। इतिहासकार इस 'गुप्तकाल' को भारत का 'स्वर्ण युग' कहते हैं।

(४) ३०० ई० पू० से इस्लामी विजय तक

गुप्तवश का साम्राज्य दो शताब्दियों तक भारत में जमा रहा। इस काल में वैदिक सभ्यता और संस्कृति का एक बार फिर उत्थान हुआ। लेकिन हूणों के आक्रमण ने गुप्त साम्राज्य को जर्जर कर दिया और सम्पूर्ण देश छोटे-छोटे राज्यों में बँट गया। यशोवर्धन, शशांक तथा हर्षवर्धन आदि राजाओं ने भारत में पुनः एक साम्राज्य स्थापित करने की चेष्टाएँ की किन्तु सफलता न मिल सकी। दक्षिण में चालुक्यों और उनके पश्चात् राष्ट्रकूटों का जोर रहा। बगाल में पालवंश और राजस्थान तथा कन्नौज में गुर्जर-प्रतिहार वंश के लोगों का जोर बना रहा। आपसी सघर्ष में इन लोगों की भी शक्ति नष्ट हो गई। इस प्रकार देश छोटे-छोटे राज्यों में बँट गया। फिर तो संगठित हो कर शत्रु से मोर्चा लेने की शक्ति देश में न रह गई।

सातवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक का समय भारतीय इतिहास में 'राजपूत काल' कहलाता है। महमूद गजनवी के हमले से १५० वर्ष बाद तक भारत पर विदेशी हमले नहीं हुए किन्तु इस बीच भी राजपूत लोग संगठित होने के बजाय आपस में लड़ते रहे और इस प्रकार उनकी शक्ति का ह्रास हो गया। बारहवीं शताब्दी के अंत में उत्तरी भारत में दो प्रसिद्ध राज्य थे—कन्नौज में गहरवार वंश का और दिल्ली अजमेर मे चौहान वंश का। ११९२ में मुहम्मदगोरी ने हमला करके इनको भी नष्ट कर दिया। इस प्रकार भारत मे इस्लामी राज्य स्थापित हुआ।

अध्याय २

भारतीय पुस्तकालयों का काल-विभाजन

काल-विभाग

जैसा कि पिछले अध्याय में कहा जा चुका है कि भारत में आर्यों का आगमन ३००० ई० पू० और २५०० ई० पू० के बीच हुआ। उससे पूर्व यहाँ पर 'सिंधु सभ्यता' का अस्तित्व पाया जाता है। हड़प्पा और मोहन-जोदड़ो की खुदाई से इस बात का स्पष्ट पता लगता है कि यहाँ पर आर्यों के आने से पहले भी एक सभ्य और सुसस्कृत सभ्यता मौजूद थी, यह बात दूसरी है कि उसका अधिक फैलाव न रहा हो। इस प्रकार आर्यों के आने से दो हजार वर्ष पूर्व की सिधु सभ्यता से ले कर अब तक के लगभग ६९५७ वर्षों को पुस्तकालय के उद्गम और विकास की दृष्टि से सात भागों में बाँटा जा सकता है :—

१—प्राक्वैदिक काल	५००० ई० पू०	से २५०० ई० पू०	तक
२—वैदिक काल	२५०० ई० पू०	से ५०० ई० पू०	तक
३—बौद्ध काल	५०० ई० पू०	से १२०० ई०	तक
४—मुस्लिम काल	१२०० ई०	से १७०० ई०	तक
५—सधि काल	१७०० ई०	से १८१३ ई०	तक
६—वृटिश काल	१८१३ ई०	से १९४७ ई०	तक
७—स्वाधीनता काल	१९४७ से अब तक		

आधार

सिंधु सभ्यता से ले कर वर्त्तमान काल तक को उपर्युक्त सात भागो में विभाजित किया गया है, उसका आधार अनेक ऐतिहासिक घटनाएँ हैं। सिंधु सभ्यता से वैदिक काल के बीच इतना लम्बा अन्तर है कि उसे एक अलग काल मानना उचित है। वैदिक काल ऋग्वेद के निर्माण काल से ले कर भगवान् बुद्ध के जन्म काल के लगभग तक माना गया है। उसके बाद से नालन्द पुस्तकालय के नष्ट होने तक बौद्ध काल और उसके पश्चात् मुगल-शासन की समाप्ति तक लगभग मोटे तौर पर मुस्लिम काल मान लिया गया है।

मुगल-शासन की समाप्ति से सन् १८१३ ई० तक के काल को सन्धि-काल इसलिए कहा गया है कि इस बीच पुराने ढर्रे से चले आ रहे पुस्तकालयों को कुछ मजबूत सहारा नहीं मिल सका। इससे वे वैसे बने रहे और कुछ तो सदा के लिए नष्ट हो गए। सन् १८१३ ई० से बृटिश काल का प्रारम्भ इसलिए माना गया है कि इसी सन् में पार्लियामेंट के आज्ञा-पत्र के अनुसार ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने भारतीयों की शिक्षा की जिम्मेदारी आंशिक रूप में अपने ऊपर ली और तदनुसार शिक्षा के साथ-साथ पुस्तकालयों का भी उत्तरोत्तर विकास होता गया। १९४७ ई० में अंग्रेजी राज्य के समाप्त होने पर पुस्तकालय विकास के लिए एक नये युग का प्रारंभ हुआ। यह काल स्वाधीनता काल है जो १५ अगस्त १९४७ ई० से प्रारंभ होता है। इस काल मे पुस्तकालयों की स्थापना और उनके विकास के लिए अनेक महत्त्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं।

प्रत्येक काल में पुस्तकालयों का विकास एक अजीब ढंग से होता रहा है। काल-विभाजन से यह बात न समझनी चाहिए कि एक काल में दी गई अवधि के बाद एक दम नए ढंग के पुस्तकालय हो गए होंगे। हर एक परवर्ती काल में पूर्ववर्त्ती काल के या कालों के ढग के पुस्तकालय किसी न किसी रूप मे रहे हैं। उदाहरणार्थ, बौद्धकालीन पुस्तकालयों के युग में भी वैदिक कालीन पुस्तकालयों की परम्परा बनी रही। जो लोग बौद्ध केन्द्रों के पुस्तकालयों से लाभ उठाना नहीं चाहते थे वे वैदिककालीन ढंग से शिक्षा प्राप्त करते रहे और उस ढग से व्यवस्थित पुस्तकालयों से लाभ उठाते रहे। इसी प्रकार मुस्लिम काल में यद्यपि पुस्तकालयों के रूप में कुछ परिवर्त्तन हुआ फिर भी पुराने वैदिक और बौद्धकालीन पुस्तकालय यत्र-तत्र बने ही रहे। आज भी जब कि पुस्तकालयों का सार्वजनिक रूप से प्रसार होता जा रहा है फिर भी विभिन्न-भाषा-प्रेमियों के, विभिन्न मतावलम्बियों के तथा विभिन्न रुचि के लोगों के अनेक स्वतंत्र पुस्तकालय विद्यमान हैं यद्यपि समय की माँग के अनुसार उनमें भी थोड़ा बहुत परिवर्त्तन आ ही गया है। इसलिए पुस्तकालय के उद्गम और विकास की परम्परा जानने के इच्छुक प्रत्येक व्यक्ति को यह बात स्मरण रखनी चाहिए कि प्रत्येक काल का एक दूसरे से घनिष्ठ सम्बंध है और प्रत्येक काल के पुस्तकालयों पर उस काल की सभ्यता और संस्कृति का तथा राजनीतिक उथल-पथल का गहरा प्रभाव पड़ा है।

पर और मिट्टी के कहूलों पर पाये जाते हैं। कई चिह्नों से मिला कर शब्द बनाए गए हैं और अक्षरों में मात्राएँ भी लगी हुई जान पड़ती हैं। कई लकीरों से मिला कर जिनकी सख्या १२ तक पहुँचती हैं, चिह्न बनाए जाते हैं जो अङ्क की अपेक्षा अक्षर जान पड़ते हैं। यह लिखावट दाएँ से बाईं ओर चलती है। सम्भव है कहीं समाप्त होती हुई पक्ति को जारी रखने के लिए बाईं ओर से भी पक्ति को आरम्भ किया गया है। लिपि चिह्न की यह सख्या बताती है कि सिन्धु की लिपि अक्षर पर आश्रित न हो कर ध्वन्यात्मक वर्णों पर आश्रित है।"

पुस्तकालय

इस प्रकार सिन्धु सभ्यता के निवासियों की उनकी अपनी लिपि और भाषा थी। वे अपने विचारों को वृक्ष की छालों, लकड़ी की तख्तियों, भोजपत्रों तथा ताड़-पत्रों पर प्रकट किया करते रहे होंगे। इस प्रकार की लिखित सामग्री को वे एकत्र करके रखते रहे होंगे जो कि आधुनिक पुस्तकालयों के आदि रूप थे। सिन्धु सभ्यता की सुसस्कृत जनता की शृखला पञ्जाब से लेकर सिन्ध और बलूचिस्तान तक फैली हुई थी और उसके साथ ही ऐसे पुस्तकालय भी विद्यमान रहे होंगे। ऐसा अनुमान किया जा सकता है कि सिन्धु सभ्यता के इस केन्द्र का विनाश सिन्धु की भयङ्कर बाढ़ तथा बाहरी आक्रमणों द्वारा हुआ और उसके साथ ही भारत की आदि सभ्यता के वे पुस्तकालय भी सदा के लिए नष्ट हो गए।

अध्याय ४

वैदिककालीन पुस्तकालय

सिन्धु सभ्यता के नष्ट होने के बाद भारत को पुनः अपने उस गौरव तक पहुँचने में अनेक शताब्दियाँ बीत गईं। इतिहासज्ञों का मत है कि इस सभ्यता के अन्त के बाद लगभग २००० ई० पू० आर्य लोग भारत में आए। वे बहुत ही सभ्य और सुसंस्कृत थे। उनके पूर्वज आर्यों ने एक मौलिक ब्राह्मी लिपि का आविष्कार किया था। उसका विकास होते-होते उसकी वह वर्णमाला बन गई थी, जो आज की देवनागरी वर्णमाला का पूर्वरूप थी। आर्यों की भाषा संस्कृत थी और वेद उनके धार्मिक ग्रन्थ थे।

शिक्षा

इस वैदिक काल को शिक्षा और साहित्य की दृष्टि से छः भागों में बाँटा जा सकता है :—

१. ऋग्वेद काल

२. उत्तर वैदिक काल

३. ब्राह्मण काल

४. उपनिषद् काल

५. सूत्र काल

६. स्मृति काल

लेकिन पुस्तकालयों के उद्भव और विकास की दृष्टि से इस काल के अनेक उप-विभाजन की आवश्यकता नहीं है।

वैदिक काल में नगरों के कोलाहलपूर्ण वातावरण से दूर गुरुकुल स्थापित किए जाते थे। वहाँ बालकों के पढ़ने-लिखने और चरित्र-निर्माण के लिए सभी सुविधाएँ होती थीं। विद्यार्थी विलासिता से दूर रह कर शिक्षा ग्रहण करते थे। बालक गुरु के परिवार का अङ्ग बन जाता था। वहाँ बालकों के शरीर, मन, एवं आत्मा तीनों का प्रशिक्षण एवं विकास होता था। उस

काल में ऊँची से ऊँची शिक्षा निःशुल्क दी जाती थी। इस काल की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि गुरु स्वय चलते-फिरते पुस्तकालय हुआ करते थे। भोजपत्रों एव ताड़-पत्रों पर ग्रन्थ लिखे जाते थे किन्तु शिष्यों को लिखे हुए ग्रन्थों को पढ़ने की सख्त मनाही (निषेध) थी। गुरु के मुख से शिष्य वेदों की ऋचाओं तथा अन्य ज्ञान को सुन लेते थे और उसको कण्ठस्थ कर लिया करते थे। इसका परिणाम यह होता था कि ग्रथ बहुत ही कम सख्या में होते थे। वे ग्रथ गुरुओं के पास ही उनके निजी पुस्तकालय के रूप में रहते थे। निजी पुस्तकालयों की वह परम्परा आज भी वैदिक ब्राह्मणों के घरों में पाई जाती है। उस काल में एक-एक गुरु के बहुत से शिष्य हुआ करते थे। शिक्षा-दीक्षा के साथ ही साथ वे गुरुओं को ग्रन्थों की प्रतिलिपि करने में भी सहायता किया करते थे। इससे गुरुओं के वे पुस्तकालय नष्ट होने से बचे रहते थे।

वैदिक काल में ऋग्वेद काल से स्मृति काल तक राजतन्त्र चलता रहा। पुरोहितों, सभाओं और समितियों के सहयोग से राजतन्त्र की प्रणाली चलती रही किन्तु स्मृति काल में राजतन्त्र ढीला पड़ गया। इसका प्रभाव वैदिक-कालीन पुस्तकालयों पर भी पड़ा। अनेक ऐसे ग्रथ राजकीय पुस्तकालयों में रखने की आवश्यकता हुई जिनसे शासन के कार्य में सहायता मिल सकती थी। इस प्रकार के ग्रथों में स्मृति ग्रथ प्रधान समझे गए। इस प्रकार स्मृति ग्रथों से युक्त इस काल के राजकीय पुस्तकालय ही आजकल के केन्द्रीय, प्रान्तीय सरकारों के प्रशासन एव न्याय विभाग के पुस्तकालयों के आदि रूप थे। चूँकि वैदिक काल में शिक्षा कोरी धार्मिक न थी बल्कि उस समय के पाठ्य-क्रम में परा (आध्यात्मिक) और अपरा (लौकिक) दोनों प्रकार की विद्याएँ सम्मिलित थीं, इसलिए उनसे सम्बन्धित ग्रन्थ भी गुरुओं के गुरुकुलों के पुस्तकालय में होते थे।

उपनिषद् काल में आने पर अनेक नए विषय हो गए और उनके ग्रथ भी लिखे गए। छान्दोग्य उपनिषद् में पाठ्य क्रम की एक निम्नलिखित तालिका मिलती है :—

ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, इतिहास और पुराण, व्याकरण, राशि (अङ्क शास्त्र), दैव, शकुन विद्या, निधि (भूगर्भ विद्या), वाचोवाक्य (तर्क शास्त्र), एकायन (आचार शास्त्र), देव विद्या (भौतिकी), ब्रह्म विद्या, भूत विद्या, प्राणिशास्त्र, क्षत्र विद्या (सैन्य विज्ञान), नक्षत्र विद्या, ज्योतिष, सर्प विद्या, देवजन विद्या, शिल्प विज्ञान, सङ्गीत शास्त्र एव आयुर्वेद।

अतः स्पष्ट है कि उपनिषद्कालीन पुस्तकालयों में इन विषयों के ग्रन्थो का समावेश हो गया था।

स्मृति काल में ऊपर लिखे गए विषयों के अतिरिक्त वेदों की विविध शाखाओं, ब्राह्मण ग्रथों, आरण्यकों, उपनिषदों, शिक्षा, कल्प, निरुक्त, व्याकरण ग्रंथ, दर्शन, धर्म शास्त्र, वैखानस सूत्र, नास्तिक दर्शन, वार्त्ता (अर्थ शास्त्र), आन्वीक्षिकी (तर्कशास्त्र) तथा दण्डनीति (राजनीति विज्ञान) का भी उल्लेख पाया जाता है। इससे प्रकट होता है कि इस काल में पाठ्य-क्रम में ये विषय पढ़ाये जाते थे और उनसे सम्बन्धित ग्रन्थ इस काल के पुस्तकालयों मे आ गए थे।

ज्ञान पर एकाधिकार

प्रारम्भ में इस काल में ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य की शिक्षा एक समान थी। परन्तु ज्यों-ज्यों जाति व्यवस्था दृढ़ होती गई, त्यों-त्यों तीनों वर्ण अनेक उपवर्णों मे बँट गए और उनकी शिक्षा में भी अन्तर होता गया। धार्मिक-ग्रंथों का पठन-पाठन ब्राह्मण वर्ग की विशेष सम्पत्ति-सी हो गई। अन्य वर्णों की शिक्षा-दीक्षा का भार भी उन्हीं पर था। इस प्रकार धीरे-धीरे ज्ञान पर उनका एकाधिकार हो गया। कर्मकाण्ड और यज्ञ की विधियों का जोर बढ़ता गया और अन्त में वैदिक धर्म में यज्ञों में हिंसा की प्रबलता और कर्म काण्ड के जगड्वाल के कारण जनता की अनास्था-सी होने लगी। फिर भी वैदिककालीन पठन-पाठन प्रणाली चलती रही और उसके साथ ही साथ वैदिक ग्रंथों के पुस्तकालय भी बने रहे।

अध्याय ५

बौद्धकालीन पुस्तकालय

धार्मिक क्रान्ति

वैदिक धर्म की जाति-पाँति व्यवस्था, ज्ञान पर एकाधिकार और कर्म-काण्ड विधि में हिंसा के प्रोत्साहन के कारण छठीं शताब्दी ई० पू० भारत में धार्मिक क्रान्ति हुई। उसके फलस्वरूप वैदिक धर्म के विरोधी दो बड़े सुधार-वादी धर्मों का उदय हुआ। उनके नाम थे—जैनधर्म और बौद्ध धर्म। इस धार्मिक क्राति का बहुत व्यापक प्रभाव उस समय की शिक्षा-दीक्षा और पुस्तकालयों पर पड़ा।

इन धर्मों ने भोगपूर्ण स्वर्ग के स्थान पर मोक्ष एव निर्वाण को जीवन का लक्ष्य ठहराया। यज्ञों के स्थान पर तपस्या और सदाचार की प्रतिष्ठा की। पशुहिंसा का खुल्लमखुल्ला विरोध किया। ब्राह्मणों की जातिगत प्रधानता की निन्दा करते हुए कर्म और योग्यता का समर्थन किया। फल यह हुआ कि जनता ने तथा तत्कालीन राजाओं ने भी इस नवीन धर्म को अपनाया। इस प्रकार राज्याश्रय पा कर इन दोनों धर्मों का प्रचार हुआ और तदनुसार पुस्त-कालयों के रूप में भी परिवर्त्तन हुआ।

संघों की परम्परा

धर्म सघर्ष के उस युग में सभी अपने-अपने मत का प्रचार करने तथा अन्य मतों का छिद्रान्वेषण करने पर कमर कसे हुए थे। जब लोग नए धर्म में दीक्षित होने लगे तो ग्रन्थों को लिपिबद्ध करने का काम भी तेजी से चल पड़ा। इन नवीन धर्मों के आचार्य लोग सघबद्ध होकर ग्रथों का पठन-पाठन और प्रचार करने लगे। इस प्रकार वे एक दूसरे का मत जानने के लिए उस मत के ग्रथों का यत्नपूर्वक सग्रह करने लगे और अपने मत के ग्रन्थों में भी वृद्धि करने लगे। यही कारण है कि बौद्ध और जैन ग्रथों में 'ग्रथ सग्रह' करने को महद् पुण्य का कार्य घोषित किया गया और ग्रथों की प्रतिलिपि

कराना तथा ग्रंथों को दान देना भी एक महान् कार्य समझा जाने लगा। उसका परिणाम यह हुआ कि आज भी बौद्धों के मठों और जैन मन्दिरों और उपाश्रयों में बहुमूल्य हस्तलिखित ग्रन्थों का सग्रह पाया जाता है।

जैन पुस्तकालय

जैन धर्म के मन्दिरों और उपाश्रयों में जैन साहित्य के पठन-पाठन की व्यवस्था हुई तो वहाँ ग्रन्थों का संग्रह होना प्रारम्भ हुआ। बम्बई प्रदेश में अहमदाबाद, पाटन, काम्बे, सूरत, पूना और नासिक आदि मे हस्तलिखित ग्रन्थों के भण्डार आज भी हैं। गुजरात की राजधानी पाटन में जैनियों के ११ और अहमदाबाद में ६ उपाश्रय आज भी हैं जिनमें हस्तलिखित ग्रथों का सग्रह पाया जाता है। पाटन के पोफलिया नोपाड़ो के उपाश्रय में तीन हजार से अधिक ग्रथ हैं और हेमचन्द्र भडार में प्रायः चार हजार हस्तलिखित ग्रंथ हैं। इन दो उपाश्रयों से १६ वीं शताब्दी मे लिखित ताड़-पत्र की पोथियाँ मिली हैं। इनके अतिरिक्त निम्नलिखित जैन संस्थाओं में जैन सम्प्रदाय के ग्रंथों का सग्रह पाया जाता है :—

अलक पन्नालाल दिगम्बर जैन संस्था।
सरस्वती, भवन, झालरापाटन।
अमृतलाल मगनलाल शाह जैन विद्याशाला, अहमदावाद।
चारुकीर्त्ति पण्डिताचार्य, जैन भण्डार भुवनवेल गोला, मैसूर।
सेंट्रल जैन लाइब्रेरी, आरा।
दिगम्बर जैन भण्डार, दिल्ली।
दिगम्बर जैन लाइब्रेरी, रोहतक।
जैन मदिर घिलावली, विरोर, मैनपुरी।
वीर वाणी विलास जैन सिद्धान्त भवन, मूडविद्री।
शान्तिनाथ जैन मंदिर, अलीगंज, एटा।
स्याद्वाद जैन महाविद्यालय, भदैनी बनारस।
राजाराम कालेज कोल्हापुर।

इनमें से केवल एक जैन केन्द्र के हस्तलिखित ग्रंथों की खोज का विवरण दिया जाता है जिससे प्राचीन जैन पुस्तकालयों की समृद्धि का परिचय मिल सकता है। भारतीय ज्ञानपीठ काशी की एक शाखा दक्षिण मे मूडविद्री में सन् १९४४ ई० में खोली गई। पं० के० भुजवली शास्त्री महोदय की अध्यक्षता में उस केन्द्र से पाँच ग्रंथ-भण्डारों की जाँच की गई तो उसमें के १३५ अप्रकाशित और ३५३८ ताड-पत्रीय हस्तलिखित ग्रंथ प्राप्त हुए। भारतीय

विद्यापीठ ने इन ग्रथों की सूची 'कन्नड़ प्रान्तीय ताड़-पत्रीय ग्रथ-सूची' के नाम से प्रकाशित की। इस ग्रथ में जैनमठ कारकल के ताड़पत्र और कागज की पोथियाँ, मूडविद्री जैन भवन के ताड़-पत्रीय ग्रथ, मूडविद्री के अन्य ग्रथ भण्डार, अलियूस, आदिनाथ देवालयस्थ ताड़पत्रीय ग्रथों की सूचियाँ शामिल हैं। कुल मिला कर १३५ अप्रकाशित ग्रथों की प्रतिलिपियाँ और ३५३८ ताड़पत्रीय और हस्तलिखित ग्रथों की विवरण सूची यह है और इनमें निम्नलिखित विषय के ग्रथ हैं:—

सिद्धान्त, अध्यात्म, धर्म, प्रतिष्ठा, आराधना, पूजापाठ, न्याय दर्शन, व्याकरण, कोश, काव्य, अलकार नीति, सुभाषित, पुराण, चरित, कथा, इतिहास, आयुर्वेद, ज्योतिष, गणित, मत्रशास्त्र, लोक विज्ञान, शिल्पशास्त्र, लक्षण तथा समीक्षा, क्रियाकाण्ड, स्तोत्र और भजन गीत आदि।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि जैन-ग्रन्थों के सग्रह की यह परम्परा जैन धर्म के उदय के साथ ही साथ शुरू हुई और उसका विकास होता रहा। आन्तरिक और बाह्य सघर्षों से बचते-बचते आज भी अनेक जैन पुस्तकालय उस परम्परा के प्रतीक बने हुए हैं। इन पुस्तकालयों के हस्तलिखित ग्रन्थों के उद्धार की ओर अब ध्यान दिया जाने लगा है जो कि एक शुभ लक्षण है।

बौद्धकालीन शिक्षा

बौद्धकालीन शिक्षा कोई सार्वजनिक शिक्षा-प्रणाली न थी। वह मुख्य रूप से बिहारों एव मठों तक सीमित रही। बौद्ध भिक्षु उन बिहारों में रहते हुए धर्म-प्रचार किया करते थे। वे नवीन भिक्षुओं को ट्रेंड भी किया करते थे। जाति-पाँति का विचार किए बिना इस शिक्षा के द्वार सब के लिए खुले हुए थी। गृहस्थ उपासक और उपासिकाएँ, भिक्षु तथा भिक्षुणियों से शिक्षा ग्रहण करते थे। 'बुद्धं शरणं गच्छामि, धर्मं शरण गच्छामि, संघ शरण गच्छामि' की प्रतिज्ञा लेने पर कोई भी व्यक्ति सघ में प्रविष्ट हो सकता था। इस प्रकार इस काल की शिक्षा गुरु केन्द्रित न रह कर सघबद्ध हो गई, यद्यपि इस काल में भी गुरु-शिष्य सम्बन्ध वैदिक काल की भाँति ही चलता रहा। बौद्ध-कालीन शिक्षा व्यवस्था में दो प्रकार के पाठ्य-क्रम थे—धार्मिक और लौकिक। धार्मिक शिक्षा में बौद्ध धर्म की पुस्तकें, त्रिपिटक आदि होती थीं। लौकिक पाठ्य-क्रम में अनेक कला कौशल, शास्त्रार्थ, रथ हाँकना, धनुर्वेद, मल्लविद्या, चित्रकला, सगीत, और चिकित्सा शास्त्र आदि होते थे। शिक्षा का माध्यम लौकिक भाषा थी परन्तु विश्वविद्यालयों में शिक्षा का माध्यम

संस्कृत भी थी। बौद्ध साहित्य और लौकिक पाठ्य-क्रम तो विशेष रूप से लोक-भाषा के माध्यम से पढ़ाए जाते थे। इस प्रकार बौद्धकालीन शिक्षा के केन्द्र धीरे-धीरे सुसंगठित हो गए। इन केन्द्रों में से तक्षशिला, नालन्दा और वलभी आदि तो शिक्षा के अन्तर्राष्ट्रीय- केन्द्र हो गए। इन शिक्षा-केन्द्रों के साथ महत्त्वपूर्ण पुस्तकालय भी होते थे। इनका विवरण इस प्रकार है:—

तक्षशिला का पुस्तकालय

तक्षशिला भारत के उत्तर-पश्चिम सीमा-प्रान्त पर एक बहुत ही प्रसिद्ध नगर था। आज भी वह 'तक्सिला' के नाम से मशहूर है। यह नगर गाधार-राज्य की राजधानी थी। यहाँ पर एक बहुत ही प्रसिद्ध विश्वविद्यालय था। पहले तो उसमें वैदिक विषयों की शिक्षा दी जाती थी किन्तु समय के परिवर्त्तन के साथ ही साथ वहाँ के पाठ्य-क्रमों में भी परिवर्त्तन हो गया। इस विश्वविद्यालय के साथ ही एक अच्छा पुस्तकालय था। तक्षशिला के आचार्यों की योग्यता और उसके पुस्तकालय में संगृहीत बहुमूल्य ग्रन्थों की धूम बहुत दूर-दूर तक फैल चुकी थी।

अत' भारत के कोने-कोने से तथा विदेशों से भी छात्र पढ़ने के लिए आया करते थे। महान् वैयाकरण पाणिनि, राजनीतिज्ञ चाणक्य, भगवान बुद्ध के व्यक्तिगत चिकित्सक जीवक, सम्राट् चन्द्रगुप्त तथा पुष्यमित्र इसी तक्षशिला विश्वविद्यालय के छात्र थे और उन्होंने इस पुस्तकालय की पोथियों से प्रचुर ज्ञान प्राप्त किया था। इस पुस्तकालय में वेद, आयुर्वेद, धनुर्वेद, ज्योतिष, तर्क, तंत्र, व्याकरण, चित्रकला, वास्तुकला, कृषि, व्यापार, और पशुपालन आदि विषयों के ग्रथों का अच्छा संग्रह था क्योंकि तक्षशिला केन्द्र में ये विषय उस समय पाठ्य-क्रम में सम्मिलित थे। उत्तर-पश्चिम से होने वाले विदेशी आक्रमणों से यह पुस्तकालय अपने विश्वविद्यालय सहित सदा के लिए नष्ट हो गया।

नालन्द का पुस्तकालय

ज्ञान के विकास की दृष्टि से बौद्ध काल को तीन भागों में बाँटा जा सकता है। प्रथम भाग गौतम बुद्ध से ईसवी सन् के प्रारम्भ से पूर्व तक, दूसरा भाग ईसवी सन् के प्रारम्भ से छठीं शताब्दी तक, और तीसरा भाग सातवीं शताब्दी से बौद्ध काल के पतन तक। इन तीनों कालों की अपनी अलग-अलग विशेषताएँ थीं। प्रथम काल में बौद्ध साधु त्यागी और सच्चरित्र हुआ करते थे। दूसरे काल में बौद्धों ने स्वधर्म पालन के साथ-साथ शिल्पकला में भी उन्नति की थी। तृतीय काल में बौद्ध सन्त महन्तों का चारित्रिक पतन प्रारम्भ हो

गया था। फिर भी उन्होंने आयुर्वेद और रसायन शास्त्र में पर्याप्त उन्नति की। इस काल को हम तान्त्रिक युग कह सकते हैं। इन तीनों कालों के अपने अलग-अलग विश्वविद्यालय तथा उनसे सम्बद्ध पुस्तकालय थे। प्रथम काल का विश्वविद्यालय तक्षशिला, द्वितीय काल का नालन्द और तृतीय काल का विक्रमशिला था। इन विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में सचित ज्ञान राशि बड़ी आकर्षक थी। सुदूर देश से छात्र अनेक कष्टों को झेलते हुए यहाँ ज्ञानोपार्जन के लिए आया करते थे।

नालन्द से भारत के दो धर्मगुरु श्री महावीर एव गौतम बुद्ध पूर्ण रूप से सम्बद्ध थे। ईसा से कम से कम ५०० वर्ष पूर्व से नालन्द का वर्णन ग्रन्थों में मिलता है। जैनों के 'सूत्र कृताङ्ग' तथा बौद्धों के 'निकाय' में एव ताम्रपत्रों तथा शिलालेखों में भी इसके विवरण मिलते हैं। ह्वेनसाग के मतानुसार तथागत अपनी वृद्धावस्था में इस स्थान पर वास करते हुए अनवरत दान करते रहे जिसके कारण इस स्थान का नाम नालन्द (जिसका अर्थ दान का अन्त नहीं) पड़ा। इत्सिङ्ग के कथनानुसार नालन्द का पहला नाम नालानन्द था जो किसी व्यक्ति के नाम पर रखा गया था। या चूँकि यहाँ नल अर्थात् कमल के फूलों की अधिकता थी, इसलिये इसका नाम नालन्द पड़ा। बाद में पास के बड़गाँव के नाम से यह स्थान भी पुकारा जाने लगा। डा० हीरानन्द शास्त्री (एपिग्राफिस्ट टु द गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया) के सत्प्रयत्नों के फलस्वरूप इस स्थान का पुन नामकरण नालन्द हुआ। पण्डित हससोम के 'पूर्वदेश चैत्यपरिपाटी' (वि० १५६५) और विजय सागर के 'समेत शिखर तीर्थमाला' (वि० १७००) नामक जैन ग्रन्थों में इसका उल्लेख इस प्रकार आया है .—

"नालन्द पाडे चौद चौमास सुणी जै।
हौडो लोक प्रसिद्ध से वड़गाम यही जै।
सोल प्रसाद तिहा अच्छै जिन बिम्ब नमीजै।"
"वयहरी नालन्दा पाडो
सुरारयो तस पुण्यपवाडो
वीर चौद रूहा चौवाऊ
हौडा वड़गाम निवास।
त्रिंद देहरे एक्सो प्रतिमा
नवील हिन्दी बोधनी गणिमा।"

बौद्ध ग्रन्थों में नालन्द का वर्णन राजगृह के एक भाग के रूप में आता

है जो राजगृह के विस्तार का सूचक है नहीं तो सात मील की दूरी पर स्थित यह स्थान उसका एक भाग या मुहल्ला कैसे हो सकता है। उपर्युक्त विचार से यह स्पष्ट हो जाता है कि ईसा की कई शताब्दियों पूर्व से नालन्द एक विख्यात नगर था और बाद में भी इसका गौरव कई शताब्दियों तक बना रहा। जैन और बौद्ध धर्म के महान गुरुओं की चरण रज से पवित्र यह स्थान अपने प्राकृतिक सौन्दर्य से युक्त था और जैन एव बौद्ध धर्मों के इन्द्रभूति एव सारिपुत्त नामक दो प्रमुख शिष्यों के चिर निवास ने इसके गौरव को और भी बढ़ा दिया। धीरे-धीरे यह शिक्षा का एक अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र बना।

स्थापना

इस पुस्तकालय की नींव सक्रादित्य ने ४२५ ई० में डाली। उसके बाद उसके पुत्र बुद्धगुप्त ने पहले सग्रहम के दक्षिण में एक नया सग्रहम बनवाया। तथागत गुप्त नामक राजा ने पूर्व की ओर और वज्र नामक राजा ने पश्चिम की ओर एक एक सग्रहम बनवाया। इसके बाद बालादित्य ने ३०० फीट ऊँचा एक संग्रहम बनवाया और मन्दिर को पूरा कराया। तत्कालीन मध्य प्रदेश के राजा ने चारों ओर चहारदीवारी बनवाई। सुमात्रा और जावा के तत्कालीन राजा बालपुत्र देव ने भी एक मठ बनवाया और आर्थिक सहायता के लिये स्थायी रूप से ५ गॉव दिये। समय-समय पर जितने भी धनी-मानी राजा, महाराजा, सेठ, साहूकार नालन्द जाते वे इस विद्या केन्द्र और पुस्तकालय के लिए आर्थिक सहायता दिया करते थे। इस प्रकार इसकी आर्थिक स्थिति बहुत सुदृढ़ हो गई। गुप्तकालीन राजाओं ने तो अतुल सम्पत्ति इस विश्वविद्यालय को दान दी और अपने शासन काल में वे ही इस शिक्षा-केन्द्र के तथा पुस्तकालय के संरक्षक रहे।

पुस्तकालय की रूपरेखा

नालन्द के इस विशाल पुस्तकालय का नाम 'धर्मगंज' था। दर्शन और धर्म के ग्रन्थों का विशाल संग्रह होने के कारण व्यवस्था की सुविधा के लिये इसे तीन भागों में बॉट दिया गया। पहिले भाग को 'रत्नोधि' दूसरे भाग को 'रत्न सागर' और तीसरे भाग को 'रत्नरंजक' कहते थे। इन विभागों में संगृहीत ग्रथ विषय-क्रम से पत्थर के फलकों पर आलमारियों में व्यवस्थित किए जाते थे। इससे ग्रथों के वर्गीकरण की किसी विषयानुसारिणी विशिष्ट वर्गीकरण पद्धति का अनुमान किया जा सकता है। इन ग्रंथों की सुरक्षा की

व्यवस्था सुन्दर थी। ग्रन्थ के आकार के बराबर पत्थर के फलक रहते थे। उपयोग के पश्चात् ग्रथ को पत्थर के उसी फलक पर रख कर उसके ऊपर दूसरे पत्थर के फलक से दबा देते थे। ऐसा करने से ग्रन्थ सुरक्षित रहते थे। ये सभी ग्रथ बहुमूल्य वस्त्रों में बँधे रहते थे। यदि कोई ग्रन्थ अधिक उपयोग करने से या अन्य किसी कारण से जीर्ण-शीर्ण होने लगता तो तुरन्त उसकी प्रतिलिपि करा ली जाती थी। प्रत्येक आचार्य पर पुस्तकालय के एक विभाग का दायित्व था। वही उन ग्रथो के रक्षक थे। उनके अधीनस्थ शिष्य उन की देख-रेख में ग्रथों का उपयोग करते तथा प्रतिलिपि आदि करते थे। धर्मपाल के शिष्य शीलभद्र उस पुस्तकालय के मुख्य ग्रथपाल थे। इस पुस्तकालय की आभ्यन्तरिक छटा भी मनोहर थी। आजकल पुस्तकालय को भीतर बाहर से आकर्षक बनाने पर बल दिया जाता है। आश्चर्य हैं कि नालन्द के उस पुस्तकालय में इन बातों की ओर विशेष ध्यान दिया गया था। इमारत के खम्मे और गुम्बद परदार सर्प की आकृति में सजे हुए थे। इन पर जो शहतीरें लगी थीं, वे सूर्य के प्रकाश से मिलती-जुलती सतरगों से रँगी हुई थीं। बल्लियों पर भी नक्काशी की गई थी। किवाड़ों के लिन्टल स्वच्छतापूर्वक रँगे हुए थे जो कि बड़े ही नयनाभिराम थे। छत के खपड़े शीशे की भाँति चमकते' थे और उनमें क्षण-क्षण में रङ्ग बदला करते थे। वैदिक धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म की हीनयान और महायान शाखाओं से सम्बद्ध सभी विषय, व्याकरण, आयुर्वेद, दर्शन, कलाकौशल, ज्योतिष और वास्तु कला आदि के ग्रन्थों की अनेक प्रतियों का दुर्लभ सग्रह यहाँ था।

इस विशाल पुस्तकालय का उपयोग भारतवर्ष के विद्वान तो करते ही थे, साथ ही विदेशों से भी विद्वान इस पुस्तकालय का उपयोग करने के लिए आया करते थे। चीनी यात्री फाहियान, ह्वेनसाग, इत्सिंग आदि ने चीन में ही नालन्द पुस्तकालय की प्रशसा सुनी थी और उससे आकृष्ट हो कर वे यहाँ आये। फाहियान ने लिखा है कि नालन्द 'एक विशाल शिक्षाकेन्द्र था और वहाँ के पुस्तकालय में हजारों विद्यार्थी प्रतिलिपि करने का काम किया करते थे।' फाहियान जब स्वदेश लौटा तो ५२० बण्डल हस्तलिखित ग्रन्थ जिनमें ६५७ विभिन्न विषयों की प्रतिलिपियाँ थी, अपने साथ ले गया था। इत्सिङ्ग ने लिखा है कि 'प्रज्ञापारमिता ग्रन्थ की प्रतिलिपि करना पुण्य का कार्य समझा जाता था।' जाते समय इत्सिंग भी अपने साथ ४०० ग्रन्थों की प्रतिलिपि करा के ले गया था। इन चीनी यात्रियों के अतिरिक्त अन्य आगन्तुकों में शामन युवाङ् चिङ्, टाओदी और आर्यवर्मा नामक (कोरियन)

प्रमुख थे जिन्होंने वर्षों नालन्द में रह कर उसके इस पुस्तकालय में अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथों की प्रतिलिपि की थी।

पुस्तकालय का विध्वंस

बौद्ध धर्म के दोषापन्न होने पर धीरे-धीरे जनता की श्रद्धा घट गई। इस प्रकार बौद्ध राजाओं के निर्बल होने पर हूणों के सरदार मिहिरकुल ने सबसे पहले नालन्द के इस पुस्तकालय को क्षति पहुँचाई किन्तु राजा बालादित्य ने उसे ४७० ई० में पराजित किया और पुस्तकालय की जो हानि हुई थी उसकी भी उसने पूर्ति करा दी। लेकिन इसके बाद जो द्वितीय प्रहार हुआ उससे इसकी अपूर्णनीय क्षति हुई। वह आक्रमण था बख्तियार खिलजी का जो उसने धर्मान्ध होकर १२०५ ई० में किया था। बख्तियार खिलजी के आक्रमण की खबर सुनते ही नालन्द से शिक्षक, छात्र और भिक्षु कुछ ग्रन्थों को साथ ले कर पहाड़ों की ओर भाग खडे हुए। जब बख्तियार खिलजी पुस्तकालय के द्वार पर पहुँचा तो सबसे पहले उसने वहाँ बचे-खुचे लोगों को तलवार के घाट उतार दिया। इसके बाद जब वह पुस्तकालय के भीतर गया तो उसकी व्यवस्था देख कर विभोर हो उठा। उसने उन ग्रन्थों के नाम और विवरण जानना चाहा किन्तु वहाँ उनके सम्बन्ध में बताने वाला कोई न मिला। अतः उसने नाराज होकर पुस्तकालय में आग लगवा दी। लौटते समय उसने अपना एक प्रतिनिधि छोड़ दिया था। ऐसा कहा जाता है कि वह बचे खुचे ग्रंथों के पन्ने जला कर नहाने का पानी गरम करता और भोजन बनाता रहा। इस प्रकार शताब्दियों से सचित वह ज्ञान राशि सदा के लिए राख बन गई।

इस घटना के कुछ वर्षों के बाद एक बार पुनः नालन्द के जीर्णोद्धार का प्रयत्न मुदितभद्र नामक एक महात्मा ने किया। उसके बाद मगध के मन्त्री श्री कुकुत्सिद्ध ने मन्दिर बनवाया और नालन्द को पूर्ववत् गौरवपूर्ण बनाने की चेष्टा की किन्तु उसके भाग्य मे वैसा कहाँ बदा था। बौद्ध भिक्षुओं और जैन साधुओं में कुछ कारणों से झगड़ा हो गया। कहा जाता है कि कुछ बौद्ध भिक्षुओं ने जैन साधुओं के ऊपर अशुद्ध जल फेंक दिया था। अतः रुष्ट होकर जैन साधुओं ने कुछ दहकते कोयले इस पुस्तकालय पर फेक दिये। फलतः 'रत्नोधि' में सगृहीत ग्रथ जल कर राख हो गए। इस प्रकार नालन्द के इस पुस्तकालय का अस्तित्व सदा के लिए जाता रहा।

विक्रमशिला का पुस्तकालय

मगध के प्रसिद्ध राजा धर्मपाल (देवपाल) ने एक पहाड़ी के ऊपर

विक्रमशिला के मठ को बनवाया था। इस स्थान पर छोटे बड़े १०८ मठ थे। महापडित राहुल साकृत्यायन का कथन है कि यहाँ के सब से बड़े विद्वान 'दीपकर श्री ज्ञान' जी थे। वे साधारण रूप से 'अतिश' के नाम से प्रसिद्ध थे। तिब्बत के राजा के निमत्रण पर वे वहाँ गए थे। राजा ने २०० हस्तलिखित ग्रथों की प्रतिलिपि और कुछ अनुवाद की हुई पुस्तकें उन्हें भेंट की थी। 'अतिश' महोदय का तिब्बत में ही देहावसान हुआ। बारहवीं सदी में लगभग ३००० बौद्ध भिक्षु विद्यार्थी यहाँ रहा करते थे। इस महान् पुस्तकालय की प्रशसा आक्रमणकारियों ने स्वय की थी। इस पुस्तकालय का भी कक्ष चित्रकला से सुसज्जित था। इसका भी विध्वस बख्तियार खिलजी के द्वारा ही हुआ।

बलभी का पुस्तकालय

बलभी (गुजरात) में एक बड़ा पुस्तकालय था जिसकी स्थापना राजकुमारी दद्दा ने की थी। यह राजा धारा सेन प्रथम की मौसी की लड़की था। राजा गुहसेन (५५६) इस पुस्तकालय का खर्च चलाते थे। दक्षिण भारत के शिलालेख सख्या ६०४, ६६७, ६७१ और ६६५ जिनकी तारीख १२१६ ई० बताई जाती है, उनमें लिखा है कि यहाँ के शिक्षकों के वेतन और छात्रों के व्यय के लिए समुचित प्रबध होता था। अतिम शिलालेख में यह पाया गया है कि तिन्नावली जिले के सरस्वता भवन के लिए भी एक बड़ा चदा दिया गया था। बलभी पश्चिम दिशा में होने के कारण भारत से व्यापारिक सम्बध रखने वाले सभी देशों तक प्रसिद्ध था। इस कारण इस पुस्तकालय की प्रसिद्धि बहुत बढ़ी चढी थी। इस पुस्तकालय में पाठ्य-ग्रथों के अतिरिक्त अनेक अन्य विषयों की भी पुस्तकें थीं।

ऊपर बौद्धकालीन कुछ प्रमुख पुस्तकालयों की सक्षिप्त चर्चा की गई। इस काल में कोई भी मठ एव विहार ऐसा न था जहाँ पुस्तकालय न रहा हो। इसका कारण यह था कि बौद्ध धर्म को राजाश्रय प्राप्त था। महाराज कनिष्क के समय से बौद्ध ग्रथों को विशेष रूप से सग्रह करने की परम्परा चली थी। स्वय कनिष्क ने बौद्धों के धार्मिक तथा दार्शनिक मतों के अनेक भेदों को देख कर 'पार्श्व' की सहायता से सम्पूर्ण बौद्ध ग्रथों का एक प्रामाणिक सग्रह कराया और उसे ताम्रपत्रों पर लिखवा कर एक अलग स्तूप बनवा कर उसमें उन ग्रथों को सुरक्षित रखा दिया था तथा उसकी रक्षा के लिए पहरेदार नियुक्त करा दिया था। कनिष्क का राज्यकाल ईसा के बाद ७८ वीं शताब्दी या किसी-किसी के मत से ई० १२५ है।

भारतीय ग्रंथ बाहर कैसे पहुँचे ?

बौद्धकालीन पुस्तकालयों का यह अध्याय समाप्त करने से पहले यह बात भी इसी सिलसिले में जानना जरूरी है कि भारतीय ग्र य बाहर कैसे पहुँचे ? यह इसलिए और भी आवश्यक है कि इसका विशेष सम्बंध बौद्ध धर्म से है। ऐतिहासिक खोज से पता लगता है कि चीन में बौद्धधर्म का प्रचार कार्य ईसा पूर्व कुछ शताब्दियों से ही हो चुका था। हान् वंश के सम्राट् मिंग और मिंगी ने सन् ६४ ई० में अपने कुछ पंडितों को बौद्ध दर्शन सम्बंधी साहित्य की खोज के लिए भारत भेजा। लेकिन खोतान में ही उन लोगों की भेंट कुछ भारतीय बौद्ध भिक्षुओं से हो गई। वे उन्हें ले कर लौट गए। इन भारतीय भिक्षुओं के नाम काश्यप मातंग और धर्मरत्न या गोवर्द्धन थे। जब वे चीन पहुँचे तो राजा ने उनका सत्कार किया और उनके लिए लोयाग मे श्वेताश्व (पाइ-मा-स्म) नामक विहार बनवा दिया। कुछ दिनों बाद वह विहार बौद्ध संस्कृति का केन्द्र हो गया। वे भिक्षुद्वय अनेक बौद्ध ग्रंथ साथ ले गए थे। वहाँ जा कर उन्होंने उनका अनुवाद किया। काश्यप मातंग ने चीनी भाषा में सबसे पहले जिस पोथी का अनुवाद किया, वह आज भी शांति निकेतन के पुस्तकालय में सुरक्षित हैं।

उत्तरी तातार के वई वंश की महारानी ने ५१८ ई० मे सुंग-युन् और हुई-सेंग नामक पंडितों को ग्रंथों का संग्रह करने के लिए उज्जयिनी और गांधार भेजा। वे यहाँ से लौटते समय १७० पोथियाँ स्वदेश ले गए। सम्राट् ताई-चि ने भी १५० भिक्षुओं को भारत भेजा और वे अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ साथ ले गए।

बौद्ध धर्म के प्रचार के साथ ही जापान में भी भारतीय ग्रंथ ले जाए गए। आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में जब प्रो० मैक्समूलर संस्कृत के अध्यापक थे तो उन्होंने अपने जापानी शिष्यों (नाजिओ और ताकाकुसू) के द्वारा 'सुखावती व्यूह' नामक संस्कृत की पोथी जापान से मँगाई। वह पोथी चीनी भाषा में अनुदित थी और उसका उच्चारण जापानी लिपि में लिखा था। उसके बाद प्रो० मैक्समूलर ने जापान से अनेक महत्त्वपूर्ण पोथियों को मँगा कर उनकी प्रतिलिपि कराई जो आज भी आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के बोलडियन लाइब्रेरी मे सुरक्षित है।

काश्यप, धर्मरत्न, धर्मपाल, बोधिरुचि और कुमारजीव आदि बौद्ध पर्यटक बौद्धधर्म के प्रचार के लिए दुर्गम नदी-नालों, गुफाओं और पर्वतों को पार करते हुए अनेक देशों में गए और अपने साथ ग्रंथों को ले गए जहाँ

कुरान शरीफ तथा उससे सम्बधित विषय, इस्लामी इतिहास तथा कानून शामिल थे। लौकिक पाठ्य-क्रम में अरबी, फारसी, व्याकरण, गणित, इतिहास, भूगोल, यूनानी चिकित्सा, कृषि, दर्शन, कानून, नीतिशास्त्र, धर्म, तर्क शास्त्र, ज्योतिष, बहीखाता और अर्थशास्त्र आदि विषय शामिल होते थे। शिक्षा का माध्यम अरबी भाषा थी। अकबर के समय में मदरसों के पाठ्य-क्रम मे विज्ञान, गृह विज्ञान, शासन पद्धति, सगीत, तथा शिल्पशास्त्र आदि विषयों को भी शामिल कर दिया गया था। इन मदरसो के साथ पुस्तकालय जुड़े रहते थे। जिनमे उपर्युक्त पाठ्य-क्रम के विषयों की पुस्तकों का सग्रह होता रहता था।

विशेष विषय के पुस्तकालय

भारत में मुस्लिम शिक्षा प्रणाली के प्रमुख केन्द्र आगरा, दिल्ली, जौनपुर बीदर, बीजापुर, गोलकुण्डा, गुजरात, मालवा, इलाहाबाद, रामपुर, लाहौर स्यालकोट, पटना, हैदराबाद, अहमदाबाद तथा लखनऊ थे। इनमे जौनपुर सबसे अधिक प्रसिद्ध था। उसे शीराज-ए-हिन्द कहा जाता था। क्योंकि इब्राहीम शर्की और सिकन्दर लोदी के समय वहाँ सैकड़ो मदरसे थे। शेरशाह सूरी ने जौनपुर केन्द्र से ही शिक्षा प्राप्त की थी। इन केन्द्रों मे से कुछ केन्द्र तो विशेष विषयों के लिए प्रसिद्ध हो गए। लाहौर तथा स्यालकोट गणित और ज्योतिष के लिए, रामपुर तर्क और चिकित्सा के लिए, दिल्ली इस्लामी परम्पराओ और कविता के लिए तथा लखनऊ शिक्षा के लिए। अतः इन केन्द्रों मे इन विशेष विपय के ग्र थों का यत्नपूर्वक सग्रह किया जाता रहा और अच्छे पुस्तकालय पाये जाते थे।

नगरकोट का पुस्तकालय

फीरोज तुगलक विद्याप्रेमी शासक था। उसने शिक्षा को प्रोत्साहन दिया तो हिन्दू लोग भी उसके समय से अरबी-फारसी पढने लगे और मुसलमान लोगों ने भी सस्कृत पढ कर हिन्दू ग्रथों का अनुवाद करना शुरू किया। उसने जब १४ वीं शताब्दी में नगरकोट पर चढ़ाई की और विजय प्राप्त की तो वहाँ उसे एक सस्कृत पुस्तकालय प्राप्त हुआ था। उसने मौलाना ईजुद्दीन खलीदखानी को दर्शन, भविष्य विचार तथा शकुन विचार विपयक एक सस्कृत ग्रन्थ का फारसी में अनुवाद करने का आदेश दिया। इस अनुवाद का नाम बाद मे 'दलायल-ए-फिरोजशाही' रखा गया।

दक्षिण के स्वतन्त्र राज्यो ने भी शिक्षा के लिए बड़े पैमाने पर विद्यालय खोले। वहाँ भी ग्रथों का सग्रह होता रहा।

महमूद गवाँ का पुस्तकालय

अहमदनगर में वहमनी राज्य का मन्त्री महमूद गवाँ वहुत ही विद्या व्यसनी था। उसके पास ३००० पुस्तकों का एक अच्छा पुस्तकालय था। यह पुस्तकालय वीदर में उसके एक विद्यालय में था। अपने फ़ुरसत के समय महमूद गवाँ विद्वानों की संगति में उसी पुस्तकालय में अपना समय विताता था। वह गणित, चिकित्सा तथा साहित्य में निष्णात था और उसमे काव्य-रचना की भी अद्‌भुत शक्ति थी। फरिश्ता का कथन है कि उसने 'रौजत-उल-इन्शा' तथा 'दीवान-ए-अश्र' नामक दो काव्य-ग्रथों की रचना भी की थी। एक षड्‌यन्त्र के फलस्वरूप जब १४८१ ई० में महमूद गवाँ की हत्या कर दी गई तो धीरे-धीरे वहमनी राज्य के सन्त-महन्त भी विलासिता में डूव गए और राज्य की अवनति हो गई।

मुगलकालीन पुस्तकालय

यद्यपि मुगल काल में सार्वजनिक शिक्षा या अनिवार्य शिक्षा नाम की कोई वस्तु नहीं थी, तथापि जिस वर्ग में इसका प्रचार था उस वर्ग मे वह ऊँची दृष्टि से देखी जाती थी। साहित्य सृजन गौरव की वात समझी जाती थी। अतः पुस्तकालयों का भी विकास हुआ। सौभाग्यवश वावर और हुमायूँ ये दोनों प्रारम्भिक मुगल सम्राट् पुस्तकों के प्रेमी थे। सुंदर पुस्तकों के संग्रह में हुमायूँ को वहुत आनन्द मिलता था। उसकी मृत्यु भी अपने पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिर कर ही हुई थी। उसने शेरशाह के आमोद-गृह को पुस्तकालय के रूप मे वदल दिया था।

अकवर का पुस्तकालय

स्मिथ महोदय का कथन है कि 'अकवर ने असाधारण आर्थिक मूल्य वाली वहुत अच्छी पुस्तकों का संग्रह किया था।' अकवर के पुस्तकालय मे २५००० चुने हुए ग्रंथ थे। यह पुस्तकालय सुन्दर पाण्डुलिपियों से भरा हुआ था। उसका प्रवन्ध भी वहुत सुन्दर ढङ्ग से होता था। वे पुस्तकें कला और विज्ञान दो वर्गों मे विभक्त थीं। उस पुस्तकालय की उस समय और भी अधिक समृद्धि वढ़ गई जव कि फैजी की मृत्यु के वाद उसके निजी पुस्तकालय से चार हजार तीन सौ हस्तलिखित पुस्तकें लाई गईं। उन सव को तीन विभागों मे पंजीकृत किया गया। ये विभाग इस प्रकार थे :—

१. कविता, आयुर्वेद, फलित ज्योतिष और संगीत की पुस्तकें।
२. भाषाविज्ञान, दर्शन, सूफीमत, और ज्यामिति की पुस्तकें।

३ व्याख्यान, दर्शन, परम्परागत कथाएँ, धर्मशास्त्र और कानून की पुस्तकें।

इस युग में प्रेस केवल जेसुइट लोगों के पास था, जो गोवा और उसके आस-पास बसे हुए थे। इसलिए अब तक हस्तलिखित ग्रथों का ही प्रचलन था। इसके लिए सुन्दर लिपिकों की आवश्यकता होती थी। अकबरी दरबार के प्रसिद्ध हस्तलिपि लेखकों की सूची आईन-ए-अकबरी में दी हुई है। मुहम्मद हुसेन उन सब में सबसे अधिक मशहूर था। उसे 'जरीने क़लम' (सोने की कलम) की उपाधि दी गई थी। अबुलफजल ने लिखने की आठ विभिन्न शैलियों का उल्लेख किया है। अकबर के समय में अनेक सस्कृत ग्रन्थों का फारसी में अनुवाद भी किया गया। रामायण, महाभारत, अथर्ववेद, लीलावती, ताजिक, राजतरगिणी, नल दमयन्ती, तुजक बाबरी, बाइबिल और कुरान आदि के अनुवाद भी अकबर ने करवाया था। अनेक देशों के कवि, लेखक, सगीतज्ञ, चित्रकार एव कलाविदों को अकबर के दरबार में आश्रय मिला हुआ था। वास्तव में साहित्य और कला की उन्नति के लिए यह एक अच्छा युग था।

जहाँगीर को भी पुस्तकों और चित्रकारी से प्रेम था। उसका आदेश था कि जो लावारिस सम्पत्ति राज्य में मिले उसे विद्यालयों और पुस्तकालयों के बनाने और बढ़ाने में लगाया जाय। शाहजहाँ का पुत्र दाराशिकोह तो सस्कृत का बहुत अच्छा विद्वान् था। उसने उपनिषदों का फारसी में अनुवाद किया था। दारा के सम्बन्ध में तो यहाँ तक कहा जाता है कि वह केवल सुन्दर लिखता ही नहीं था बल्कि शाहजहाँ की हस्तलिपि की ठीक-ठीक नकल भी कर देता था। औरङ्गजेब भी अपने खुशकत के लिए प्रसिद्ध था और इसी लिए वह सुन्दर लिखने वालों का आदर करता था। उसने मुसलमानी शिक्षा को विशेष बढ़ावा दिया। उसके समय में राज्य के पुस्तकालय में धार्मिक ग्रन्थ बढ़ाए गए। मुगलकालीन पुस्तकालयों में सगृहीत पुस्तकों से प्रमाणित है कि उस समय हस्तलिखित पुस्तकों की सजावट में भी बहुत दिलचस्पी ली जाती थी। चारों ओर कलात्मक हाशिए छोड़ कर बीच में बिल्कुल समान रूप में मोती की तरह अक्षर पिरोये जाते थे। इन पुस्तकों की जिल्दसाजी भी काफी सुन्दर ढङ्ग से की जाती थी। पुस्तकें सुन्दर चित्रों से अलकृत भी की जाती थीं और इस बात का ध्यान रखा जाता था कि वे टिकाऊ भी हों

उत्तरकालीन मुगल-सम्राटों में भी अधिकाश को पुस्तकों से प्रेम था।

धीरे-धीरे मुगल साम्राज्य की अवनति हो गई। जब नादिरशाह ने हमला किया तो वह शाही पुस्तकालय को भी फारस ले गया।

बीजापुर में आदिलशाह का 'आदिलशाही पुस्तकालय' एक राजकीय पुस्तकालय के रूप में था। औरङ्गजेब ने जब बीजापुर पर चढ़ाई की तो वह पुस्तकालय भी नष्ट हो गया।

मुस्लिम काल में भी नदिया, बनारस और मिथिला आदि मे सामान्य पुस्तकालयों का विवरण पाया जाता है। इस समय हिन्दू राजाओं के भी अच्छे पुस्तकालय थे। तंजौर के राजा ने शुरू से ही प्राचीन ग्रन्थों के सग्रह में रुचि ली थी। शरभोजी के समय में उनके 'तंजौर पुस्तकालय' मे बढ़ते-बढते २५,००० से अधिक ग्रन्थों का सग्रह हो गया था। आज भी तंजौर राज्य के उस पुस्तकालय मे १८,००० से ऊपर केवल सस्कृत के ग्रन्थ मौजूद हैं तथा अन्य ग्रन्थ देवनागरी, कनाड़ी, तैलङ्गी, उड़िया आदि लिपियों में लिखे हुए हैं और ऐसा सग्रह भारत में अन्यत्र कहीं नहीं है।

अध्याय ७

संधिकालीन पुस्तकालय

मुसलमानी शासन के अत और अंग्रेजों के आगमन के बीच के समय को सधिकाल कहना उचित है। यह काल पुस्तकालय विकास की दृष्टि से अप्रगतिशील रहा है। इस काल में निम्नलिखित छः प्रकार के पुस्तकालय विद्यमान थे :—

१. गुरु-गृहों के पुस्तकालय

सस्कृत भाषा एव साहित्य के पंडित लोग अपने घरों पर विद्यार्थियों को पढ़ाया करते थे। इसलिए पठन-पाठन के उपयोगी ग्रथों का सग्रह वे लोग अपने घरों पर ही एक कक्ष में रखते थे। ऐसे पुस्तकालय 'गुरु-गृहों के पुस्तकालय' थे।

२. संस्कृत विद्यालयों के पुस्तकालय

सस्कृत विद्या के प्रचार करने एव उसे जीवित रखने के लिए देश में अनेकों सस्कृत विद्यालय खुले हुए थे। उन्हें धनी-मानी व्यक्तियों, सेठ साहूकारों, एव राजाओं से सहायता मिल रही थी। बगाल में ऐसे विद्यालय 'टोल' कहलाते थे। दक्षिण भारत में ऐसे विद्यालय प्रायः मन्दिरों तथा गाँवों में चलते थे। इस प्रकार के जो विद्यालय थे उनमें सस्कृत की पोथियाँ सगृहीत थीं। बंगाल के किसी-किसी टोल में १० से ले कर ४० तक ग्रन्थों का जिक्र जाँच रिपोर्टों में मिलता है।

वास्तव में उपर्युक्त दोनों प्रकार के पुस्तकालय वैदिक काल के पुस्तकालयों के प्रतीक थे। पूरे मुस्लिम काल के तूफान से गुजर जाने पर भी उन पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा था।

३ मकतबों के पुस्तकालय

मुस्लिम काल में जिन मकतबी पुस्तकालयों की चर्चा पिछले अध्याय में

की गई है, वे पुस्तकालय इस काल में भी पाए जाते थे। ये नाम मात्र के थे और अभी चले चल रहे थे।

४. मदरसों के पुस्तकालय

मुस्लिम काल के मदरसों के पुस्तकालय इस काल में भी बने हुए थे किन्तु राजनीतिक उथल-पुथल के कारण उनकी कुछ उन्नति न हो सकी।

५. ग्रामीण पाठशालाओं के पुस्तकालय

मुस्लिम शासन काल से पहले भी देश मे प्रत्येक गॉव में बच्चों को पढ़ाने-लिखाने की व्यवस्था प्राइवेट तौर पर कभी कुछ राज्य प्रोत्साहन द्वारा भी की जाती रही। ऐसी ग्रामीण पाठशालाएँ तो मुस्लिम काल मे भी बनी रहीं। जो बच्चे मकतब नहीं जा सकते थे वे यहीं पढ़ा करते थे। इन पाठशालाओं के अध्यापक अपनी पाठशाला में कुछ पोथियाँ अपनी रुचि के अनुसार संग्रह कर के रखा करते थे। फुर्सत के समय वे स्वयं पढ़ते और गॉव के लोगों को भी सुनाया करते थे।

हार्डी ने अपनी पुस्तक 'इण्डिया' में लिखा है :—

"मैक्समूलर ने सरकारी उल्लेखों के आधार पर और एक मिशनरी की रिपोर्ट के आधार पर जो बंगाल पर कब्जा होने से पहले वहाँ था—शिक्षा की अवस्था के सम्बन्ध में लिखी गई थी, लिखा है कि उस समय बंगाल में ८०,००० पाठशालाएँ थीं। अर्थात् सूबे की आबादी के प्रति ४०० आदमियों पर एक पाठशाला मौजूद थी।" इन पाठशालाओं का लोप ग्राम पचायतों के नष्ट होने पर हो गया। जैसा कि इतिहासकार लडलो 'अपने ब्रिटिश भारत' में लिखता है :—

"प्रत्येक हिन्दू गॉव में जहाँ कि पुराना संगठन अभी तक कायम है, मुझे विश्वास है कि आमतौर पर सब बच्चे लिखना-पढ़ना जानते हैं किन्तु जहाँ कहीं हमने पचायतों का नाश कर दिया है, जैसे बंगाल में, वहाँ ग्राम पचायतों के साथ-साथ पाठशाला का भी लोप हो गया है।"

६. विदेशियों के विद्यालयों के पुस्तकालय

इस काल में ईसाई धर्म के प्रचार के लिए ईसाई प्रचारकों ने कुछ विद्यालय खोले। भारत में व्यापार करने वाली कम्पनियों ने भी अपने कर्मचारियों के बच्चों की शिक्षा देने के लिए कुछ विद्यालय स्थापित किए। इन दोनों प्रकार के विद्यालयों के साथ-साथ कुछ छोटे-छोटे पुस्तकालय भी संलग्न थे। उनमें पाठ्य-विषयों से सम्बन्धित पुस्तकें, सामान्य रुचि की कुछ पुस्तकें तथा

अध्याय ७

संधिकालीन पुस्तकालय

मुसलमानी शासन के अत और अग्रेजों के आगमन के बीच के समय को सधिकाल कहना उचित है। यह काल पुस्तकालय विकास की दृष्टि से अप्रगतिशील रहा है। इस काल में निम्नलिखित छः प्रकार के पुस्तकालय विद्यमान थे :—

१ गुरु-गृहों के पुस्तकालय

सस्कृत भाषा एव साहित्य के पडित लोग अपने घरों पर विद्यार्थियों को पढ़ाया करते थे। इसलिए पठन-पाठन के उपयोगी ग्रथों का सग्रह वे लोग अपने घरों पर ही एक कक्ष में रखते थे। ऐसे पुस्तकालय 'गुरु-गृहों के पुस्तकालय' थे।

२ संस्कृत विद्यालयों के पुस्तकालय

सस्कृत विद्या के प्रचार करने एव उसे जीवित रखने के लिए देश में अनेकों सस्कृत विद्यालय खुले हुए थे। उन्हें धनी-मानी व्यक्तियों, सेठ साहूकारों, एव राजाओं से सहायता मिल रही थी। बगाल में ऐसे विद्यालय 'टोल' कहलाते थे। दक्षिण भारत में ऐसे विद्यालय प्रायः मन्दिरों तथा गाँवों में चलते थे। इस प्रकार के जो विद्यालय थे उनमें सस्कृत की पोथियाँ सगृहीत थीं। बगाल के किसी-किसी टोल में १० से ले कर ४० तक ग्रन्थों का जिक्र जाँच रिपोर्टों में मिलता है।

वास्तव में उपर्युक्त दोनों प्रकार के पुस्तकालय वैदिक काल के पुस्तकालयों के प्रतीक थे। पूरे मुस्लिम काल के तूफान से गुजर जाने पर भी उन पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा था।

३ मकतबों के पुस्तकालय

मुस्लिम काल में जिन मकतबी पुस्तकालयों की चर्चा पिछले अध्याय में

की गई है, वे पुस्तकालय इस काल में भी पाए जाते थे। ये नाम मात्र के थे और अभी चले चल रहे थे।

४. मदरसों के पुस्तकालय

मुस्लिम काल के मदरसों के पुस्तकालय इस काल में भी बने हुए थे किन्तु राजनीतिक उथल-पुथल के कारण उनकी कुछ उन्नति न हो सकी।

५. ग्रामीण पाठशालाओं के पुस्तकालय

मुस्लिम शासन काल से पहले भी देश में प्रत्येक गाँव में बच्चों को पढ़ाने-लिखाने की व्यवस्था प्राइवेट तौर पर कभी कुछ राज्य प्रोत्साहन द्वारा भी की जाती रही। ऐसी ग्रामीण पाठशालाएँ तो मुस्लिम काल में भी बनी रहीं। जो बच्चे मकतब नहीं जा सकते थे वे वहीं पढ़ा करते थे। इन पाठशालाओं के अध्यापक अपनी पाठशाला मे कुछ पोथियाँ अपनी रुचि के अनुसार सग्रह कर के रखा करते थे। फ़ुर्सत के समय वे स्वय पढ़ते और गाँव के लोगों को भी सुनाया करते थे।

हार्डी ने अपनी पुस्तक 'इण्डिया' में लिखा है :—

"मैक्समूलर ने सरकारी उल्लेखों के आधार पर और एक मिशनरी की रिपोर्ट के आधार पर जो बगाल पर कब्जा होने से पहले वहाँ था—शिक्षा की अवस्था के सम्बन्ध मे लिखी गई थी, लिखा है कि उस समय बगाल में ८०,००० पाठशालाएँ थीं। अर्थात् सूबे की आबादी के प्रति ४०० आदमियों पर एक पाठशाला मौजूद थी।" इन पाठशालाओं का लोप ग्राम पंचायतों के नष्ट होने पर हो गया। जैसा कि इतिहासकार लडलो 'अपने ब्रिटिश भारत' में लिखता है :—

"प्रत्येक हिन्दू गाँव में जहाँ कि पुराना संगठन अभी तक कायम है, मुझे विश्वास है कि आमतौर पर सब बच्चे लिखना-पढ़ना जानते हैं किन्तु जहाँ कहीं हमने पंचायतों का नाश कर दिया है, जैसे बगाल में, वहाँ ग्राम पंचायतों के साथ-साथ पाठशाला का भी लोप हो गया है।"

६. विदेशियों के विद्यालयों के पुस्तकालय

इन काल में ईसाई धर्म के प्रचार के लिए ईसाई प्रचारकों ने कुछ विद्यालय खोले। भारत में व्यापार करने वाली कम्पनियों ने भी अपने कर्मचारियों के बच्चों की शिक्षा देने के लिए कुछ विद्यालय स्थापित किए। इन दोनों प्रकार के विद्यालयों के साथ-साथ कुछ छोटे-छोटे पुस्तकालय भी संलग्न थे। उनमें पाठ्य-विषयों से सम्बन्धित पुस्तकें, सामान्य रुचि की कुछ पुस्तकें तथा

विशेष रूप से धार्मिक पुस्तकें होती थीं। प्रारम्भ में पुर्तगालियों ने और उसके बाद फ्रांसीसियों ने इस ओर कदम बढ़ाया।

अंग्रेजों का प्रारम्भिक प्रयास

जब अंग्रेज लोग भारत में आए और कुछ-कुछ उनके पैर जम गए तो उन्होंने भी धर्म प्रचार और शिक्षा की ओर ध्यान दिया। पुर्तगाली कैथोलिक थे और अंग्रेज प्रोटेस्टेण्ट। इसलिए अंग्रेजों ने सोचा कि प्रोटेस्टेंट मत के प्रचार से पुर्तगालियों का राजनीतिक प्रभाव भी खत्म हो जायगा। अंग्रेजों ने शिक्षा के लिए सन् १६७० ई० में मद्रास में पहला अंग्रेजी स्कूल खोला। उसके बाद अंग्रेजों के सभी व्यापारिक केन्द्रों में स्कूल खोले गए। लेकिन कम्पनी ने थोड़े दिनों के भीतर ही यह अनुभव किया कि धार्मिक प्रचार की नीति अच्छी नहीं है। इससे तो हिन्दू और मुसलमान दोनो नाराज हो जायेंगे। इसलिए कम्पनी ने पादरियों को सहायता देनी बन्द कर दी। शिक्षा के झगड़े को भी कम्पनी अपने ऊपर नहीं लेना चाहती थी। फिर भी सिरामपुर (बंगाल) में काम करने वाले मार्शमैन तथा वार्ड नामक पादरियों ने छापाखाना खोला और पुस्तकें प्रकाशित करके हिन्दू तथा इस्लाम धर्म पर आक्षेप करने लगे। साथ ही उन्होंने अपने ढग से शिक्षा-प्रचार करने के कई सौ प्रारम्भिक स्कूल भी खोले। इन स्कूलों के साथ-साथ उन्होंने नाम-चारे के पुस्तकालय भी स्थापित किए। धीरे-धीरे पादरियों ने कम्पनी की नीति का डट कर विरोध किया। लेकिन इगलैण्ड में पादरियों का पक्ष सदा कमजोर रहा। मार्शमैन लिखता है :—

"भारतीयों को शिक्षा देने के प्रश्न के विरोध में बोलते हुए कम्पनी के एक डाइरेक्टर ने पार्लियामेंट में बड़े जोरदार शब्दों में कहा कि—"हम लोग अपनी इसी मूर्खता के कारण अमरीका से हाथ धो बैठे हैं क्योंकि हमने वहाँ स्कूल और कालेज खुल जाने दिए। अब फिर भारत में उसी मूर्खता को दोहराना उचित नहीं है।"

फिर भी लड़ते-झगड़ते अन्त में पादरियों तथा उनके चार्ल्स ग्राएट आदि मित्रों के आन्दोलन और लार्ड मिण्टो के प्रयत्नों से सन् १८१३ ई० में पार्लियामेंट ने एक नवीन आज्ञा-पत्र द्वारा निम्नलिखित आदेश-पत्र दिया:—

"यह गवर्नर जनरल के लिए न्यायसगत होगा कि बची हुई रकम में से वह कम से कम एक लाख रुपया अलग कर दे और उसे साहित्य के पुनरुद्धार तथा सुधार और भारतीय साहित्य के प्रोत्साहन में तथा वृटिश भारतीय क्षेत्रों में विज्ञानों के, ज्ञान के प्रारम्भ तथा उन्नति में लगावे।"

"वृटिश भारतीय निवासियों के हितों और सुख की उन्नति इस देश का कर्त्तव्य है और उनमें उपयोगी ज्ञान तथा नैतिक सुधार के साधनों का उपयोग होना चाहिए। उपर्युक्त उद्देश्यों तथा इन सौजन्यपूर्ण कार्यों को पूरा करने के लिए भारत जाने तथा रहने के इच्छुक व्यक्तियों को कानून द्वारा यथेष्ट सुविधाएँ मिलेंगी।"

इस आदेश का नतीजा यह हुआ कि शिक्षा प्रचार कम्पनी की जिम्मेदारी हो गई और पादरियों को भी इस देश मे काम करने की पूरी आजादी मिल गई।

कम्पनी ने राजनीतिक जरूरतों को पूरा करने के लिए सन् १७८१ मे कलकत्ता मदरसा, सन् १७९१ मे बनारस सस्कृत कालेज तथा सन् १८०० ई० मे फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना की। इनके साथ पुस्तकालय भी स्थापित हुए जो धीरे-धीरे महत्त्वपूर्ण पुस्तकालय बन गए।

इस प्रकार शिक्षा की इस डावाँडोल स्थिति में अंग्रेजों द्वारा अधिकृत भारत में पुस्तकालयों की स्थिति पहले से कुछ सुधर न सकी। साथ ही साथ देश के आन्तरिक कलहपूर्ण स्थिति के कारण अन्य भागों मे भी पुस्तकालयों की स्थिति पूर्ववत् बनी रही।

अध्याय ८

बृटिशकालीन पुस्तकालय

बृटिशकालीन शिक्षा

यद्यपि सधिकाल में अंग्रेजों ने भारत के कुछ भागों पर अधिकार कर लिया था किन्तु अपने उस क्षेत्र में भी शिक्षा-दीक्षा की ओर उन्होंने ध्यान नहीं दिया। इस काल में कम्पनी का राज्य भारत में उत्तरोत्तर बढ़ता गया। उसके अत्याचारों से पीड़ित हो कर जनता ने १८५७ ई० में स्वतन्त्र होने की पहली बार चेष्टा की। कम्पनी ने उसे 'सैनिक विद्रोह' कह कर दबा दिया किन्तु उसके साथ ही कम्पनी की सत्ता भी खत्म हो गई। उसके बाद से १९४७ ई० के १४ अगस्त तक भारत पर इङ्गलैण्ड के बादशाह के प्रतिनिधि द्वारा शासन होता रहा। जब कम्पनी का शासन रहा तो उसके कर्मचारियों तथा अधिकारियों की सदा यही नीति रही कि इस देश से ज्यादा से ज्यादा धन कमा कर स्वदेश लौटा जाय। इसलिए उन्होंने अनेक षड्यन्त्र और जाल, फरेब से पूरे भारत को अपने कब्जे में किया। विलियम हाविट नामक अंग्रेज ने लिखा है कि "जिस तरीके से ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने हिन्दोस्तान पर कब्जा किया उससे अधिक बीभत्स और ईसाई सिद्धान्तों के विरुद्ध किसी दूसरे तरीके की कल्पना भी नहीं की जा सकती।"

इसलि... ...नी के ... ...ा और पुस्तकालयों के विकास में रोड़े ... ...र भी १ ... ...ापत्र मे ले कर १९४७ ई० तक अ... ...क नए ढङ्ग से शिक्षा और पुस्तक... ...मी पुस्तकाल... ...क्षा-विभाग... ...के साथ-सा... ...ा भी वि... ...रपूर्व ...

शिक्षा का काल-विभाजन

शिक्षा की दृष्टि से बृटिशकाल को तीन भागों मे बाँटा जा सकता है :—

(१) सन् १८१३ से १८५४ तक।

(२) सन् १८५४ ई० से १६२० ई० तक।

(३) सन् १६२० ई० से १६४७ ई० १५ अगस्त तक।

प्रथम भाग १८१३–१८५४ तक

सन् १८१३ ई० के आज्ञा-पत्र में शिक्षा के उद्देश्य, स्वरूप, माध्यम एवं साधनों की व्याख्या नहीं की गई थी। इसलिए शिक्षा के क्षेत्र मे एक सघर्ष उठ खड़ा हुआ। इस सघर्ष में तीन प्रकार के विचारों के लोग थे। इसलिए तीन दल बन गए—(१) प्राच्य शिक्षावादी, (२) पाश्चात्य शिक्षा-वादी और (३) लोक-शिक्षावादी।

(१) प्राच्य-शिक्षावादियों का कहना था कि भारतीय प्राचीन साहित्य, सभ्यता एवं सस्कृति तथा पाश्चात्य ज्ञान और विज्ञान की शिक्षा सस्कृत एवं अरबी के माध्यम से होनी चाहिए। इस दल में कम्पनी के पुराने अधिकारी थे।

(२) पाश्चात्य शिक्षावादियों का कहना था कि भारत में अंग्रेजी के माध्यम से योरोपीय ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा होनी चाहिए। इस दल में मिस्टर ग्राण्ट के पिछलग्गू कम्पनी के नवयुवक अधिकारी, ईसाई पादरी और राजा-राममोहन राय जैसे लोग भी थे।

(३) लोक-शिक्षावादियों का कहना था कि पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा प्रान्तीय भाषाओं के माध्यम से हो। इस दल मे बम्बई और मद्रास के गवर्नर श्री स्टुअर्ट एल्फिन्स्टन तथा मुनरो आदि थे जिनकी कोई सुन-वाई न थी।

इन तीनों दलो के सघर्ष का परिणाम यह हुआ कि दस वर्ष तक अर्थात् १८२३ ई० तक शिक्षा की प्रगति न हो सकी। बेलारी के कलक्टर श्री कैम्प-बेल ने अपनी १८२३ ई० की शिक्षा रिपोर्ट में कम्पनी को लिखा था :— 'इस जिले में घटत-घटते शिक्षा-सम्बन्धी ५३३ संस्थाएँ रह गई हैं और मुझे यह कहते लज्जा आती है कि इनमे मे एक को भी सरकारी सहायता नहीं मिलती।' सन् १८२३ ई० में शिक्षा-सम्बन्धी सरकारी योजनाओं को चालू करने के लिए तथा एक लाख रुपये के अनुदान को उचित रूप से उपयोग करने के लिए 'शिक्षा समिति' तत्कालीन गवर्नर जनरल ने बनाई। इस समिति में दस सदस्य थे और सस्कृत भाषा के प्रसिद्ध विद्वान् विल्सन महोदय इस

इस घोषणा-पत्र में सिफारिश की गई कि :—

१—मुख्य रूप से योरोपीय कला, विज्ञान एव साहित्य का अध्ययन किया जाय।

२—अध्ययन का माध्यम अंग्रेजी ही रहे परन्तु देशी भाषाएँ भी पढ़ाई जावें और उनका विकास भी किया जाय जिससे वे भी योरोपीय ज्ञान के प्रचार में सहायक हों।

३—प्रत्येक प्रान्त में एक शिक्षा विभाग स्थापित हो और उसे एक शिक्षा-सञ्चालक के अधीन रखा जाय। सहायक निरीक्षकों की सहायता से वह अपने प्रान्त में शिक्षा की व्यवस्था करे एव उसका सचालन करे और प्रतिवर्ष उसकी रिपोर्ट सरकार को दे।

४—कलकत्ता, बम्बई और यदि आवश्यक हो तो मद्रास में भी लन्दन यूनिवर्सिटी की नकल पर यूनिवर्सिटियाँ स्थापित की जायँ।

५—शिक्षा का ढाँचा इस प्रकार हो, प्राइमरी, मिडिल, हाईस्कूल, कालेज और उसके बाद विश्वविद्यालय।

६—शिक्षा छनने के सिद्धान्त को हटा कर जनसाधारण की शिक्षा पर ध्यान दिया जाय।

७—गरीब विद्यार्थियों को वजीफे दिये जायँ।

८—गैर सरकारी शिक्षण सस्थाओं को भी सरकार उदारतापूर्वक सहायता (ग्राट-इन-एड) दे।

पुस्तकालयों, विद्यालय-भवनों तथा विज्ञानशालाओं के निर्माण की व्यवस्था के लिए अतिरिक्त सहायता दी जाय।

९—शिक्षकों की ट्रेनिङ्ग के लिए नार्मल स्कूल तथा ट्रेनिङ्ग कालेज खोले जायँ। ट्रेनिङ्ग काल में भी शिक्षकों को वजीफे दिये जायँ।

१०—औद्योगिक शिक्षा, कानून, चिकित्सा, इजीनियरिंग आदि की शिक्षा की भी समुचित व्यवस्था की जाय।

११—स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहन दिया जाय और अधिक उदारतापूर्वक सहायता दी जाय।

इस प्रकार यह घोषणा-पत्र आधुनिक शिक्षा की आधार शिला है। प्रसिद्ध लेखक जेम्स ने इसे 'भारत में अंग्रेजी शिक्षा का मैग्नाकार्टा' कहा है। इस घोषणा-पत्र के द्वारा कम्पनी ने अधिकृत रूप में यह स्वीकार कर लिया कि जनता को शिक्षा प्रदान करना सरकार के कर्त्तव्यों में से एक मुख्य कर्तव्य है। इस प्रकार शिक्षा विभाग अलग से स्थापित करके, ग्राट देने की प्रथा चला

कर शिक्षा के साथ पुस्तकालयों को भी प्रोत्साहन देने की बात स्पष्ट रूप से स्वीकार की गई। अतः इस घोषणा-पत्र ने शिक्षा के संगठन को एकरूपता प्रदान की। इसके अनुसार प्रत्येक प्रान्त में शिक्षा विभाग स्थापित हुए और विशिष्ट प्रणाली के अनुसार कार्य शुरू किया गया। किन्तु इसी बीच सन् १६५७ ई० का प्रथम स्वाधीनता आन्दोलन छिड़ गया। उसके बाद कम्पनी के शासन का अंत हो गया और बृटिश पार्लियामेंट ने भारतीय शासन की बागडोर सँभाली। महारानी विक्टोरिया भारत की महारानी बनीं। उन्होंने १६५८ ई० में सरकारी धार्मिक तटस्थता की नीति की घोषणा की। भारत मंत्री का एक नया पद बनाया गया और उस पद पर लार्ड स्टैनले की नियुक्ति की गई। शिक्षा के उत्तरदायित्व को आंशिक रूप में प्रान्तीय सरकारों को दे दिया गया। आगे चल कर १८७१ ई० मे लार्ड मेयो ने शिक्षाविभागों को प्रान्तीय सरकारों के अधीन कर दिया और उन्हें शिक्षा पर खर्च करने की आज्ञा दे दी। १८७७ ई० में लार्ड लिटन ने कुछ और अधिकार दिए किन्तु शिक्षा की नीति निर्धारित करने का अधिकार अंत तक केन्द्रीय सरकार के ही हाथ में रहा।

इस प्रकार भारत मे शिक्षा-विभाग द्वारा स्कूलों और कालेजों की स्थापना होने लगी। सरकारी सहायता से प्रोत्साहन पा कर अनेक गैर सरकारी स्कूल और कालेज खुले। इनके साथ पुस्तकालय स्थापित हुए। इसके बाद से ही स्वतंत्र पुस्तकालय भी स्थापित होने लगे।

अंत में कुछ दिनों बाद पादरियों का वर्ग सरकार की धार्मिक तटस्थता की नीति से नष्ट हो गया। इस पर लार्ड रिपन ने १८८२ ई० में 'भारतीय शिक्षा कमीशन' की नियुक्ति की जिसे 'हण्टर कमीशन' कहा जाता है। इस कमीशन की सिफारिश पर प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था नगरपालिका और जिला बोर्डों को दे दी गई। कमीशन ने प्रौढ़ शिक्षा की भी सिफारिश की। फलतः नए पुस्तकालयों की भी वृद्धि हुई।

सन् १८६६ ई० में लार्ड कर्जन वाइसराय होकर आए। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र मे जो सुधार किए उसे भारतीयों ने पसन्द नहीं किया। वे शिक्षा पर कड़े सरकारी नियन्त्रण के कायल थे। उनके इस विरोध से शिक्षा के क्षेत्र मे हलचल-सी मच गई।

सन् १६०५ में भारत में स्वदेशी आन्दोलन शुरू हुआ। उसका भी शिक्षा पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। राष्ट्रीय शिक्षा की नई योजनाएँ बनाई गईं। उनके फलस्वरूप अनेक राष्ट्रीय विद्यालय, गुरुकुल और महाविद्यालय

वली' १८०५ में छपी। यह पुस्तक ईसप की कल्पित कहानियों का अनुवाद मात्र थी। १८१७ में सूरत में 'मिशन प्रेस' की स्थापना हुई।

इस प्रकार आज से ४०० वर्ष पहले गोवा में पुस्तकें छपीं। तीन सौ वर्ष से ऊपर की छपी पुस्तकें अब भी भारत में म्युजियमों में पाई जाती हैं। प्रेसों का धीरे-धीरे विस्तार हुआ और बृटिशकाल के अन्तिम दिनों में तो भारत भर में प्रेसों का एक जाल-सा बिछ गया।

हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज

प्रेस के आविष्कार और प्रचार के साथ-साथ पुस्तकों और समाचार-पत्रों आदि की भी सख्या बढ़ी। धीरे-धीरे ये पुस्तकें रगीन, सचित्र और आकर्षक ढङ्ग से छपने लगीं। प्रेस की सुविधा के होने पर पुरानी हस्तलिखित पोथियाँ छपवाई जाने लगीं। भारत सरकार ने एक पुरातत्त्व विभाग भी स्थापित किया। उसके अन्तर्गत प्राचीन भारतीय महत्त्वपूर्ण सामग्रियों की खोज होनी शुरू हुई। बहुत से ताम्र-पत्र, सिक्के, मुहरें, अभिलेख, शिलालेख आदि का पता लगा जिनसे भारत की पुरानी सभ्यता और सस्कृति की अनेक गुत्थियाँ सुलझाने में सहायता मिली।

इसी काल में अनेक खोजपूर्ण सस्थाएँ स्थापित हुईं जिन्होंने भारतीय हस्तलिखित पोथियों की खोज का काम अपने हाथों में लिया। इनमें से अधिकाश सस्थाएँ गैरसरकारी थीं और कुछ सरकारी। यद्यपि भारत के घर-घर और गाँव-गाँव में ऐसी हस्तलिखित पोथियाँ बिखरी हुई थीं किन्तु अनेक सस्थाओं, मठों, मन्दिरों और पाठशालाओं आदि में हस्तलिखित ग्रन्थों की अनुपम ज्ञानराशि मिली और अनेक सस्थाओं ने इनकी सूचियाँ भी छपवाई, उनमें से निम्नलिखित विशेष प्रसिद्ध हैं :—

१८५७ कैटलाग राइसनी आफ़ ओरियन्टल मैन्युस्क्रप्ट्स इन द गवर्नमेंट लाइब्रेरी मद्रास : संपा० विलियम टेलर।

१८९३ नोट्स आफ सस्कृत मैनुस्क्रप्ट्स . आर्डर आफ द गवर्नमेंट आफ बगाल सपा० हरप्रसाद शास्त्री।

१९०२ कैटलाग आफ साउथ इडियन सस्कृत मैनुस्क्रप्ट्स : रायल एशियाटिक सो० लन्दन।

१९१६ ट्रिनिपल कैटलाग आफ मैनुस्क्रप्ट्स : कुप्पू स्वामी शास्त्री एम०।

१९१६ डिस्क्रिप्टिव कैटलाग आफ द गवर्नमेंट कलेक्शन आफ मैनुस्क्रप्ट्स . डकन कालेज पूना।

१९१६ भण्डारकर ओरियन्टल रिसर्च इन्स्टीस्यूट बड़ौदा . डिस्क्रिप्टिव कैट

लाग श्राफ द गवर्नमेंट कलेक्शन श्राफ मैनुस्क्रप्ट्स (अनेक भागों में)।

१६२० अब्दुल करीम : बाँगला प्राचीन पुथिर विवरण (वंगीय साहित्य परिषद्) ।

१६२३ महावीर जैन पुस्तकालय दिल्ली : हस्तलिखित ग्रन्थों का सूचीपत्र।

१६२३ श्यामसुन्दर दास : नागरीप्रचारिणी सभा : हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थों का संक्षिप्त विवरण (क्रमशः कई भागों में) ।

१६२७ शिवरत्न मिश्र सम्पा० : प्राचीन पुथिर विवरण ।

१६३० यूनिवर्सिटी आफ कलकत्ता : डिस्क्रिप्टिव कैटलाग श्राफ आसामी मैन्युस्क्रप्ट्स : सपा० हेमचन्द्र गोस्वामी ।

१६३६ ओरियन्टल मैनुस्क्रप्ट्स लाइब्रेरी उज्जैन; कैटलाग आफ ओरियन्टल मैनुस्क्रप्ट्स ।

१६३६ महासरस्वतीभण्डारइष्टापथपुस्तकालयस्थसंस्कृतहस्तलिखितपुस्तकानाम् सूचीपत्रम्, इटावा, ब्रह्म प्रेस ।

१६४२ विनय द्रुमुदसीय : शान्तिनाथ प्राचीन ताडपत्रीय जैन ज्ञान भडार । लींबड़ी जैन ज्ञान भण्डारनी हस्तलिखित प्रतिओनु सूचीपत्र , वीर सम्वत् २४५५ ।

कुछ खोज करने वाले विद्वानों ने हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज में दुर्गम स्थानों की यात्राएँ कीं जिनके प्रयत्नों से लुप्त ज्ञानराशि का पता लगा। ऐसे खोजकर्त्ताओं मे महापंडित राहुल साकृत्यायन का नाम विशेष उल्लेखनीय है । श्री राहुलजी ने तिब्बत मे वर्षों रह कर वहाँ से दुर्लभ ग्रन्थों का पता लगाया । अपनी एक खोज सम्बन्धी यात्रा का उल्लेख उनके शब्दों मे इस प्रकार है :—

"मेरी यह यात्रा भूगोल-सम्बन्धी अन्वेषण या मनोरजन के लिए नहीं हुई है; बल्कि यह यहाँ के साहित्य के अच्छे प्रकार अध्ययन तथा इससे भारतीय एवं बौद्ध धर्म-सम्बन्धी ऐतिहासिक तथा धार्मिक सामग्री एकत्र करने के लिये हुई है। इतिहास-प्रेमी जानते है कि सातवीं शताब्दी के नालन्द के आचार्य शान्तरक्षित से आरम्भ करके ग्यारहवीं शताब्दी के विक्रमशिला के आचार्य दीपंकर श्रीज्ञान के समय तक तिब्बत और भारत (उत्तरी भारत) का घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। तिब्बत को साहित्यिक भाषा अक्षर और धर्म देने वाले भारतीय हैं । उन्होंने यहा आ कर हजारों संस्कृत तथा कुछ हिन्दी के ग्रन्थों के भी भाषान्तर तिब्बती भाषा मे किये । इन अनुवादों का अनुमान इसी से हो सकता है कि संस्कृत ग्रन्थों के अनुवादों के कंग्यूर और तग्यूर के

नाम से जो यहाँ दो सग्रह हैं उनका परिमाण अनुष्टुप् श्लोकों में करने पर २० लाख से कम नहीं हो सकता। कग्यूर में उन ग्रन्थों का सग्रह है जिन्हें तिब्बती बौद्ध भगवान् बुद्ध का श्रीमुख-वचन मानते हैं। यह मुख्यत॰ सूत्र, विनय और तन्त्र तीन भागों में बाँटा जा सकता है। यह कंग्यूर १०० वेष्टनों में बँधा है। इसी लिये कग्यूर में सौ पोथियाँ कही जाती हैं, यद्यपि ग्रन्थ अलग-अलग गिनने पर उनकी सख्या सात सौ से ऊपर पहुँचती है। कग्यूर में कुछ ग्रन्थ सस्कृत से चीनी में हो कर भी भोटिया में अनुवाद किये गये हैं। तग्यूर में कितने ही ग्रन्थों की टीकाओं के अतिरिक्त दर्शन, काव्य, व्याकरण ज्योतिष, वैद्यक, तन्त्र आदि के कई सौ ग्रन्थ हैं। ये सभी सग्रह दो सौ पोथियों में बँधे हैं। इसी सग्रह में भारतीय-दर्शन-नभोमडल के प्रखर ज्योतिष्क आर्यदेव, दिङ्नाग, धर्मरक्षित, चन्द्रकीर्ति, शान्तरक्षित, कमलाशी आदि के मूल-ग्रन्थ भी जो सस्कृत में सदा के लिये विनष्ट हो चुके हैं, शुद्ध तिब्बती अनुवाद में सुरक्षित हैं। आचार्य चन्द्रगोमी का चान्द्रव्याकरण सूत्र, धातु, उणादि-पाठ, वृत्ति टीका पञ्चिका आदि के साथ विद्यमान है। चन्द्रगोमी 'इन्द्रश्चन्द्रः काश्कृत्स्नः'वाले श्लोक के अनुसार आठ महावैयाकरणों में से एक महावैयाकरण ही नहीं थे, बल्कि वे कवि और दार्शनिक भी थे, यह उनकी तग्यूर में वर्तमान कृतियों- लोकानन्द नाटक, वादन्याय-टीका आदि से मालूम होता है। अश्वघोष, मतिचित्र (मातृचेता), हरिभद्र, आर्यशूर आदि महाकवियों के कितने ही सस्कृत में सुलभ ग्रन्थ भी तग्यूर में हैं। इसी में अष्टागहृदय, शालिहोत्र आदि कितने ही वैद्यक-ग्रन्थ टीका-उपटीकाओं के साथ मौजूद हैं। इसी में मतिचित्र का पत्र महाराज कनिष्क को, यागीश्वर जगद्रत्न का महाराज चन्द्र को, दीपकर श्रीज्ञान का राना नयपाल (पालवशी) को तथा दूसरे भी कितने ही लेख (पत्र) हैं। इसी में ग्यारहवीं शताब्दी के आरम्भ के बौद्ध मस्ताना योगी सरह, अवधूती आदि के दोहा कोश आदि हिन्दी-ग्रन्थों के भाषान्तर हैं।

इन दोनों सग्रहों के अतिरिक्त भोट भाषा में नागार्जुन, आर्यदेव, असङ्ग, वसुबन्धु, शान्तरक्षित, चन्द्रकीर्ति, धर्मकीर्ति, चन्द्रगोमी, कमलशील, दीपकर श्रीज्ञान आदि अनेक भारतीय पण्डितों के जीवनचरित्र हैं। तारानाथ, बुतोन्, पद्मकरपो, वेदुरिया सेरपो, कुन्ग्यल आदि के कितने ही छोजुग (धर्मेतिहास) हैं, जिनसे भारतीय इतिहास के कितने ही ग्रन्थों पर प्रकाश पड़ता है। इन नम्थर (जीवनी), छोजुङ्ग (धर्मेतिहास), के अतिरिक्त कग्यूर

तंग्यूर में दूसरे भी सैकड़ों ग्रन्थ है, जिनका यद्यपि भारतीय इतिहास से साक्षात् सम्बन्ध नहीं है, तो भी वे सहायता पहुँचा सकते हैं।

उक्त ग्रन्थ अधिकतर कैलास मानसरोवर के समीपवाले थोलिंग गुम्बा (विहार), मध्य तिब्बत के सक्या, समये आदि विहारों में अनूदित हुए थे। इन गुम्बाओं (विहारों) में खोजने पर ग्यारहवीं शताब्दी से पूर्व के भी कुछ हमारे मूल संस्कृत ग्रन्थ देखने को मिल सकते हैं।"

समाचार-पत्र और पत्रिकाओं के प्रकाशन

प्रेस के आविष्कार होने पर भारत में अनेक भाषाओं में समाचार-पत्र और मासिक पत्रिकाएँ छपने लगीं। इनका प्रारम्भ इस प्रकार हुआ :—

साप्ताहिक

प्रथम बंगाली पत्रिका,	समाचार-दर्पण	१८१८
,, उर्दू पत्रिका,	जामे-जहान-नामा	१८२२
,, गुजराती पत्रिका,	बम्बई समाचार	१८२२
,, हिन्दी पत्रिका,	उदंत मार्तण्ड	१८२६

दैनिक

प्रथम बंगाली दैनिक कलकत्ता,	संवत् प्रवकर	१८३६
,, अंग्रेजी दैनिक पंजाब,	लाहौर क्रानिकल	१८४६
,, मराठी दैनिक पूना,	ज्ञान प्रकाश	१८४८
,, हिन्दी दैनिक कलकत्ता,	समाचार सुधावर्षण	१८५४
,, अंग्रेजी दैनिक इलाहाबाद,	पायनियर	१८६५
,, अमृत बाजार पत्रिका बंगला साप्ताहिक से अंग्रेजी दैनिक		१८६६

पुस्तकालयों का विकास

प्रेस की सुविधा के कारण जब पुस्तकें छपने लगीं तो पुस्तकालयों के विकास में बहुत सरलता हो गई। इस प्रकार जो पुस्तकालय स्थापित हुए, उनके विभिन्न रूप थे। उनका संक्षिप्त वर्गीकरण तथा विकास-क्रम इस प्रकार है—

बृटिशकालीन पुस्तकालयों का वर्गीकरण

बृटिश कालीन भारत में पिछली शिक्षा नीति के अनुसार जो पुस्तकालय स्थापित हुए, उनको पाँच भागों में विभाजित किया जा सकता है :—

१—बृटिश सरकार के पुस्तकालय

(क) इम्पीरियल लाइब्रेरी।

(ख) मन्त्रिमण्डलों से संलग्न पुस्तकालय।

(ग) स्वतन्त्र कार्यालयों से सम्बद्ध पुस्तकालय।

(घ) मातहत और सलग्न कार्यालयों से सम्बद्ध पुस्तकालय।

२—प्रान्तीय सरकारों और देशी राज्यों के पुस्तकालय

(क) विभागीय पुस्तकालय।

(ख) म्युजियम पुस्तकालय।

३—शिक्षण संस्थाओ के पुस्तकालय

(क) यूनिवर्सिटी पुस्तकालय।

(ख) कालेज पुस्तकालय।

(ग) हाईस्कूल तथा मिडिल स्कूलों के पुस्तकालय।

४—अनुसंधान संस्थाओं, प्रयोगशालाओं, और स्वतंत्र खोज-संस्थाओं के विशेष पुस्तकालय

५—सार्वजनिक पुस्तकालय

अब इनमेंसे प्रत्येक भाग के पुस्तकालयों के विषय में यह देखना है कि उनका काल-क्रम से विकास किस प्रकार हुआ।

१—(क) इम्पीरियल लाइब्रेरी

१९०२ इम्पीरियल लाइब्रेरी, कलकत्ता।

१—(ख) मंत्रालयों से संलग्न पुस्तकालय

१९०१ मिनिस्ट्री आफ डिफेन्स लाइब्रेरी, नई दिल्ली।
१९०५ सेंट्रल सेक्रेट्रियट लाइब्रेरी, नई दिल्ली।
१९०८ मिनिस्ट्री आफ रेलवेज लाइब्रेरी, नई दिल्ली।
१९१७ मिनिस्ट्री आफ लेबर लाइब्रेरी, नई दिल्ली।
१९३७ सेंट्रल एजुकेशन लाइब्रेरी, शिक्षा विभाग, दिल्ली।
१९३४ मिनिस्ट्री आफ फूड ऐण्ड ऐग्रीकल्चर लाइब्रेरी, दिल्ली।

१—(ग) स्वतंत्र कार्यालयों से संलग्न पुस्तकालय

१९२१ पार्लियामेंट लाइब्रेरी, पार्लियामेंट हाउस, नई दिल्ली।

१-(घ) मातहत और संलग्न कार्यालयों से सम्बद्ध पुस्तकालय
मिनिस्ट्री आफ कामर्स ऐण्ड इण्डस्ट्रीज

१९१२ द पेटेन्ट आफिस लाइब्रेरी, कलकत्ता।

१९१६ कामर्शियल लाइब्रेरी ऐण्ड रीडिङ्ग रूम, कलकत्ता।
१९४० ट्रेड मार्क रजिस्ट्री आफिस लाइब्रेरी, कलकत्ता।
१९४० ट्रेड मार्क रजिस्ट्री आफिस लाइब्रेरी, बम्बई।
१९३४ लाइब्रेरी आफ इकोनामिकल ऐडवाइजर टु द बृटिश गवर्नमेंट आफ इण्डिया, नई दिल्ली।
१९४६ लाइब्रेरी आफ डाइरेक्टरेट आफ इण्डस्ट्रियल स्टैटिस्टिक्स, शिमला।

मिनिस्ट्री आफ कम्युनिकेशन

१८७५ मेटेरोलोजिकल आफिस लाइब्रेरी, कलकत्ता।
१८७५ मेटेरोलोजिकल आफिस लाइब्रेरी, पूना।
१९०० सीनियर एलेक्ट्रिकल इंजीनियर्स आफिस लाइब्रेरी, कलकत्ता।
१९०१ कोदाई कनाल आब्जर्वेटरी लाइब्रेरी, कोदाई कनाल।
१९३७ लाइब्रेरी आफ द आफिस आफ द डाइरेक्टरेट जनरल आफ सिविल एवैशन, दिल्ली।
१९४२ पोस्ट ऐण्ड टेलीग्राफ्स ट्रेनिङ्ग सेंटर लाइब्रेरी, जबलपुर।
१९४५ रीजनल मेटेरोलोजिकल सेंटर लाइब्रेरी, नागपुर।
१९४५ रीजनल मेटेरोलोजिकल सेंट्रल लाइब्रेरी, मद्रास।

मिनिस्ट्री आफ डिफेन्स

१९२७ एयर हेडक्वाटर्स रिफरेंस ऐण्ड टेकनिकल लाइब्रेरी, नई दिल्ली।

मिनिस्ट्री आफ एजुकेशन

१८९१ इम्पीरियल रेकार्ड रूम आफ इण्डिया लाइब्रेरी, दिल्ली।
१९०२ सेंट्रल आर्केलोजिकल लाइब्रेरी, नई दिल्ली।
१९४५ लाइब्रेरी आफ द डिपार्टमेंट आफ द आर्केलोजी, कलकत्ता।

मिनिस्ट्री आफ फाइनेन्स

१९३६ लाइब्रेरी आफ द आफिस आफ द ए० जी० उड़ीसा (रॉंची)।
१९४४ सेंट्रल बोर्ड आफ रेव्न्यू लाइब्रेरी, नई दिल्ली।

मिनिस्ट्री आफ फूड ऐण्ड ऐग्रीकल्चर

१८५६ ज्योलोजिकल सर्वे आफ इण्डिया लाइब्रेरी, कलकत्ता।
१८६२ ज्योडेटिक ब्राच लाइब्रेरी, सर्वे आफ इण्डिया, देहरादून।
१८९६ लाइब्रेरी आफ द इण्डस्ट्रियल सेक्शन, इण्डियन म्युजियम कलकत्ता।

१९१६ लाइब्रेरी आफ द ज्योलोजिकल सर्वे आफ इण्डिया—इण्डियन म्युजि-यम, कलकत्ता ।

१९३५ डाइरेक्ट्रेट आफ मार्केटिङ्ग ऐण्ड इन्स्पेक्शन लाइब्रेरी, नई दिल्ली ।

मिनिस्ट्री आफ होम अफेयर्स

१९४७ इण्डियन ऐडमिनिस्ट्रेटिव ट्रेनिङ्ग स्कूल लाइब्रेरी, दिल्ली ।

मिनिस्ट्री आफ इन्फार्मेशन ऐण्ड ब्राडकास्टिंग

१९०४ प्रेस इन्फार्मेशन ब्यूरो लाइब्रेरी, नई दिल्ली ।

१९३० आल इण्डिया रेडियो लाइब्रेरी, कलकत्ता ।

१९३८ आल इण्डिया रेडियो लाइब्रेरी, मद्रास ।

१९३८ आल इण्डिया रेडियो लाइब्रेरी, लखनऊ ।

१९३९ मोनोटोरिङ्ग सर्विस ए० आई० आर० लाइब्रेरी, शिमला ।

१९४१ लाइब्रेरी आफ द स्टेशन डाइरेक्टर, आल इण्डिया रेडियो, नई दिल्ली ।

१९४१ पब्लिकेशन डिवीजन लाइब्रेरी, दिल्ली ।

१९४७ आल इण्डिया रेडियो लाइब्रेरी, कटक ।

मिनिस्ट्री आफ लेबर

१९४६ डाइरेक्रेट जनरल आफ रिसेटेलमेंट ऐण्ड इम्प्ल्वायमेट लाइब्रेरा, नई दिल्ली ।

१९४६ लेबर ब्यूरो लाइब्रेरी, शिमला ।

मिनिस्ट्री आफ वर्क्स, प्रोडक्शन ऐण्ड सप्लाई

१९२२ डाइरेक्ट्रेट जनरल आफ सप्लाईज ऐण्ड डिस्पोजल्स लाइब्रेरी, नई दिल्ली ।

१९३१ सी० डब्ल्यू० ऐण्ड पी० सी० लाइब्रेरी ऐण्ड इन्फार्मेशन ब्यूरो, शिमला ।

१९३७ लाइब्रेरी आफ द सेंट्रल वाटर पावर इरिगेशन ऐण्ड नैवीगेशन रिसर्च स्टेशन, पूना ।

१९४६ सेंट्रल वाटर ऐण्ड पावर कमीशन लाइब्रेरी, शिमला ।

२—(क)—प्रान्तीय सरकारों और देशी रियासतों के विभागीय पुस्तकालय

१८५४ मैसूर एजुकेशनल लाइब्रेरी, डी०पी०आई० आफिस, मैसूर, बंगलौर।
१८६७ सेक्रेट्रियट लाइब्रेरी, कलकत्ता।
१८९१ असाफिया स्टेट लाइब्रेरी, हैदराबाद।*
१९१४ आर्कलाजिकल डिपार्टमेंट लाइब्रेरी, हैदराबाद।
१९०१ लाइब्रेरी आफ द आफिस आफ द सुपरिन्टेन्डेण्ट, गवर्नर, लिवस्टाक फार्म हिसार।
१९०४ गवर्नमेंट ऐग्रिकल्चर लाइब्रेरी, नवाबगंज, कानपुर।
१९२० डाइरेक्ट्रेट आफ इन्डस्ट्रीज लाइब्रेरी, कलकत्ता।
१९२१ यू० पी० लेजिस्लेटिव एसेम्बली, लाइब्रेरी लखनऊ।
१९२२ लेजिस्लेटिव एसेम्बली लाइब्रेरी, त्रिवेन्द्रम।
१९२७ रिफ्रेंस लाइब्रेरी डिपार्टमेंट आफ आर्केलोजी, त्रिचूर।
१९३२ लाइब्रेरी आफ द आफिस आफ द ऐडवोकेट जनरल, रीवाँ।
१९४७ कोआपरेटिव डिपार्टमेंट लाइब्रेरी, रीवाँ।

२—(ख) म्युजियम लाइब्रेरी

१८८५ म्युजियम लाइब्रेरी, जूनागढ़।
१८८८ म्युजियम लाइब्रेरी, राजकोट।
१९१७ आर्कलोजिकल म्युजियम रिफरेंस लाइब्रेरी, मथुरा।
१९२८ हैदराबाद म्युजियम लाइब्रेरी, हैदराबाद।
१९३८ उड़ीसा म्युजियम लाइब्रेरी, उड़ीसा।
१९४० आसाम प्रोविंशियल म्युजियम लाइब्रेरी, गौहाटी।
१९४६ म्युजियम लाइब्रेरी, जामनगर।

---

* ८८००० विभिन्न विषयों की पुस्तकें, १३८०४ दुर्लभ ग्रन्थ, और प्राचीन तम ग्रन्थ। यह स्कालर्स के लिए है। पर्चमेंट पेपर, डियर स्किन पर पुराने ग्रन्थ हैं। दो इञ्च की एक पुस्तक में गीता लिखी है। १४८७ A. D की एक अनुपम पुस्तक है। सबसे पुरानी प्रका० पुस्तक १०७२ A. D. की है। १५वीं शताब्दी की एक पुस्तक में इंडस्ट्रियल साइंस है जिसमें कागज स्याही आदि बनाने की विधियाँ हैं।

३—(क) यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी

१८५७ कलकत्ता यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी।
१८६६ बम्बई यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी।
१८७६ अलीगढ़ मुस्लिम यूनिर्सिटी लाइब्रेरी।
१८८२ पंजाब यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, लाहौर।
१९०३ मद्रास यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी।
१९१६ बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी।
१९१६ मैसूर यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, मैसूर।
१९१७ पटना यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी।
१९१८ उस्मनिया यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, हैदराबाद।
१९२१ लखनऊ यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी (टैगोर लाइब्रेरी)।
१९२२ इलाहाबाद यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, इलाहाबाद।
१९२२ दिल्ली यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, दिल्ली।
१९२५ नागपुर यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, नागपुर।
१९२६ आन्ध्र यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, वाल्टेयर।
१९२९ अन्नामलाई यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, अन्नामलाई नगर, मद्रास।
१९३६ आगरा यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, आगरा।
१९४३ उत्कल यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, कटक।
१९४३ ट्रावनकोर यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, त्रिवेन्द्रम।
१९४६ सागर यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, सागर।

कालेज पुस्तकालयों के अन्तर्गत इन्टरमीडिएट कालेज तथा यूनिवर्सिटियों से मान्यताप्राप्त डिग्रीकालेजों के पुस्तकालय हैं जो कालेजों के साथ स्थापित किए गए। इसी प्रकार हाईस्कूलों और मिडिल स्कूलों के साथ भी छोटे स्तर पर पुस्तकालय स्थापित हुए। ये पुस्तकालय केवल शिक्षकों और छात्रों को पठन पाठन में सुविधा देने के लिए ही थे।

४—अनुसन्धान सम्थाओं और स्वतन्त्र खोज-संस्थाओं के पुस्तकालय (लाइब्रेरीज़ आफ रिसर्च इन्स्टीट्यूशंस, लैवोरेटरीज़ ऐण्ड सोसाइटीज़)।

१७८४ रायल एशियाटिक सोसाइटीज आफ बंगाल लाइब्रेरी, कलकत्ता।
१८४९ गुजरात विद्यासभा पुस्तकालय, भादर, अहमदाबाद।
१८६५ गवर्नमेन्ट कालेज आफ आर्ट ऐण्ड क्रैफ्ट लाइब्रेरी, कलकत्ता।

१८७६ इंडियन एसोसिएशन फार द कल्टीवेशन आफ साइंस लाइब्रेरी, यादवपुर, कलकत्ता ।
१८१६ गवर्नमेंट ओरियन्टल लाइब्रेरी, मैसूर ।
१८६५ इंडियन वेटेनैरी रिसर्च इंस्टीट्यूट लाइब्रेरी, मुक्तेश्वर ।
१६०५ इंडियन ऐग्रीकल्चरल रिसर्च इस्टीट्यूट लाइब्रेरी नई दिल्ली ।
१६०६ माइनिंग, ज्योलोजिकल ऐण्ड मेटल्यूरजिकल इस्टट्यूट आफ इंडिय. लाइब्रेरी, धनबाद ।
१६०६ सेन्ट्रल रिसर्च इंस्टीट्यूट लाइब्रेरी, कसौली ।
१६१० भारतीय इतिहास सशोधन मण्डल लाइब्रेरी, पूना ।
१६११ इंडियन इंस्टीट्यूट आफ साइन्स लाइब्रेरी, बंगलौर ।
१६१२ कामरूप अनुसंधान समिति (आसाम रिसर्च सोसाइटी लाइब्रेरी), गौहाटी ।
१६१३ मद्रास फारेस्ट कालेज लाइब्रेरी, कोयम्बटूर ।
१६१५ के० आर०-कामा ओरियन्टल रिसर्च इस्टीट्यूट लाइब्रेरी, बम्बई ।
१६१७ रोज इन्स्टीट्यूट लाइब्रेरी, कलकत्ता ।
१६१८ भंडारकर ओरियन्टल रिसर्च इस्टीट्यूट लाइब्रेरी, पूना ।
१६१६ इंडियन काउन्सिल आफ मेडिकल रिसर्च लाइब्रेरी, कसौली ।
१६२० जामिया मिलिया इस्लामिया रिसर्च लाइब्रेरी, दिल्ली ।
१६२१ हरकोर्ट बटलर टेकनोलोजिकल इंस्टीट्यूट लाइब्रेरी, कानपुर ।
१६२४ इन्स्टीट्यूट आफ प्लान्ट इन्स्टीट्यूट लाइब्रेरी इन्दौर ।
१६२६ भातखण्डे कालेज आफ हिन्दुस्तानी म्युजिक लाइब्रेरी, लखनऊ ।
१६२६ हिन्दी संग्रहालय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद ।
१६२६ आन्ध्र हिस्टारिकल रिसर्च सोसाइटी लाइब्रेरी, राजा मुन्दरी, ईस्ट गोदावरी ।
१६२७ मलेरिया इंस्टीट्यूट आफ इण्डिया लाइब्रेरी, दिल्ली ।
१६२७ रानी वर्मा रिसर्च इन्स्टीट्यूट लाइब्रेरी, ट्रिचूर, (ट्रावन-कोर कोचीन) ।
१६२८ इंडियन डेयरी रिसर्च इंस्टीट्यूट लाइब्रेरी, बंगलौर ।
१६३० इंडियन काउंसिल आफ ऐग्रिकल्चरल रिसर्च इंस्टीट्यूट लाइब्रेरी, नई दिल्ली ।
१६३० कामरूप संस्कृत सजीवनी लाइब्रेरी, नलवारी ।
१६३० वीराज रिलीजस इंस्टीट्यूट लाइब्रेरी, डिब्रूगढ ।

१९३१ सेठ वादीलाल साराभाई जनरल होस्पिटल ऐण्ड सेठ विनाई मैटर-निटी होम मेडिकल लाइब्रेरी, अहमदाबाद ।

१९३३ इन्डियन स्टैटिस्टिक इन्स्टीट्यूट लाइब्रेरी प्रेसी० कालेज, कलकत्ता ।

१९३४ सैदिया लाइब्रेरी, जामबाग, टूरुप बाजार, हैदराबाद ।

१९३६ इडियन इस्टीट्यूट आफ सुगर टेकनोलोजी लाइब्रेरी, कानपुर ।

१९३६ टाटा इन्स्टीट्यूट आफ सोशल साइन्सेज लाइब्रेरी, अँधेरी, बम्बई ।

१९३८ रामकृष्ण मिशन इस्टीट्यूट आफ कल्चर लाइब्रेरी, कलकत्ता ।

१९३९ अनूप सस्कृत लाइब्रेरी फोर्ट, बीकानेर ।

१९४१ दिल्ली पोलीटेकनिक लाइब्रेरी, दिल्ली ।

१९४५ टाटा इस्टीट्यूट फण्डामेन्टल रिसर्च लाइब्रेरी, बम्बई ।

१९४६ नेशनल मेटल्यूरजीकल लेबोरेटरी लाइब्रेरी, जमशेदपुर ।

१९४६ वीरबल साहनी इन्स्टीट्यूट आफ पेलियोबॉटैनी लाइब्रेरी, लखनऊ ।

५—सार्वजनिक पुस्तकालय (पब्लिक लाइब्रेरीज़)

१८१२ मद्रास लिटरेरी सोसाइटी लाइब्रेरी, नुकबवेगम, मद्रास ।

१८१८ यूनाइटेड सर्विस लाइब्रेरी, पूना ।

१८३९ त्रिवेन्द्रम पब्लिक लाइब्रेरी, ट्रिवेन्द्रम ।

१८४० सार्वजनिक वाचनालय, नासिक सिटी ।

१८४५ पीपुल्स फ्री रीडिङ्ग रूम ऐण्ड लाइब्रेरी, बम्बई ।

१८४७ रतनगिरि नागर वाचनालय, रतनगिरि ।

१८४८ जनरल लाइब्रेरी, बेलगाँव ।

१८४८ पूना सिटी जनरल लाइब्रेरी, पूना ।

१८५० करवी नागर वाचनमन्दिर, कोल्हापुर ।

१८५० ऐण्ड्रूज लाइब्रेरी ऐण्ड रीडिङ्ग रूम, सूरत ।

१८५१ बंगाल चैम्बर्स आफ कामर्स लाइब्रेरी, कलकत्ता ।

१८५२ श्रीराम वाचन मन्दिर, सावतवाडी, रतनगिरि ।

१८५४ इन्दौर जनरल लाइब्रेरी, इन्दौर ।

१८५४ उत्तरपाड़ा पब्लिक लाइब्रेरी, उत्तरपाड़ा, हुगली ।

१८५४ थोड़ो शाम राव गरुड़ लाइब्रेरी, धूलिया, प० खानदेश ।

१८५५ पब्लिक लाइब्रेरी, गया ।

१८५७ जिला वाचन मन्दिर, शोलापुर ।

१८५७ नीलगिरि लाइब्रेरी, ओटकमण्ड, नीलगिरि ।

१८५८ कोननगर पब्लिक लाइब्रेरी ऐण्ड फ्री रीडिङ्ग रूम, कोननगर, हुगली।
१८५८ रामचन्द दीपचन्द लाइब्रेरी, भड़ौच।
१८६० बाबू जी देशमुख वाचनालय, अकोला।
१८६३ राष्ट्रीय वाचनालय, अकोला।
१८६४ करवार सेन्ट्रल लाइब्रेरी करवार (उत्तर कन्नड़)।
१८६४ कवासजी धनजी भाई गजदर रीडिङ्ग रूम ऐण्ड लाइब्रेरी, गान-
देवी सूरत।
१८६४ पब्लिक लाइब्रेरी, अल्फ्रेड पार्क, इलाहाबाद।
१८६५ गवर्नमेंट लाइब्रेरी, जूनागढ़।
१८६५ लोकमान्य वाचनालय, अरवी, वर्धा।
१८६६ महाराजा पब्लिक लाइब्रेरी, जयपुर।
१८६६ सार्वजनिक वाचनालय, योला, नासिक।
१८६७ अमरावती नागर वाचनालय, अमरावती।
१८६८ लैंग लाइब्रेरी, जुबली गार्डेन, राजकोट।
१८६६ सगली नगर वाचनालय सगरी, सतारा साउथ।
१८७० अप्पाराव भोलानाथ लाइब्रेरी, अहमदाबाद।
१८७० आप्टे वाचन मदिर, इचलकरंजी, कोल्हापुर।
१८७० इरनाकुलम पब्लिक लाइब्रेरी ऐण्ड रीडिङ्ग रूप, इरनाकुलम।
१८७० कूचविहार स्टेट लाइब्रेरी, कूचविहार।
१८७० दयाराम फ्री रीडिङ्ग रूम ऐण्ड लाइब्रेरी, जामनगर।
१८७० यूनाइटेड सर्विस इस्टीट्यूशन्स आफ इंडिया लाइब्रेरी, शिमला।
१८७१ मगन भाई काशी भाई सार्वजनिक पुस्तकालय, भदरान, खैर।
१८७२ कार्माइकेल लाइब्रेरी, बनारस।
१७७२ विक्टोरिया जुबली लाइब्रेरी, अमलनेर, पूर्व खानदेश।
१८७२ विक्टोरिया डायमंड जुबली लाइब्रेरी, फलतान, उ० सितारा।
१८७३ अमरेली पब्लिक लाइब्रेरी, सकारवाद; अमरेली।
१८७३ चन्देरनगर पुस्तकागार, चन्देरनगर, हुगली।
१८७३ पब्लिक लाइब्रेरी एण्ड रीडिङ्ग रूम, त्रिचूर।
१८७३ पारीख चंदूलाल केशवलाल सार्वजनिक पुस्तकालय, पटेलाड़, खैरा।
१८७४ शिवपुर पब्लिक लाइब्रेरी शिवपुर, हवड़ा।
१८७४ सार्वजनिक पुस्तकालय, सोजिया।
१८७५ अलवर्ट इडवर्ड इस्टीट्यूट ऐण्ड लाइब्रेरी, पूना।

८७६ द्वारका सार्वजनिक पुस्तकालय, द्वारका, ओखमडल, अमलनेरी ।
८७६ मूदियली लाइब्रेरी, कलकत्ता ।
८७७ बल्लभदास बालजी पब्लिक लाइब्रेरी, जलगाँव, पूर्व खानदेश ।
८७८ पारीख बल्लभराम हेमचन्द जनरल लाइब्रेरी, विशनगोर (मेहसना) ।
८८२ जे०बी० पेटीट रीडिङ्ग रूम, लाइब्रेरी ऐण्ड पब्लिक हाल, विलिमोरा, सूरत ।
८८२ टालटला पब्लिक लाइब्रेरी, कलकत्ता ।
८८३ बाग बाजार रीडिङ्ग रूम, लाइब्रेरी, कलकत्ता ।
८८३ बिहार हितैषी लाइब्रेरी, पटना ।
८८३ हाल आफ थियासोफी, मदुराई ।
८८४ बत्रा पब्लिक लाइब्रेरी, हबड़ा ।
८८४ पजाब पब्लिक लाइब्रेरी, लाहौर ।
८८५ वेली साधारण ग्रन्थागार, वेली हबड़ा ।
८८५ सार्वजनिक वाचनालय, बीजापुर ।
१८८६ अद्यार लाइब्रेरी, अद्यार, मद्रास ।
१८८६ गोपाल राव पब्लिक लाइब्रेरी कुम्भकोनम, तजौर ।
१८८६ मोहिरी पब्लिक लाइब्रेरी, हबड़ा ।
१८८६ लायल लाइब्रेरी, ऐण्ड रीडिङ्गरूम, मेरठ ।
१८८६ हसराज लाइब्रेरी, अम्बाला ।
१८८७ देसाई नानजी गोकल जी ऐण्ड सेठ जबरशाह, हर जीवन लाइब्रेरी, पोरबन्दर ।
१८८७ श्री विक्टोरिया जुबली लाइब्रेरी, वनकनेर, काठियावाड़ ।
१८८७ हेमबरुआ लाइब्रेरी, तेजपुर ।
१८८८ सुब्रबन रीडिङ्ग क्लब, कलकत्ता ।
१८८९ भारती भवन पुस्तकालय, इलाहाबाद ।
१८८९ चैतन्य लाइब्रेरी ऐण्ड बीडन स्क्वायर लिटरेरी क्लब, कलकत्ता ।
१८९० कोनेमरा पब्लिक लाइब्रेरी, मद्रास ।
१८९० बारटन लाइब्रेरी, भावनगर ।
१८९० श्रीमत फतेहसिंह राव सार्वजनिक लाइब्रेरी, मदरा, पाटन ।
१८९१ ब्लावस्की लाज लाइब्रेरी, थियासोफिकल सोसाइटी, बम्बई ।
१८९१ बशवेरिया पब्लिक लाइब्रेरी, बशवेरिया, हुगली ।
१८९२ ए० एस० दहि लक्ष्मी लाइब्रेरी, नदियाद, खेर ।

१८९३ आर्य भाषा पुस्तकालय, नागरी० प्र० सभा० बनारस ।
१७९३ पब्लिक लाइब्रेरी, पदरा, बड़ौदा ।
१८९३ बंगीय साहित्य परिषद, कलकत्ता ।
१८९३ मराठी ग्रंथ संग्रहालय, थाना, बम्बई ।
१८९४ काटन लाइब्रेरी, कुबरी, आसाम ।
१८९५ राजाराज सीताराम दीक्षित लाइब्रेरी, सीतावलदी नागपुर ।
१८९६ चानसमा तालुका सार्वजनिक लाइब्रेरी, चानासमा ।
१८९६ मदुराई डि० वो० टुअरिङ्ग लाइब्रेरी, वेरियाकुलम्, मदुराई ।
१८९६ श्रीभवनराव पब्लिक लाइब्रेरी, आध्र-नार्थ सितारा ।
१८९७ राजेन्द्र विक्टोरिया डाइमंड जुबली पब्लिक लाइब्रेरी, पटियाला ।
१८९८ महिभाई दयाभाई सार्वजनिक पुस्तकालय धर्माज, खेडे ।
१८९८ मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय, ठाकुरद्वारा, बम्बई ।
१८९८ श्री गौतमी लाइब्रेरी, राजा मुन्दरी, ईस्ट गोदावरी ।
१८९८ श्री प्रताप सिंह पब्लिक लाइब्रेरी, श्रीनगर, कश्मीर ।
१८९८ श्री शिवजी सार्वजनिक पुस्तकालय, न्यारा, सूरत ।
१८९८ श्री सयाजी वैभव सार्वजनिक पुस्तकालय, नवसारी, सूरत ।
१८९९ श्री रामचन्द्र लाइब्रेरी, वारीवद ।
१९०० नागरी प्रचारिणी सभा लाइब्रेरी, आरा ।
१९०० पंडित मोतीलाल म्युनिस्पल पब्लिक लाइब्रेरी, अमृतसर ।
१९०० स्टेट पब्लिक लाइब्रेरी, भरतपुर ।
१९०१ म्युनिस्पल विक्टोरिया मेमोरियल पब्लिक लाइब्रेरी ऐण्ड रीडिङ्ग रूम, तेलीचैरी ।
१९०१ साधुशेश्य ओरियन्टल लाइब्रेरी, कुम्बकोनम, तंजौर ।
१९०२ माजू पब्लिक लाइब्रेरी, माजू हवड़ा ।
१९०२ पैट्रियाटिक लाइब्रेरी ऐण्ड फ्री रीडिङ्ग रूम, कलकत्ता ।
१९०३ आसाम गवर्नमेंट पब्लिक लाइब्रेरी, शिलाङ्ग, आसाम ।
१९०३ कर्जन हाल लाइब्रेरी, गौहाटी ।
१९०४ धकोरिया पब्लिक लाइब्रेरी, कलकत्ता ।
१९०४ यंगमेंस हिंदू असोसिएशन लाइब्रेरी, इलोर, वेस्ट गोदावरी ।
१९०५ एस० एस० रामचाई साहब वाचनालय, जमखंदी, बीजापुर ।
१९०५ राममोहन लाइब्रेरी ऐण्ड फ्री रीडिङ्ग रूम, कलकत्ता ।
१९०५ सर्वेण्टस आफ इण्डिया सोसाइटी लाइब्रेरी, रायपेटम ।

१६१८ पारीख पी० एच० महाजन लाइब्रेरी, कपद्वानगज, खैर।
१६१८ शान्ति इन्स्टीट्यूट लाइब्रेरी, कलकत्ता।
१६१८ श्री कृष्ण राजेन्द्र लाइब्रेरी, तामकुर।
१६१८ श्री महावीर पुस्तकालय, कलकत्ता।
१६१८ सारस्वत निकेतन, सुब्रोईमहल, वेतायेलम, गुटूर।
१६१६ म्युनिस्पिल लाइब्रेरी टाउन हाल, मुजफ्फरपुर।
१६१६ श्रीगणेश मुफ्त वाचनालय और ग्रन्थालय बुधवारपेठ, पूना।
१६२० गुजरात विद्यापीठ ग्रन्थालय (गुजरातीज लाइब्रेरी) अहमदाबाद।
१६२० तिलक लाइब्रेरी रानीगज, बरद्वान।
१६२० तिलक मेमोरियल लाइब्रेरी, मसूरी।
१६२० पब्लिक रिलेशन्स रीडिङ्ग रूम, देवगढ़, बमरा।
१६२० बड़तल्ला मुस्लिम लाइब्रेरी, बड़तल्ला, २४ परगना।
१६२० बधुली लाइब्रेरी, कलकत्ता।
१६२० रामवाला भक्त पुस्तकभाण्डागारम्, राजा मुन्दरी।
१६२० श्री रनवीर लाइब्रेरी, जम्मू (स्था० १८७६)।
१६२० श्रीब्रह्म रम्भा मालेश्वर आन्ध्रग्रन्थालय, वेजवाड़ा।
१६२० सौराष्ट्र हाई स्कूल ओल्ड ब्वायज असोसिएशन लाइब्रेरी ऐण्ड रीडिंग रूम, मदुराई।
१६२१ कैम्बे एजुकेशन सोसाइटीज सेठ जे० जे० लाइब्रेरी, कैम्बे (खेर)।
१६२१ गयाप्रसाद लाइब्रेरी ऐण्ड रीडिंग रूम, कानपुर।
१६२१ द्वारकादास लाइब्रेरी, लाहौर।
१६२१ महात्मा खुशीराम पब्लिक लाइब्रेरी ऐण्ड रीडिंग रूम, देहरादून।
१६२१ मुक्तद्वार ग्रथालय सदाशिव पेठ, पूना।
१६२१ रघुनन्दन लाइब्रेरी, इमारमठ, पुरी।
१६२१ श्री खोजवाँ आदर्श पुस्तकालय, वनारस।
१६२१ समाजपति स्मृति समिति लाइब्रेरी, कलकत्ता।
१६२२ श्री सरस्वती विद्यारण्य फ्री लाइब्रेरी, हुबली, धरवार।
१६१२ सदर मुस्लिम लाइब्रेरी, नागपुर।
१६२३ आन्ध्र ग्रन्थालय, कुर्नूल।
१६२३ गगाप्रसाद वर्मा मेमोरियल लाइब्रेरी, लखनऊ।
१६२४ सिनहा लाइब्रेरी, पटना।
१६२५ मुस्लिम पब्लिक लाइब्रेरी, काजी कोदे।

१६२५ रामकृष्ण मिशन लाइब्रेरी, पुरी।
१६२६ वाई० एम० सी० ए० लाइब्रेरी, मदुरा।
१६२६ सन्तूलाल पुस्तकालय, राँची।
१६२६ हैदरी सरकुलेटिंग लाइब्रेरी, हैदराबाद।
१६२८ महेश्वर पब्लिक लाइब्रेरी, महेन्द्र, पटना।
१६२८ सेन्ट्रल लाइब्रेरी, ग्वालियर।
१६२६ जमशेदजी नशरवानजी पेटिट रीडिंग रूम और लाइब्रेरी, दादर, बम्बई।
१६२६ म्युनिस्पिल पब्लिक लाइब्रेरी, तेनाली।
१६२६ लालजी मेमोरियल रीडिंग रूम ऐण्ड लाइब्रेरी, करुङ्गपल्ली।
१६२६ सिलवर जुबली पब्लिक लाइब्रेरी ऐण्ड रीडिंग रूम, चिकबा-गलूर।
१६३० एम० सी० हनसोती हिन्दू पुस्तकालय, हनसोन, भड़ौंच।
१६३० माहिमा गवर्नमेंट लाइब्रेरी, माहन।
१६३२ रामकृष्ण मठ लाइब्रेरी, लाँचीपुरम्।
१६३२ श्री केशरी ऐण्ड मराठा लाइब्रेरी पूना।
१६३२ श्री रामकृष्ण आश्रम लाइब्रेरी, धनतोली, नागपुर।
१६३३ म्युनिस्पिल लाइब्रेरी ऐण्ड रीडिंग रूम अमलपुर, ई० गोदावरी।
१६३४ श्री वेला दौदला हनुमथरैया ग्रन्थालयम, गाँधीनगर, वेजवाड़ा।
१६३४ सौलत पब्लिक लाइब्रेरी, रामपुर।
१६३५ म्युनिस्पिल सेन्ट्रल लाइब्रेरी, शिमला।
१६३६ बी० आर० सेन पब्लिक लाइब्रेरी, मालदा।
१६३६ रामकृष्ण सेन्ट्रल लाइब्रेरी, मद्रास।
१६३६ शारदा लाइब्रेरी, अनाक पल्ली।
१६३७ किङ्ग इम्परर जार्ज पंचम सिलवर जुबली लाइब्रेरी, बीकानेर।
१६३७ बी० के० मेमोरियल लाइब्रेरी ऐण्ड रीडिङ्ग रूम, अम्बाला।
१६३८ तिलजल पब्लिक लाइब्रेरी ऐण्ड रीडिंग रूम, कलकत्ता।
१६४१ महिला मडल लाइब्रेरी, उदयपुर।
१६४१ चिन्तामणि मेमोरियल लाइब्रेरी, सेवा समिति भवन, इलाहाबाद।
१६४३ देशबन्धु पुस्तकालय, मथुरा।

१६४३ धर्मपुरम् आधीनम् लाइब्रेरी, मयूरम् ।
१६४३ हिन्दू धर्म संस्कृति मन्दिर, धनतोली, नागपुर ।*

इन पुस्तकालयों का विस्तृत विवरण देना यहाँ सम्भव नहीं है किन्तु इनमें से दो पुस्तकालयों के विषय में यहाँ संक्षेप में जान लेना आवश्यक है:—
१. इम्पीरियल लाइब्रेरी, और २. हिन्दी संग्रहालय ।

(१) इम्पीरियल लाइब्रेरी

आजकल जिसे 'नेशनल लाइब्रेरी' या स्वतन्त्र भारत का राष्ट्रीय पुस्तकालय कहते हैं, उसकी स्थापना बृटिशकाल में हुई थी। इसका संक्षिप्त विकास इस प्रकार हुआ :—

'इङ्गलिश मैन' समाचार-पत्र के सम्पादक श्री जे० एच० स्टॉकेलर महोदय थे। उनके मन में कलकत्ता में एक पब्लिक लाइब्रेरी स्थापित करने का विचार उठा। उन्होंने १८३५ ई० में इस सम्बन्ध में एक अभिभाषण प्रसारित करवाया जिसमें इस पुस्तकालय की योजना रखी। कलकत्ता के १३६ प्रमुख सज्जनों ने उनकी इस योजना का समर्थन किया। उसके फलस्वरूप ३१ अगस्त १६३५ 'टाउनहाल' में सरजॉन पेटर ग्रॉंट की अध्यक्षता में एक पब्लिक मीटिङ्ग हुई। उसमें २४ सदस्यों की एक अस्थायी समिति बनाई गई जिसमें दो हिन्दुस्तानी सदस्य भी थे। जे० एच० स्टॉकेलर महोदय प्रथम अवैतनिक मन्त्री चुने गए और ८ मार्च १८३६ से पुस्तकालय का कार्य प्रारम्भ कर दिया गया।

पुस्तकालय का श्रीगणेश व्यक्तिगत लोगों से मिलीं पुस्तकों तथा गवर्नर जनरल की आज्ञा से फोर्ट विलियम कालेज से प्राप्त ४६७५ पुस्तकों के संग्रह को ले कर हुआ। पुस्तकालय के लिए 'टाउनहाल' में स्थान प्राप्त करने की कोशिश की गई किन्तु सफलता न मिली। प्रारम्भ में पुस्तकालय को डा० एफ० बी० स्टाण्ड्रा के मकान में रखा गया। उसके बाद १८४१ ई० में फोर्ट विलियम कालेज के एक हिस्से में स्थान मिल गया और वहाँ पर उसे व्यवस्थित किया गया।

---

* ऊपर विभिन्न प्रकार के कुछ प्रसिद्ध पुस्तकालयों के नाम विकास-क्रम के अनुसार दिये गए हैं। प्रत्येक वर्ग के इन पुस्तकालयों में अनेक बड़े पुस्तकालय ऐसे भी हैं जिनका स्थापना-काल उपलब्ध साधनों से ज्ञात नहीं हो सका। जैसे पटना की खुदाबख्श लाइब्रेरी आदि। अतः उनके नाम इसमें नहीं दिए जा सके।

सन् १८४० ई० में सरकार से कुछ जमीन मिल गई थी। उसी पर 'मेटकाफ भवन' बना और जून सन् १६४४ में उसी भवन के ऊपरी भाग में पुस्तकालय रख लिया गया।

सदस्यता के नियम

प्रारम्भ में पुस्तकालय के सदस्यों की तीन श्रेणियाँ बनाई गईं। उनमें से तीसरी श्रेणी के लोगों को पुस्तकें या पत्रिकाएँ ले जाने की अनुमति नहीं थी। १८५७ में शुल्क की दर फिर से निर्धारित की गई। १८६४ ई० में आजीवन सदस्यता का नियम चालू करके एक चौथी श्रेणी भी बनाई गई। इस श्रेणी के सदस्यों को सिर्फ पुरानी पुस्तके मिल सकती थीं। पुस्तकालय ६ बजे सवेरे से ले कर शाम तक (छुट्टियों को छोड़ कर) खुला रहता था। १८४६ ई० मे प्रवेश शुल्क हटा लिया गया तथा एक रुपया वाली श्रेणी बनाई गई। इस तरह पुस्तकालय की आमदनी में कमी हुए बिना ही उसकी उपयोगिता बढ़ गई। १८४६ के अगस्त में पाठकों की संख्या सिर्फ १३७ थी मगर दिसम्बर मे ३२३ हो गई।

म्युनिस्पल लाइब्रेरी के रूप में

१५ जनवरी १८६० को नगरपालिका के सदस्यों की एक बैठक हुई। उसमे नगरपालिका ने पुस्तकालय का सारा खर्च अपने ऊपर ले लिया। पुस्तकालय की व्यवस्था के लिए एक संयुक्त समिति बनाई गई जिसके आधे सदस्य नगरपालिका की ओर से और आधे पुस्तकालय के संरक्षकों तथा सदस्यों के द्वारा चुने गए। २० अप्रैल १८६० से पुस्तकालय की व्यवस्था नगरपालिका के हाथ मे पूरी तोर से सौंप दी गई। पुस्तकालय के लिए फिर से नियम बनाए गए और पुस्तको की एक साधारण सूची (डिक्शनरी कैटलाग के रूप में) तैयार करने का काम शुरू किया गया। १८६० ई० के जुलाई महीने में एक निःशुल्क सार्वजनिक वाचनालय खोला गया। चलते फिरते वाचनालय के साथ एक रिफ्रेंस लाइब्रेरी की भी स्थापना हुई। इन कार्यों ने पुस्तकालय बहुत ही लोकप्रिय हो गया। धीरे-धीरे सदस्यों की संख्या भी बढ़ने लगी। १८६२-६३ में सदस्यों की संख्या ३२७८० हो गई। बंगाल सरकार ने भी ५००० रुपया की ग्रांट पुस्तकालय के पुनर्गठन कार्य के लिए दी।

इम्पीरियल लाइब्रेरी

सरकारी कई विभागों की पुस्तकों को मिला कर 'इम्पीरियल लाइब्रेरी'

नामक लाइब्रेरी की स्थापना कलकत्ता के दीवानी सचिवालय में १८६१ ई० में हुई थी। लार्ड कर्जन के उद्योग से इस इम्पीरियल लाइब्रेरी और ऊपर की कलकत्ता पब्लिक लाइब्रेरी (म्युनिस्पिल लाइबरी) इन दोनों को १६०२ ई० में मिला दिया गया और इसका नाम 'इम्पीरियल लाइब्रेरी' रखा गया। इसका नए सिरे से कैटलाग तैयार किया गया। इसका उद्देश्य यह था कि यह पुस्तकालय अध्ययन का केन्द्र बन जाय और भारत के भावी इतिहासकारों के लिए आवश्यक सामग्रियों का संग्रहालय सिद्ध हो। साथ ही भारत से सम्बन्धित समस्त साहित्य यहाँ हो जिसका उपयोग लोग सरलतापूर्वक कर सकें। ३० जनवरी सन् १६०३ ई० में इस पुस्तकालय का द्वार सर्वसाधारण के लिए खोल दिया गया। लार्ड कर्जन ने इस पुस्तकालय के सम्बन्ध में अपने अभिभाषण में इस प्रकार कहा था :—

"कलकत्ते में हमें एक ऐसे पुस्तकालय का निर्माण करना चाहिए जो भारतीय साम्राज्य की राजधानी इस नगरी के गौरव के उपयुक्त हो सके।"

वृटिश म्युजियम लन्दन के सहायक लाइब्रेरियन श्री जॉन मैकफरलेन इसके लाइब्रेरियन बनाए गए। उन्होंने अपनी योग्यता, अनुभव और कार्य-पटुता के द्वारा पुस्तकालय को अप-टू-डेट और लोकोपयोगी बना दिया। इसके बाद पुस्तकों की सख्या में वृद्धि होती रही। १६०३ में पाठकों की सख्या सिर्फ २५०६३ थी परन्तु १६४० में ७१३८४ तक पहुँच गई। इस पुस्तकालय को १६०४ ई० में बोहार (दरभगा) के जमींदार सैयद सदरुद्दीन अहमद का निजी सग्रह भेंट स्वरूप प्राप्त हुआ। इस संग्रह में १५०० छपी तथा ८५० हस्तलिखित महत्त्वपूर्ण पुस्तकें थीं।

सबसे कीमती पुस्तक

विश्व की सबसे कीमती पुस्तक कुरान की एक प्रति है जिसे अफगानिस्तान के अमीर को फारस के शाह ने उपहार स्वरूप दी थी। आजकल यह भारत के राष्ट्रीय पुस्तकालय की सम्पत्ति है। इस पुस्तक में सोने के कागज हैं और ८०० बहुमूल्य रत्न इसमें जड़े हुए हैं। इन रत्नों में ६७ मोती हैं, १३२ लाल और १०६ हीरे। पुस्तक की कीमत ३०,००० पौंड (लगभग ४ लाख रुपये) आँकी गई है।

रिचे समिति

१६२६ ई० में सरकार ने इम्पीरियल लाइब्रेरी के कार्यों की जाँच और उसके विकास के लिए जे० ए० रिचे महोदय की अध्यक्षता में एक समिति



स्वर्गीय खानबहादुर के० एम० असदुल्ला

बनाई। समिति ने पुस्तकालय की व्यवस्था, स्थान और अर्थ सम्बन्धी सारी बातों की छान बीन के बाद और निम्नलिखित सिफारिशें की :—

१—इम्पीरियल लाइब्रेरी का रूप एक रिफ्रेंस लाइब्रेरी का होना चाहिए तथा इसमें हिन्दुस्तान सम्बन्धी सारी पुस्तकों का संग्रह हो।

२—इम्पीरियल लाइब्रेरी का रूप एक ऐसे केन्द्रीय पुस्तकालय का होना चाहिए कि जिससे हिन्दुस्तान के किसी भी भाग के व्यक्ति को अपने विशेष अध्ययन के लिए पुस्तकें मिल सकें।

३—पुरानी परिषद् के बदले नई परिषद् का निर्माण होना चाहिए और साधारण व्यवस्था एक छोटी समिति के हाथों सौंप दी जानी चाहिए।

४—पुस्तकालय-सञ्चालन का पूरा खर्च केन्द्रीय रेवन्यू से मिले परन्तु वाचनालय का खर्च प्रान्तीय रेवन्यू से मिले।

अभी तक पुस्तकालय मेटकाफ भवन में था। लेकिन वहाँ स्थान की कमी पड़ने के कारण बाद मे ६ इसप्लानेड के सरकारी भवन में इसे स्थानान्तरित करके रखा गया। वृटिशकाल तक यह पुस्तकालय इसी भवन में रहा और धीरे धीरे रिचे समिति की सिफारिशों के अनुसार इसकी व्यवस्था हुई।

श्री के० एम० असादुल्ला

स्व० श्री असादुल्ला साहब १६३३ ई० में इम्पीरियल लाइब्रेरी के लाइब्रेरियन नियुक्त किए गए। उन्होंने बड़ी लगन और तत्परता से इस लाइब्रेरी की सेवा की। उन्होंने १६३५ ई० में वृटिश सरकार से मंजूरी ले कर इस लाइब्रेरी में एक ट्रेनिङ्ग कोर्स भी चालू किया। उन्होंने अखिल भारतीय पुस्तकालय संघ की भी स्थापना यहीं पर की। वृटिशकाल तक वे ही इस पुस्तकालय के अध्यक्ष पद पर बने रहे।

(२) हिन्दी संग्रहालय

यह राष्ट्रभाषा हिन्दी का एक अनुशीलन केन्द्र और हिन्दी प्रेमियों का तीर्थ है। प्रयाग में हिन्दी साहित्य सम्मेलन कार्यालय के साथ ही यह संग्रहालय अपने निजी भवन में व्यवस्थित है। इसका शिलान्यास अयोध्यावासी स्व० लाला सीताराम जी ने १६ मई १६३२ ई० को किया था। ३२४५५ रु० की लागत से २½ वर्ष में इसका भवन बन कर तैयार हुआ। इस ऐतिहासिक भवन और सास्कृतिक केन्द्र को इस प्रकार का स्वरूप देने का मुख्य श्रेय राजर्षि श्री पुरुषोत्तमदास जी टंडन को है। इस संग्रहालय का उद्घाटन राष्ट्रपिता गांधी जी ने ५-१-३६ ई० को किया था। संग्रहालय का भीतरी हाल ६०×४० फीट

है। इसमें बीस स्तम्भों पर प्रकोष्ठ बनाए गए हैं। भवन की उत्तम चन्द्र-शाला कमलाकित शिखरों से सुशोभित है और मध्य भाग में वीणापाणि सरस्वती की स्फटिक प्रतिमा विराजमान है। भवन की दीवारों पर चारों ओर हिन्दी सेवियों के बड़े-बड़े चित्र लगे हुए हैं तथा सङ्गमरमर की पट्टियों पर हिन्दी कवियों की उत्तम सूक्तियाँ लिखी हुई हैं। सग्रहालय में हिन्दी में प्रकाशित सभी पुस्तकों का, हिन्दी सेवियों के चित्रों, पत्रों तथा उनसे सम्बन्धित अन्य सामग्री का भी सग्रह किया जाता है। इससे सलग्न तीन कक्ष भी हैं। १—रणवीरकक्ष, २—राजर्षिकक्ष और ३-वसुकक्ष। रणवीर कक्ष में हस्तलिखित ग्रन्थों का सग्रह किया जाता है। उत्तरप्रदेश की एक रियासत अमेठी के स्व० राजकुमार रणवीर सिंह के नाम पर इस कक्ष का नामकरण हुआ है। स्व० राजकुमार जी द्वारा सगृहीत हस्तलिखित पोथियाँ भी इसी कक्ष में हैं जो उनके अनुज राजकुमार रणजय सिंह जी के द्वारा सम्मेलन को भेंट स्वरूप दी गई हैं। राजर्षि कक्ष में सम्मेलन के प्राण राजर्षि टडन जी को व्यक्तिगत रूप से भेंट स्वरूप प्राप्त सभी प्रकार की सामग्री का सग्रह किया जाता है। इसमें अभिनन्दन पत्र, पुस्तकें, मानचित्र, चित्र तथा अन्य प्रकार की अनेक वस्तुएँ हैं। वसुकक्ष में स्व० मेजर वामनदास वसु द्वारा सगृहीत तथा उनके सुपुत्र स्व० ललितमोहन वसु द्वारा प्राप्त लगभग ५००० महत्त्वपूर्ण पुस्तकें हैं।

सग्रहालय में भारत में हिन्दी में प्रकाशित प्रायः सभी समाचार-पत्र और पत्रिकाएँ आती हैं और उनमें से महत्त्वपूर्ण पत्र-पत्रिकाओं की फाइलें भी सुरक्षित रखी जाती है। इस समय सग्रहालय में लगभग ४५,००० छपी पुस्तकें, ५००० हस्तलिखित पोथियाँ तथा साहित्यिकों के सैकड़ों पत्र एव कुछ प्राचीन सिक्के भी सगृहीत हैं।

इन दो महान् पुस्तकालयों के बाद अब हम एक ऐसे पुस्तकालय की चर्चा करेंगे जो भारत का है पर भारत में नहीं है, वह है 'इण्डिया आफिस लाइब्रेरी।'

इण्डिया आफिस लाइब्रेरी

बृटिश शासन काल में इगलैण्ड में इस महत्त्वपूर्ण लाइब्रेरी की स्थापना हुई थी। भारत में अंग्रेजी राज की जड़ जमते ही बृटिश शासकों ने इस बात को महसूस किया कि एक ऐसा समृद्ध पुस्तकालय होना चाहिए जहाँ भारत की साहित्यिक, सास्कृतिक और ऐतिहासिक ज्ञान राशि एकत्र रहे। यह

सूझ थी प्रसिद्ध इतिहासज्ञ रॉवर्ट ओरम की जो उस समय ईस्ट इण्डिया कम्पनी का इतिहास लिख रहे थे। लेकिन वैसा कुछ उस समय तो न हो सका मगर बाद में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के बुद्धिमान डाइरेक्टरों ने इस ओर ध्यान दिया। सन् १७६६ में टीपू सुलतान के पराजित होने पर उसका विशाल पुस्तकालय अंग्रेजों के हाथ लगा। उसमें से २००० चुने हुए ग्रंथों को छाँट कर उन्हीं के द्वारा एक लाइब्रेरी की शुरुआत की गई।

पब्लिक रिपोज़िटरी

उस समय 'इण्डिया आफिस लाइब्रेरी' नाम न रख कर 'पब्लिक रिपोज़ि-टरी' नाम से १८ फरवरी १८०१ ई० में इण्डिया हाउस, लेडनहॉल स्ट्रीट, लदन में इस पुस्तकालय की स्थापना हुई। उसके बाद उसमें भारत के कोने कोने से महत्त्वपूर्ण पोथियाँ तथा अन्य दुर्लभ ज्ञान सामग्री सगृहीत होती रही। सर जार्ज विल्किन्स नामक प्रकाण्ड विद्वान् इस पुस्तकालय के निर्देशक रहे। इस पुस्तकालय के अन्तर्गत एक म्युजियम की भी स्थापना की गई और उसमें भारत की महत्त्वपूर्ण कला वस्तुओं को रखा गया। १८५७ ई० के राष्ट्रीय आन्दोलन के बाद देश की अरबी और फारसी की महत्त्वपूर्ण पोथियाँ भी इसी पुस्तकालय में पहुँचा दी गई।

नया नामकरण

कम्पनी के शासन का अन्त होने पर जब इण्डिया आफिस की नींव पड़ी तो १८६७ ई० में 'पब्लिक रिपोजिटरी' का नाम 'इण्डिया आफिस लाइब्रेरी' कर दिया गया। उसे इण्डिया आफिस लीडेनहॉल स्ट्रीट से हटा कर किंग चार्ल्स स्ट्रीट स्थित 'व्हाइटहाल' में स्थानान्तरित कर दिया गया। वहीं पर वह आज भी व्यवस्थित है।

रूपरेखा

इस पुस्तकालय में इस समय ढाई लाख के लगभग पुस्तकें हैं। इनमें से ७०,००० अंग्रेजी तथा अन्य यूरोपीय भाषाओं की पुस्तकें हैं और बाकी प्राच्य भाषाओं की। इस प्रकार भारतीय ज्ञान का यह ससार में सबसे बड़ा पुस्त-कालय है। इसमें लगभग ६५ भाषाओं की पुस्तकें सगृहीत हैं।

इंडिया आफिस लाइब्रेरी के प्राच्य विभाग के पाँच उपविभाग हैं:— १. मुद्रित पुस्तकें, २. हस्तलिखित ग्रन्थ, ३. चित्रकला, ४. फोटो, और ५. अन्य वस्तु।

१. मुद्रित विभाग में १,४०,००० पुस्तकें हैं जिनमें मुख्य रूप से बँगला.

हिन्दी, सस्कृत पाली, प्राकृत, तामिल, उर्दू, मराठी, गुजराती, तेलुगु, अरबी और पजाबी आदि हैं।

२ हस्तलिखित विभाग में योरोपीय भाषाओं के भी अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है किन्तु प्राच्य भाषा की पोथियों का तो अनुपम सग्रह है। उनमे अरबी परशियन, सस्कृत, तिब्बती, खोतानी, बँगला, हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, पश्तो और उर्दू की पोथियाँ मुख्य हैं। सस्कृत, अरबी, परशियन और तिब्बती भाषाओं की पोथियों की सख्या १६,५०० है। इसी प्रकार उर्दू, मराठी, हिन्दी, गुजराती, पश्तो, उड़िया और बँगला की पोथियाँ भी पर्याप्त सख्या मे है। इनके अतिरिक्त वर्मा, स्याम, इण्डोनेशिया और टर्की आदि देशों की भाषाओ के भी कई सौ ग्रथ हैं। इस विभाग की पोथियो की कुछ वर्गीकृत सूचियो १८८७ से १९३५ के बीच छप चुकी हैं और कुछ छपने के लिए तैयार हो गई हैं।

३ चित्रकला विभाग में भारतीय जीवन से सम्बन्धित पाश्चात्य कलाकारों के लगभग १५०० सुन्दर चित्र सगृहीत हैं। साथ ही पर्शियन भाषा की पोथियों में २००० चित्र उस समय के अमर कलाकारों की स्मृति के रूप में मौजूद हैं। इस विभाग के चित्रों के सग्रह दो सीरीज़ में निकल चुके हैं।

४ फोटो विभाग में भारतीय शिल्प, वास्तुकला और पुरातत्त्व से सम्बधित लगभग २३०० निगेटिव प्लेट्स और लगभग ३०,००० विभिन्न प्रकार के चित्रों का सग्रह है।

५ फुटकर सामग्री में ग्रामोफोन रिकार्ड्स और भारतीय कढ़ाई-बुनाई के नमूने आदि सगृहीत है।

उधार के नियम

इस महान पुस्तकालय से विशिष्ट सस्थाओं तथा विश्वविद्यालयों को ही पुस्तकें उधार दी जा सकती हैं। साधारण रूप से सभी को वहीं पर बैठ कर सामग्री का उपयोग करने की सुविधा दी जाती है, घर के लिए नहीं। किसी सामग्री की प्रतिलिपि करने की सुविधा भी विशेष स्थिति में कर दी जाती है।

इस प्रकार यह पुस्तकालय इङ्गलैण्ड में बृटिश सरकार द्वारा भारत में अग्रेजी शासन के आखिरी दिनों तक समृद्ध होता रहा।

पुस्तकालय-संघों की स्थापना

पुस्तकालयों के व्यापक प्रसार के लिए वृटिश शासनकाल में अखिल भारतीय और प्रान्तीय स्तर पर पुस्तकालय-संघों की भी स्थापना हुई।

अखिल भारतीय सार्वजनिक पुस्तकालय संघ (ऑल इण्डिया पब्लिक लाइब्रेरी एसोसिएशन)

सन् १९१८ ई० में भारत में वृटिश सरकार ने लाहौर मे एक अखिल भारतीय पुस्तकालय सम्मेलन का आयोजन किया। आन्ध्र वालों ने अपना प्रतिनिधि भेजना चाहा किन्तु सरकार ने अनुमति नहीं दी। लाहौर के इस सम्मेलन ने संघ को सिर्फ सरकारी पुस्तकालयों के सघ का रूप दिया। इस पर आन्ध्र के पुस्तकालय कार्यकर्त्ताओं ने समस्त भारत की सेवाओं के लिए एक केन्द्रीय संघ की स्थापना की। श्री नरसिंह शास्त्री और श्री इयाकी वेंकट रमैया की लगन और प्रयत्नों से १९१९ ई० में इस सघ का प्रथम अधिवेशन श्री जे० एस० कुधोलकर (बड़ौदा राज्य के पुस्तकालय विभाग के संचालक) की अध्यक्षता में मद्रास में हुआ। इस प्रकार १९२० ई० में 'अखिल भारतीय सार्वजनिक पुस्तकालय सघ' की विधिवत् स्थापना हुई। इसका लक्ष्य गैर सरकारी सार्वजनिक पुस्तकालयों का संगठन करना था। इसके वार्षिक सम्मेलन के साथ-साथ 'अखिल भारतीय पुस्तक तथा पत्र-पत्रिका प्रदर्शिनी' भी हुई जिसका उद्‌घाटन मद्रास के तत्कालीन गवर्नर लार्ड विलिंगटन ने किया। इस सघ का दूसरा सम्मेलन श्री एम० आर० जयकर की अध्यक्षता में १९२३ ई० में कोकनद में हुआ। १९२४ ई० में जुलाइ से 'भारतीय पुस्तकालय पत्रिका' (इण्डियन लाइब्रेरी जनरल) का भी प्रकाशन सघ ने शुरू किया। इस सार्वजनिक पुस्तकालय सघ के अगले सम्मेलन वेलगाँव, मद्रास, कलकत्ता, लाहौर और वेजवाड़ा आदि में हुए। इनमें सर राधाकृष्णन्, सी० आर० दास, डा० प्रमथनाथ बनर्जी, सर प्रफुल्लचन्द्र राय, डा० मोतीचन्द, डा० वी० एम० राय, डा० आर्नहार्ट, और चल्लपल्ली के राजा साहब आदि महान् व्यक्तियों का सहयोग प्राप्त हुआ। इस संघ की प्रेरणा से बंगाल; मद्रास और हैदराबाद आदि में पुस्तकालय संघों की स्थापना भी हुई।

नयामोड़

लेकिन जब १९३० ई० में ऐशियाई शिक्षा सम्मेलन बनारस में हुआ तो उस सम्मेलन के साथ-साथ एक पृथक् 'पुस्तकालय-सेवा विभाग' का भी जन्म हुआ। एक प्रस्ताव द्वारा यह भी स्वीकार किया गया कि 'अखिल भारतीय सार्वजनिक पुस्तकालय संघ' प्रान्तों में चलने वाले पुस्तकालयों के कार्यों

के लिए स्वर्ण युग था। वे पुस्तकालय-आन्दोलन के भविष्यद्रष्टा थे। उन्होंने अपनी रियासत में जनता की सामाजिक शिक्षा के लिए पुस्तकालय-आन्दोलन का सूत्रपात किया। उनके निजी पथ-प्रदर्शन और देख-रेख में १९१० ई० में पुस्तकालय का एक स्वतन्त्र विभाग खोला गया। इस विभाग की योजना थी कि मनुष्य बौद्धिक जीवन तथा अधिक सम्पन्न जीवन के उच्च-स्तर को समझ सके और उस अनुभव द्वारा इस जीवन को प्राप्त करने की प्रेरणा ले सके। तदनुसार चार प्रकार के पुस्तकालयों की स्थापना की कल्पना की गई :—

१. जिला पुस्तकालय, २ तालुका पुस्तकालय, ३ नगर पुस्तकालय और ४ ग्राम पुस्तकालय।

ऐसा विचार किया गया कि जिला-नगर पुस्तकालय प्रत्येक जिले के हेड-क्वार्टर मे और तालुका पुस्तकालय प्रत्येक तालुका हेडक्वाटर में होना चाहिए। ग्राम पुस्तकालय की स्थापना जहाँ तक हो, प्रत्येक गाँव मे होनी चाहिए और खास तौर से ऐसे गाँवों में जहाँ प्राथमिक स्कूल हों। फिर ये पुस्तकालय भी एक चल पुस्तकालय के अनुविभाग द्वारा अनुपूरित हों। इन पुस्तकालयों को विभाग द्वारा ग्रांट मिलने की शर्त यह थी कि वहाँ की जनता मिल कर ग्रांट के बराबर रुपया देने को तैयार हो जाय। जिला पुस्तकालयों के लिए ज्यादा से ज्यादा ७०००) तालुका और नगर पुस्तकालयों के लिए ३०००) तथा गाँव पुस्तकालयों के लिए १००) सहायता निश्चित की गई। चल अनु-विभाग का पूर्ण व्यय सरकार देती थी।

श्री बोर्डन महोदय इस पुस्तकालय-विकास योजना के अध्यक्ष नियुक्त किए गए। इस प्रकार धीरे-धीरे इस राज्य में १९४७ तक १५०० संस्थाएँ हो गई जिनमें ४ जिला पुस्तकालय ७२ तालुका एव नगर पुस्तकालय और बाकी गाँव पुस्तकालय तथा वाचनालय। कुछ जिला और तालुका के हेड क्वाटर्स में महिलाओं तथा बच्चों के लिए अलग व्यवस्था थी। उन्हें सरकारी अनुदान मिलता था। गाँव पुस्तकालय प्रायः गाँव की पाठशालाओं में खोले गए थे। लेकिन धीरे-धीरे सन् १९३० से उनके लिए स्वतन्त्र भवन बनवाने के लिए पुस्तकालय-विभाग ने सहायता देनी शुरू की तो १९४७ ई० तक १९४ ग्राम पुस्तकालयों के अपने निजी भवन भी हो गए।

अनुवाद कार्यालय

बड़ोदा सरदार ने अच्छी पुस्तकों के प्रकाशन को बढ़ावा देने के लिए

१९१० ई० में एक 'अनुवाद कार्यालय' की भी स्थापना की। उसके द्वारा गुजराती, मराठी तथा हिन्दी की पुस्तकें प्रकाशित की जाती थीं। कुछ समय बाद इस कार्यालय ने 'ग्राम विकास माला' नामक एक 'सीरीज' प्रकाशित की।

सहायक संस्थाएँ

देहाती पुस्तकालयों को सहायता देने वाली एक सस्था 'उपभोक्ता सहकारी समिति' की स्थापना कुछ उत्साही पुस्तकालय-प्रेमियों द्वारा १९२४ ई० में हुई। यह समिति सगठित रूप से पुस्तकालय के सदस्यों को पुस्तकें, फार्म, फर्नीचर, समाचारपत्र, मासिक पत्रिकाएँ आदि वस्तुएँ भेजा करती थी। यह सेविंग बैंक का भी काम करती थी। यह समिति पुस्तकालय-विज्ञान तथा जन-रुचि की पुस्तकें भी प्रकाशित करने लगी। इसी समिति ने गुजराती में 'पुस्तकालय' नामक मासिक पत्रिका भी निकली।

राज्य पुस्तकालय-संघ

सरकार की मान्यता और ग्रॉट की सहायता से 'बड़ौदा राज्य पुस्तकालय-सघ' की भी स्थापना हुई। जिसका उद्देश्य था अपने विविध कार्यों द्वारा पुस्तकालय-सङ्गठनकर्त्ताओं में जीवन-शक्ति का सचार करना। वे सभी मिल कर सभा-सम्मेलन करते, ट्रेनिंग आदि का प्रबन्ध करते रहे।

पुस्तकालयों का निरीक्षण, ट्रेनिंग कोर्स चलाना, कान्फ्रेंस करना, 'पुस्तकालय' पत्रिका प्रकाशित करना, चुनी पुस्तकों की सूची छापना, ग्रामसाहित्य का सग्रह करना।आदि के लिए सघ को १२०० रु० की सहायता भी मिली।

चल पुस्तकालय (ट्रेवेलिङ्ग लाइब्रेरी)

बड़ौदा के चलते-फिरते पुस्तकालयों का उद्देश्य गॉववासियों में पुस्तकालय के प्रति चेतना उत्पन्न करना था जिससे वे पुस्तकालय की ओर झुकें और उससे लाभ उठावें। बड़ौदा के केन्द्रीय पुस्तकालय मे पुस्तकों की एक बड़ी राशि इकट्टी की गई और चल पुस्तकालयों द्वारा वे पुस्तकें दूर-दूर तक पहुँचाई जाती थीं।

बड़ौदा का केन्द्रीय पुस्तकालय

बड़ौदा शहर के लिए एक केन्द्रीय पुस्तकालय की स्थापना की गई। महामहिम महाराज जी ने स्वय इसके लिए २०,००० पुस्तकें दीं। इसका पूरा खर्च राज्य की ओर से दिया जाता था। इसका विकास एक नगर-पुस्तकालय के रूप में हुआ। इस पुस्तकालय ने गुजराती और मराठी के दो

श्री के० एल० नरसिंह राव, श्री के० एस० श्रीकान्तन आदि मुख्य थे जिन्होंने दक्षिण भारत के प्रत्येक भाग का भ्रमण कर इस आन्दोलन को सबल बना दिया।

लाइब्रेरी ऐक्ट

इस संघ ने लाइब्रेरी ऐक्ट बनवाने का बीड़ा उठाया। सन् १९३१ में इसका ड्राफ्ट डा० रङ्गनाथन जी ने तैयार किया। यह १९३३ ई० को श्री बशीर अहमद सईद द्वारा मद्रास विधान सभा में पेश किया गया।

पुस्तकों का प्रकाशन

इस संघ ने डा० रङ्गनाथन जी द्वारा लिखित पुस्तकालय-विज्ञान की २० पुस्तकें प्रकाशित की तथा कुछ फुटकर प्रकाशन भी किया। इन पुस्तकों द्वारा पुस्तकालय-जगत् को विशेष लाभ पहुँचा और जागृति की एक नई लहर दौड़ गई।

पुस्तकालयाध्यक्षों की ट्रेनिङ्ग

संघ ने पुस्तकालयाध्यक्षों को ट्रेनिङ्ग देने के लिए सन् १९२९ ई० में डा० रंगनाथन जी के निर्देशन में एक 'ग्रीष्मकालीन स्कूल' चलाना प्रारम्भ किया। मद्रास विश्वविद्यालय की पुस्तकालय समिति ने मद्रास यूनिवर्सिटी के पुस्तकालय में ही उस स्कूल को चलाने की बात मान ली। वहीं पर स्कूल शुरू हुआ किन्तु बाद में सन् १९३३ में मद्रास यूनिवर्सिटी ने इस ट्रेनिंङ्ग स्कूल को अपने अन्तर्गत ले लिया। सन् १९३८ ई० में मद्रास यूनिवर्सिटी ने अपनी ओर से 'डिप्लोमा कोर्स' चालू कर दिया। इस प्रकार इस डिप्लोमा कोर्स को शुरू कराने का भी श्रेय संघ को है।

अन्य कार्य

संघ ने १९३१ ई० में बालकों में पुस्तकालय की पुस्तकों का महत्त्व समझने तथा पढ़ने की रुचि को बढ़ावा देने के लिए एक योजना शुरू की। शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर ने इसको स्वीकार कर लिया। स्कूल के बालकों को विषय दे दिए जाते थे। उस पर वे पढ़ कर सुन्दर ढङ्ग से ६ महीने में निबन्ध लिख कर प्रस्तुत करते थे। संघ सबसे अच्छे निबन्धों पर पुरस्कार देता था। इस प्रकार यह योजना बहुत ही सफल रही।

संघ ने पंचायत द्वारा संचालित तथा अन्य सार्वजनिक पुस्तकालयों को सरकारी ग्राण्ट दिलाने में बहुत सहायता की। संघ के प्रतिनिधि पुस्तकालय-सम्मेलनों में बराबर भाग लेते रहे। लाहौर के पुस्तकालय-सम्मेलन में स्व०

भारत में पुस्तकालय-आन्दोलन के जनक



आचार्य डा० एम० आर० रंगनाथन
एम ए, एल टी, एफ० एल० ए०

श्री एस० सत्यमूर्ति ने तथा बनारस के अखिल भारतीय शिक्षा सम्मेलन में डा० रंगनाथन जी ने भाग लिया। १९२९ ई० में अखिल भारतीय पुस्तकालय सम्मेलन के पाँचवें अधिवेशन के अवसर पर मद्रास में संघ ने एक 'पुस्तकालय प्रदर्शनी' का भी आयोजन किया। दक्षिण भारतीय भाषाओं को प्रोत्साहित एवं विकसित करने के लिए संघ ने १९३३ ई० में एक बड़ी सभा बुलाई और तामिल प्रकाशनों की एक प्रदर्शनी भी उसी अवसर पर की गई। संघ ने अस्पतालों में रोगियों को पुस्तक-सेवा प्रदान करने की योजना का उद्घाटन १९३२ में किया और तदनुसार कार्य करना प्रारम्भ किया। इस प्रकार 'मद्रास पुस्तकालय संघ' इस काल में बहुत ही गतिशील रहा।

बम्बई प्रेसीडेन्सी

देश में बृटिश शासन के संस्थापित हो जाने के बाद उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में प्राचीन कर्नाटक को पाँच भागों में बाँट दिया गया। मैसूर और कुर्ग दो रियासतें बनी और शेष कर्नाटक को बम्बई, मद्रास और हैदराबाद में बाँट दिया गया। बम्बई में मिले भाग को हम 'बम्बई-कर्नाटक' कह सकते हैं।

इस भाग में हुबली और धारवार में १८२६ ई० में पहले सरकारी स्कूल खोले गए। ये मराठी स्कूल थे। १८३५ में सरकार ने धारवार और हुबली में कन्नड स्कूल भी खोले। १८३५ में तीसरा कन्नड स्कूल रानेबेन्नूर में खुला। इस क्षेत्र में धारावार में १८४८ में पहला हाईस्कूल खोला गया। इस प्रकार बेलगाँव, बीजापुर और कनारा आदि में भी वर्नाक्युलर स्कूल खुले और धीरे-धीरे लोग शिक्षा की ओर आकृष्ट हुए। इन स्कूलों के जारी होने के साथ ही लोगों में साक्षरता फैली तो उसको स्थायी बनाने के लिए पुस्तकालयों की भी आवश्यकता पड़ी। सन् १८८२ में धारवार जिले में ४ पुस्तकालय और ४ वाचनालय थे। ये चार पुस्तकालय धारवार, हुबली, रानेबेन्नूर और शिरहट्टी में थे। इनमें से धारवार की नेटिव सेंट्रल लाइब्रेरी सबसे पुरानी और बड़ी थी। यह १८५४ में श्री एल० एस० नागपुरकर नामक एक अध्यापक द्वारा स्थापित की गई। १८८२ में इस पुस्तकालय में ४५१ पुस्तकें थीं जिसमें से ४१४ अंग्रेजी ३० मराठी और ७ कन्नड की थीं। यह चंदे पर निर्भर था। पुस्तकें वर्गीकृत न थीं और न अच्छी तरह रखी ही गई थीं। दो अंग्रेजी अखबार इसमें आते थे और सहृदय सदस्य १ अंग्रेजी, ३ एंग्लो-वर्नाक्युलर १० वर्नाक्युलर और १ मराठी अखबार दे दिया करते थे।

आज की 'गरग सिद्दालिनगप्पा म्युनिस्पल जनरल लाइब्रेरी'—धारवार नगरपालिका द्वारा जिसका प्रबन्ध होता है, उस समय एक छोटे से स्थान में थी और इसकी दशा अच्छी न थी।

रानेवेन्नूर में १८७३ में पुस्तकालय की स्थापना हुई। जनता से १५०० रु० चन्दा लेकर उसके ब्याज से इसका प्रबन्ध किया जाता था।

लोकमान्य धर्मार्थ वाचनालय शिरहट्टी की स्थापना १८८१ में श्री नागेश राव ताम्वे ने की।

खुडगोल में श्री जी० एस० खेर तथा अन्य लोगों के द्वारा १८६३ में एक पुस्तकालय की स्थापना हुई। वेलगाँव में 'नेटिव जनरल लाइब्रेरी' की स्थापना १८४८ में तत्कालीन कलक्टर श्री जे० डी० इन्वेरेरिटी ने की। १८८२ में इसमें १०३६ पुस्तकें हो गई थीं। कनारा जिले में १८८० के लगभग चार पुस्तकालय थे, करवार, कुन्ता, हलियाल और सिरसी में। 'करवार जनरल लाइब्रेरी ऐण्ड म्युजियम' की स्थापना मई १८६४ मं हुई। उस समय उसमें केवल १,७०६ पुस्तकें थीं।

१८६० में 'कर्नाटक विद्यावर्द्धक सघ' की स्थापना हुई। इसने सास्कृतिक कार्यों के साथ ही पुस्तकालय आन्दोलन में भी सहयोग प्रदान किया। सघ ने प्रकाशित पुस्तकों को भेंट स्वरूप पुस्तकालयों को देकर उन्हें प्रोत्साहित किया। सघ ने 'वाग्भूषण' नामक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया जिसमें वाद में पुस्तकालय सम्बन्धी सूचनाऍं भी एकत्र करके प्रकाशित होती रहीं।

१६०४–५ में पुस्तकालय-आन्दोलन का विकास हुआ। श्री अलूर वेंकट राव ने इसको एक नया मोड़ दिया। एक योजना बनाई गई जिसके अनुसार कन्नड पुस्तकें कर्नाटक विद्यावर्द्धक सघ पुस्तकालय में, वीरशैवीय पुस्तकें एल० ई० सोसाइटी लाइब्रेरी में, सस्कृत पुस्तकें पाठशाला पुस्तकालय में और सास्कृतिक और राजनीतिक पुस्तकें भारत वाचनालय में सग्रह करने का निश्चय किया गया।

१६१४ में कर्नाटक हिस्टारिकल रिसर्च सोसाइटी की स्थापना धारवार में हुई। इसने अपने उद्देश्य के लिए एक पुस्तकालय की स्थापना की।

१६१५ में जब तिलक महोदय ने होमरूल आन्दोलन चलाया तो 'कर्नाटक सभा' ने राजनीतिक प्रचार के साथ-साथ पुस्तकालय सगठन का भी कार्य आरम्भ किया। कीर्तन और व्याख्यानों के द्वारा सभा ने पुस्तकालय स्थापना पर जोर दिया। १६१६ में 'कर्नाटक कालेज' की स्थापना हुई

जिसके साथ एक पुस्तकालय स्थापित किया गया। धीरे-धीरे अन्य नई शिक्षण संस्थाओं ने भी पुस्तकालय स्थापित किए।

१६२० मे धारवार में 'सन्तेस धर्मार्थ वाचनालय' की स्थापना हुई। १६४० में यह संघ के पुस्तकालय में अन्तर्भूत हो गया। उस समय उसमें ४७०० पुस्तकें हो गई थीं। १६२० मे ऑल कर्नाटक पोलिटिकल कान्फ्रेन्स का अधिवेशन धारवार मे हुआ। उसमे भी एक प्रस्ताव पुस्तकालय-विकास के सम्बन्ध में स्वीकृत किया गया किन्तु राजनीतिक परिस्थिति वश वह कार्यान्वित न हो सका। १६२४ में सी० आर० दास महोदय की अध्यक्षता में आल इण्डिया लाइब्रेरी कान्फ्रेंस बेलगाँव में हुई। उसमे भी पुस्तकालय को जन शिक्षा का सर्वोत्तम साधन घोषित किया गया। १६२७–२८ में कर्नाटक पुस्तकालयों की एक डाइरेक्टरी भी बनाई गई।

कर्नाटक पुस्तकालय-संघ

१६२६ म आल बाम्बे कर्नाटक लाइब्रेरी कान्फ्रेंस धारवार में श्री वेंकट नारायण शास्त्री की अध्यक्षता में हुई। इस अवसर पर समाचार-पत्र और पत्रिकाओं की एक प्रदर्शनी भी हुई। उस समय बम्बई-कर्नाटक में लगभग ४०० पुस्तकालय थे। उसके बाद १६३३ और १६४४ में लाइब्रेरी-कान्फ्रेंस हुई।

पुस्तकालय-विकास समिति, बम्बई

१६३६ में श्री ए० ए० ए० फैजी की अध्यक्षता में एक बाम्बे 'लाइब्रेरी डवलपमेंट कमेटी' बनाई गई। इसका उद्देश्य था बम्बई में सेंट्रल स्टेट लाइब्रेरी और अहमदाबाद, पूना और धारवार में तीन क्षेत्रीय पुस्तकालयों की स्थापना की सम्भावनाओं पर विचार करना और पूरे प्रदेश में छोटे पुस्तकालयों के विकास पर विचार करना। कमेटी ने १६४० में अपनी रिपोर्ट सरकार को दी। 'भारत छोड़ो' आन्दोलन छिड़ जाने से इस समिति की रिपोर्ट के अनुसार कुछ काम न हो सका। फिर १६४७ में कार्य प्रारम्भ किया गया।

इस काल मे बम्बई प्रेसीडेन्सी मे केन्द्रीय पुस्तकालय, रिसर्च पुस्तकालय, शिक्षण संस्थाओं के पुस्तकालय और सार्वजनिक पुस्तकालय आदि विभिन्न प्रकार के पुस्तकालयों की स्थापना हुई। बम्बई मे एक केन्द्रीय पुस्तकालय की स्थापना में हुई। सरकार स्वयं ही इन पुस्तकों की देखभाल करती थी। ये पुस्तकें व्यवस्थित रूप मे न होने के कारण सचिवालय के

तहखानो में पड़ी रहीं और अवर्गीकृत दशा में रहीं। १८६७ से १८६० के बीच सरकार ने बम्बई विश्वविद्यालय के अधिकारियों से भी इन पुस्तकों का सरक्षक बनने की बात कही किन्तु वे राजी न हुए। सरकार ने रॉयल एशियाटिक सोसाइटी बम्बई ब्राच को यह सग्रह दे दिया किन्तु स्थान की कमी बता कर उसने भी लौटा दिया। इस प्रकार वह सग्रह अव्यवस्थित पड़ा रहा।

पुस्तकालय विज्ञान की शिक्षा

बम्बई यूनिवर्सिटी में लाइब्रेरी साइस की पढ़ाई की व्यवस्था की गई। १६४४ ई० में इसी विश्वविद्यालय से श्री एन० एम० केतकर महोदय ने दीक्षा ली जो आजकल केन्द्रीय सरकार के शिक्षा विभाग पुस्तकालय के अध्यक्ष हैं। १६४४ के इसी प्रथम बैच में श्री डी० एन० मार्शल सर्व-प्रथम उत्तीर्ण हुए थे जो आजकल बम्बई यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी के अध्यक्ष हैं।

बम्बई लाइब्रेरी एसोसिएशन की स्थापना सन् १६४४ ई० में हुई और कार्यालय पीपुल्स फ्री लाइब्रेरी, धोबीतालाब, बम्बई–२ रखा गया।

बिहार प्रान्त

इस काल में बिहार में कुछ अच्छे पुस्तकालयों की स्थापना हुई। पटना में १८६१ में खुदाबख्श लाइब्रेरी स्थापित हुई जो अपने ढग की अनुपम है। इसमें विभिन्न विषयों की छपी पुस्तकों के अतिरिक्त आठ हजार हस्तलिखित ग्रथ भी हैं। साथ ही प्राचीन चित्रों का भी उत्तम सग्रह है। स्वर्गीय डा० सच्चिदानन्द सिनहा ने १६२४ ई० में अपनी पत्नी श्रीमती राधिकारानी सिनहा की स्मृति में 'सिनहा लाइब्रेरी' स्थापित की। इस पुस्तकालय की उत्तरोत्तर प्रगति होती रही। पटना यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, बिहार ऐण्ड उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी लाइब्रेरी (१६१५), बिहार हितैषी पुस्तकालय (१८८३) महेश्वर पब्लिक लाइब्रेरी (१६२८), डिपार्टमेंट आफ इडस्ट्रीज, बिहार लाइब्रेरी (१६२०), बिहार लेजिस्लेटिव लाइब्रेरी (१६१२), मन्नूलाल सार्वजनिक पुस्तकालय (१६१४) और भगवान पुस्तकालय भागलपुर (१६१३) प्रभृति अच्छे पुस्तकालयों की स्थापना इस काल में हुई। राज्य सरकार की ओर से पुस्तकालयों को अनुदान भी दिया जाता रहा। १६४० में प्रान्त में लगभग २०० पुस्तकालय थे। १६४०–४१ के बजट में पुस्तकालयों को दस हजार रुपया अनुदान दिया गया और यह क्रम ब्रिटिश काल के अन्त तक चलता रहा।

पुस्तकालय संघ

१३ फरवरी १९३७ ई० को मन्नूलाल पुस्तकालय में विहार के पुस्तकालय प्रेमियों का प्रथम सम्मेलन कुमार मुनीन्द्रनाथ देव की अध्यक्षता में हुआ। उसी सम्मेलन में विहार राज्य में पुस्तकालय आन्दोलन को सवल बनाने के लिए 'विहार पुस्तकालय-सघ' की स्थापना की गई। सितम्बर १९३७ मे पुस्तकालय-सघ का दूसरा अधिवेशन पटना सिटी के विहार हितैपी पुस्तकालय में डा० अनुग्रह नारायण सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इसके बाद सघ की कार्यविधि ढीली पड़ गई। लेकिन १९४३ में फिर कुछ उत्साही व्यक्तियों ने सघ का तीसरा अधिवेशन श्री भुवनेश्वर प्रसाद जी की अध्यक्षता में पटना मे किया। इसके बाद चौथा अधिवेशन दरभंगा की लक्ष्मीश्वर पब्लिक लाइब्रेरी में श्री चन्डेश्वर प्रसाद नारायण सिंह की अध्यक्षता मे हुआ। इन अधिवेशनों में लोग मिलते-जुलते रहे और अपनी प्रगति की बातें सोचते रहे लेकिन सगठित रूप में कोई ठोस कार्य की योजना न बन पाई।

संयुक्त-प्रान्त आगरा व अवध

बृटिश काल में पुस्तकालय विकास के दृष्टिकोण से संयुक्त-प्रान्त काफी प्रगतिशील रहा। इस प्रदेश में चार विश्वविद्यालय स्थापित किये गए जिनसे सलग्न समृद्ध पुस्तकालय भी। काशी विश्वविद्यालय का गायकवाड़ पुस्तकालय, लखनऊ की अमीरुद्दौला पब्लिक लाइब्रेरी, नागरीप्रचारिणी-सभा काशी का आर्य भाषा पुस्तकालय, प्रयाग का हिन्दी संग्रहालय और पब्लिक लाइब्रेरी, इसी काल में स्थापित हुए। अखिल भारतीय सेवा समिति, प्रयाग के प्रबंध मंत्री श्री एस० आर० भारतीय महोदय के प्रयास से स्वर्गीय सी० वाई० चिन्तामणि की स्मृति में 'चिन्तामणि मेमोरियल लाइब्रेरी' की भी स्थापना १९४१ मे प्रयाग में हुई जिसमें समाज-सेवा सम्बन्धी ऐसी विशिष्ट पुस्तकों का सग्रह किया गया जो अन्य पुस्तकालयों में नहीं मिल सकतीं।

शिक्षा-प्रसार विभाग

शिक्षा विभाग सयुक्त प्रदेश द्वारा इस प्रान्त मे १९२६-२७ में ४२ जिलों को पाँच-पाँच सौ रुपये की ग्रांट नए ९६ पुस्तकालय खोलने के लिए दी गई। सन् १९२७-२८ में उसी क्रम से ७६ और पुस्तकालय खोले गये। पाँच ट्रेवेलिंग और सरकुलेटिंग लाइब्रेरी भी खोली गई। इस प्रकार प्रान्तीय सरकार पुस्तकालय को प्रोत्साहन देती रही, यद्यपि सरकारी आर्थिक सहायता

बहुत हल्की थी। उसके बाद इस प्रान्त में ग्रामवासी प्रौढ़ों में शिक्षा का प्रचार करने के लिए सरकार की ओर से एक 'शिक्षा प्रसार विभाग' की स्थापना सन् १९३८ में हुई। यह विभाग शिक्षा विभाग के अन्तर्गत रखा गया। इस विभाग की ओर से प्रौढ़ोपयोगी विभिन्न विषय की पुस्तकें खरीद कर उन्हें बक्सों में रख कर गाँव के कुछ निश्चित केन्द्रों तक पहुँचाने की व्यवस्था की गयी। इस प्रकार के १३१७ पुस्तकालय इस काल में स्थापित हुए।

संघ और डाइरेक्टरी

इस प्रान्त में पुस्तकालय संघ की स्थापना स्वर्गीय डा० वली मुहम्मद के प्रयत्नों से हुई जो इस प्रान्त में सब से अधिक रुचि रखने वाले व्यक्ति थे। वे लखनऊ यूनिवर्सिटी में फिजिक्स के प्रोफेसर तथा अमीरउद्दौला पब्लिक लाइब्रेरी के आनरेरी लाइब्रेरियन भी थे। उनकी अध्यक्षता में अखिल भारतीय पुस्तकालय-संघ का तीसरा अधिवेशन भी दिल्ली में हुआ था। डा० वली मुहम्मद साहब ने १९३७ ई० में इस प्रान्त के पुस्तकालयों की एक डाइरेक्टरी भी तैयार की। उसमें ५१९ पुस्तकालयों का विस्तृत विवरण है जिनमें अमन सभा से ले कर यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी तक के पुस्तकालय हैं किन्तु पाँच हजार से अधिक पुस्तकों वाले पुस्तकालयों की संख्या इस प्रान्त में १९३६ तक केवल ४८ थी।

डा० माताप्रसाद गुप्त, रीडर इलाहाबाद यूनिवर्सिटी (हिन्दी विभाग) ने 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' नामक पुस्तक का सम्पादन किया जिसमें उन्होंने १९४२ तक छपी हिन्दी की सब पुस्तकों की विषय-क्रम से सूची प्रस्तुत की। यह पुस्तक हिन्दुस्तानी एकेडेमी से प्रकाशित हुई।

पुस्तकालय-विज्ञान की शिक्षा

इस प्रान्त में पुस्तकालय विज्ञान की शिक्षा की व्यवस्था सन् १९४१ ई० में बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी की ओर से यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी (गायकवाड़ लाइब्रेरी) में की गई। इसमें न्यूनतम योग्यता ग्रेजुएट रखी गयी। धीरे-धीरे अनेक प्रान्तों से विद्यार्थी इस प्रशिक्षण में आने लगे।

पंजाब प्रांत

पञ्जाब विश्वविद्यालय ने पुस्तकालय आन्दोलन को विकसित करने में अप्रत्यक्ष रूप से बहुत सहायता की। लाहौर स्थित पजाब विश्वविद्यालय ही पहला विश्वविद्यालय था जिसने १९१५ ई० में अपने पुस्तकालय को वैज्ञानिक ढग से सगठित करने के लिए एक अमेरिकन लाइब्रेरियन श्री ए०डी० डिकि-

न्सन को बुलाया। मि० डिकिन्सन ने पुस्तकालय को संगठित किया और उसमें 'लाइब्रेरी साइंस' की ट्रेनिङ्ग की भी व्यवस्था की। उन्होंने 'पञ्जाब लाइब्रेरी प्राइमर' नामक एक पुस्तक भी लिखी। इस तरह उन्होंने पंजाब में पुस्तकालय आन्दोलन शुरू किया। पजाब यूनिवर्सिटी के इस ट्रेनिङ्ग कोर्स में स्व० के० एम० असदुल्ला सब से पहले भारतीय विद्यार्थी थे जिन्होंने लाइब्रेरी साइन्स में डिप्लोमा प्राप्त किया। उन दिनों इस प्रकार की ट्रेनिंग लेना बहुत घृणित समझा जाता था। श्री असदुल्ला के साथी ही उन्हें 'पढ़ा लिखा दफ्तरी' कहा करते थे। किन्तु धीरे-धीरे यही श्री असदुल्ला 'इम्पीरियल लाइब्रेरी' के लाइब्रेरियन हो गए। कलकत्ता यूनिवर्सिटी के वर्त्तमान लाइब्रेरियन श्री प्रमीलचन्द्र बसु ने भी यहीं से १९३३–३४ के सेशन मे डिप्लोमा लिया। 'पजाब पुस्तकालय-सघ' की स्थापना १९२९ मे हुई। इसके निम्नलिखित उद्देश्य थे :—

१—पुस्तकालयों की स्थापना और उसके विकास को आगे बढ़ाना।

२—पुस्तकालयों की उपयोगिता में वृद्धि करना।

३—जनता की शिक्षा में पुस्तकालयों को महत्त्वपूर्ण बनाना।

'इडियन लाइब्रेरियन' नामक पत्रिका का प्रकाशन भी १९४५ ई० मे लाहौर से शुरू हुआ। इस सघ की ओर से 'माडर्न लाइब्रेरियन' नामक त्रैमासिक पत्रिका भी निकाली गई।

बङ्गाल प्रांत

इस प्रान्त में पुस्तकालय संघ की स्थापना १९३१ मे की गई। उसके बाद राज्य में पुस्तकालय आन्दोलन को गतिशील बनाने का काम शुरू किया गया। कलकत्ता यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी (सेंट्रल) में इसका रजिस्टर्ड कार्यालय रखा गया। इसकी ओर से 'बंगाल लाइब्रेरी एसोसिएशन बुलेटिन' का प्रकाशन १९३८ ई० से शुरू हुआ। इस संघ ने १९३७ में ग्रीष्मकालीन त्रैमासिक कोर्स पुस्तकालयाध्यक्षों की ट्रेनिङ्ग के लिए चलाया जिसमें पर्याप्त सफलता मिली। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों में बगाल पुस्तकालय आन्दोलन बड़े जोरों पर था। इस आन्दोलन के नेताओं ने कलकत्ता विश्वविद्यालय तथा बगाल सरकार से ट्रेनिंग के प्रबन्ध के लिए काफी कोशिश की। अन्त मे स्व० कुमार मुनीन्द्र देव राय महाशय ने सन् १९३४ ई० में अपने सहयोगियों के सहारे 'हुगली जिला पुस्तकालय सघ' के तत्त्वावधान में एक ट्रेनिंग कैम्प' की स्थापना की। वह बड़िया मे स्थित 'प्रशिक्षण शिविर' के प्रशन-

नीय कार्यों को देख कर पुस्तकालय आन्दोलन के नेताओं का साहस चौगुना हो गया।

खान बहादुर के० एम० असदुल्ला ने भी भारत में पुस्तकालयाध्यक्षों को शिक्षित करने की ओर बहुत रुचि ली। उन्होंने बड़ी लगन के साथ इस ओर काम किया। वे इम्पीरियल लाइब्रेरी में लाइब्रेरियन थे उन्होंने भारत सरकार के पास दौड़ धूप की और आखिर में १९३५ ई० में इम्पीरियल लाइब्रेरी में 'डिप्लोमा कोर्स' की पढ़ाई सरकार ने स्वीकार कर ली। १९४५ ई० में कलकत्ता विश्वविद्यालय मे भी जब लाइब्रेरी साइन्स की ट्रेनिंग की व्यवस्था हो गई तो उस ट्रेनिंग का भी इसी में विलयन हो गया।

आंध्र-प्रांत

बड़ौदा के पुस्तकालय आन्दोलन ने आन्ध्र निवासियों में अच्छी जागृति पैदा की। उसके फलस्वरूप १९३१ ई० में 'आन्ध्र पुस्तकालय सघ' की स्थापना हुई। सघ ने लोगों के सहयोग से कई एक पुस्तकालय स्थापित किए। पदपालम् के केन्द्रीय पुस्तकालय ने १९३५ ई० में मोटरों द्वारा पुस्तकालय सेवा के स्थान पर नावों द्वारा इस काम को पूरा किया। इस प्रकार की पुस्तक-सेवा तीस गाँवों तक फैली। इसकी ओर से 'आंध्र ग्रन्थालयम्' और 'तेलगू' इंगलिश त्रैमासिक पत्रिका १९३९ से शुरू हुई। इस सघ ने आंध्र प्रदेश के लाइब्रेरियों की दो बार सन् १९१४ और १९१५ में डाइरेक्टरी प्रकाशित की तथा पुस्तकालय-विज्ञान की कई अन्य पुस्तकें भी प्रकाशित कीं। १९३५ ई० में आन्ध्र विश्वविद्यालय में लाइब्रेरी साइन्स में डिप्लोमा कोर्स की पढाई शुरू हुई।

ट्रावनकोर-कोचीन

ट्रावनकोर-कोचीन राज्य में भी पुस्तकालय आन्दोलन की प्रगति बीसवीं शताब्दी में हुई। ट्रावनकोर सरकार ने १९३६ के अपने बजट में सबसे पहले पुस्तकालयों के लिए २,१३,००० रुपये का व्यय स्वीकार किया। कोचीन सरकार ने भी इस ओर ध्यान दिया। सन् १९४२ में इन दोनों राज्यों के निवासियों ने मिल कर 'केरल पुस्तकालय सघ' की स्थापना की।

अन्य प्रांतों में पुस्तकालय आन्दोलन

उड़ीसा प्रान्त में सन् १९४४ ई० में 'उत्कल लाइब्रेरी एसोसिएशन' की स्थापना हुई और इसका कार्यालय नयागढ़, पुरी, उड़ीसा में रखा गया। यह सघ भी अपने वार्षिक अधिवेशन तथा कुछ प्रचार कार्य करता रहा।

आसाम प्रान्त में 'ऑल आसाम लाइब्रेरी एसोसिएशन' की स्थापना १६३८ ई० में हुई। इनका कार्यालय पोलोफील्ड पोस्ट तेजपुर (आसाम) में रखा गया। इसकी ओर से भी अधिवेशन आदि होते रहे।

पूना में 'पुस्तकालय-सघ' की स्थापना १६४५ ई० में हुई।

दिल्ली में पुस्तकालय-संघ की नींव १६४६ ई० मे पड़ी जिसकी ओर से एक 'ट्रेनिंग क्लास' की भी व्यवस्था की गई। दिल्ली विश्वविद्यालय में १६४७ ई० में पुस्तकालय-विज्ञान का एक स्वतन्त्र विभाग खोला गया जहाँ पर 'डिप्लोमा कोर्स' के अतिरिक्त 'मास्टर डिग्री' का एक कोर्स चालू किया गया। इसके अतिरिक्त पुस्तकालय-विज्ञान में रिसर्च करने के लिए भी व्यवस्था की गई। यह कार्य पुस्तकालय-विज्ञान के प्रसिद्ध भारतीय आचार्य डा० एस० आर० रगनाथन की अध्यक्षता मे प्रारम्भ किया गया।

इस प्रकार बृटिश शासन काल मे अनेक प्रान्तों और देशी राज्यों मे पुस्तकालय संघ स्थापित हुए। पुस्तकालय-विज्ञान को भी कुछ महत्त्व मिला और उसे एक स्वतन्त्र विषय के रूप मे माना जाने लगा।

भारत में प्रौढ़ शिक्षा-सम्बन्धी पुस्तकालय

पुस्तकालय प्रौढ़ों के लिए स्व-शिक्षा के एक महत्त्वपूर्ण साधन हैं। इस बात को सबसे पहले बड़ौदा नरेश स्व० महाराज गायकवाड़ महोदय ने अपने राज्य मे अनुभव किया और भ्रमणशील पुस्तकालयों की योजना चालू की। इसकी आलोचना सभी राज्यों ने की किन्तु अनुसरण किसी ने नहीं किया। कुछ वर्ष बाद आन्ध्र लाइब्रेरी एसोसिएशन की स्थापना हुई तो उसने इसके लिए कुछ आन्दोलन किया। उसने १६१६ में एक कान्फ्रेंस बुला कर 'आल इंडिया लाइब्रेरी असोसिएशन' की स्थापना भी की। महाराष्ट्र और बगाल ने भी उसका अनुसरण करके लाइब्रेरी एसोसिएशन स्थापित किए।

प्रौढ़ों के लिए स्थापित पुस्तकालयों के विकास का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :—

पंजाब में १६३० में १६६० पुस्तकालय थे। जो ग्रामीण क्षेत्रों मे मिडिल स्कूलों के साथ थे। नार्मल स्कूल के अध्यापकों को कहा गया कि वे उनके द्वारा प्रौढ़ों को साक्षर होने की ओर आकृष्ट करें। सी० पी० और बरार ने भी १६२८ मे ऐसे पुस्तकालयों की स्थापना की। १६३५ में ट्रावनकोर ने बड़ौदा के ढङ्ग पर नगर और गाँव पुस्तकालयों को चलाना चाहा। वहाँ शिक्षा विभाग ने पुस्तकालय और वाचनालय को प्राइमरी स्कूलों में स्थापित करने

लिए ८० पुस्तकालयों की व्यवस्था के निमित्त ३०,००० रु० प्रति वर्ष ग्राण्ट देने का बजट में स्थान दिया।

प्राइवेट पुस्तकालयों को भी सरकार ने फर्नीचर और बिल्डिङ्ग तथा अन्य व्यवस्था के लिए ग्राण्ट दी। ट्रिवेंडम पब्लिक लाइब्रेरी ने केन्द्रीय हेड-क्वार्टर के रूप में ग्राम पुस्तकालयों के लिए काम किया जो सम्बन्धित ग्राम पुस्तकालयों में से प्रत्येक को एक-एक बार २० पुस्तकें भेजा करती थी।

१९३९ में बम्बई सरकार ने एक 'लाइब्रेरी डब्लपमेंट कमेटी' बनाई। उसके सुझाव पर पेठ लाइब्रेरी, तालुका लाइब्रेरी, क्षेत्रीय लाइब्रेरी और केन्द्रीय लाइब्रेरी की एक योजना स्वीकार की गई। इसके अन्तर्गत रजिस्टर्ड गाँव के पुस्तकालयों को ३० से ५० रु० ग्राण्ट दी गई। १९४१-४२ में ७५० गाँव पुस्तकालय खोले गए और २२,००० रु० की ग्राण्ट दी गई।

उत्तर-प्रदेश

उत्तर-प्रदेश सरकार ने प्रथम साक्षरता दिवस पर गाँव के क्षेत्रों में ७६८ पुस्तकालय और ३६०० वाचनालय खोले। इन पुस्तकालयों की संख्या १९४०-४१ में १००० हो गई। और ४० महिला लाइब्रेरी भी खोली गई। १९४०-४१ में १५० रु० मूल्य की पुस्तकें और कुछ मासिक पत्रिकाएँ और अखबार दिये गए। १९३९-४० में ५०० प्राइवेट लाइब्रेरियों को (गाँव के क्षेत्र में) और १९४०-४१ और १९४१-४२ में ऐसे ५०६ पुस्तकालयों को ग्राण्ट दी गई। १९४१-४२ में २५० पुस्तकालयों को (रूरल डब्लपमेंट डिपार्टमेंट के) पत्र-पत्रिकाएँ भी दी गई। फिर ५० वीमेंस वेलफेयर सेंटर को (रूरल डप० डि० फैजाबाद) ५०० रु० की ग्राण्ट पत्र-पत्रिकाओं की सप्लाई के साथ-साथ दी गई।

१३१७ गाँव पुस्तकालय और ३६०० वाचनालय जो पहले स्थापित हो चुके थे अपना काम करते रहे। इन्होंने १६ से १७ लाख तक पुस्तके एक साल में पढ़ने को दीं। जब सरकार ने दैनिक अखबार भेजना बन्द कर दिया तो पाठकों की संख्या जो १९४१-४२ में ५३८२९४३ से बढ कर ७५८२१७५ हो गई थी १९४३-४४ में ३७७८८८९ ही रही अर्थात् घट गई। १९४३-४४ में सहायता प्राप्त पुस्तकालय २५९ रहे जब कि १९४१-४२ में केवल २५० थे। उन्होंने २,३२,९८५ पुस्तकें साल भर में पढ़ने के लिए दीं। १९४२-४३ में सरकार ने इलाहाबाद में एक सेंट्रल लेंडिङ्ग लाइब्रेरी स्थापित की।

बिहार

बिहार सरकार के गाँव पुस्तकालयों का विवरण इस प्रकार है :—

वर्ष	पुस्तकालयों की संख्या जो खुले	कुल पुस्तकालयों की संख्या	इन पुस्तकालयों में कुल पुस्तकें जो सरकुलेट की गईं
१९४२–४३	१०००	८०००	६,८३,३९२
१९४३–४४	७५०	८७५०	४,६७,४४१
१९४४–४५	७१०	९२६०	..
१९४५–४६		.	...
१९४६–४७	..		६,०३,८९६

बम्बई

नई स्कीम के अन्तर्गत १९४५–४६ में—बिना किसी वर्गभेद, या धर्मभेद के सभी के लिये पुस्तकालय हो—इस शर्त पर बम्बई सरकार ने ग्राण्ट देना निश्चय किया। ४००० रु० तक की ग्राण्ट दी जा सकती थी यदि उतना ही जनता से भी प्राप्त हो। कुछ स्थानों पर महिलाओं के लिए पुस्तकालयों की अलग व्यवस्था की गई। ये पुस्तकालय ८ से १२ घंटे तक खुले रहते थे। १० रु० पत्र-पत्रिकाओं और ३० से ५० रु० तक इक्विपमेंट के लिए सहायता भी दी जाने लगी।

वर्ष	नए पुस्तकालय	कुल पुस्तकालय	व्यय
१९४२–४३	५८०	१२००	१८८४०
४३–४४	३००	१५००	१८८००
४४–४५	२००	१७००	२००००
४५–४६	२६०	१९६०	२७०००
४६–४७	४३०	२३९०	३४०००

लाइब्रेरी इक्विपमेंट

पुस्तकालयों को वैज्ञानिक ढंग से व्यवस्थित करने के लिए पुस्तकालय-विज्ञान की शिक्षा ही काफी नहीं होती। इसके साथ ही दूसरी आवश्यकता यह थी कि वैज्ञानिक ढंग का 'लाइब्रेरी इक्विपमेंट्स' भी अपने देश में सरलतापूर्वक सस्ते दामों पर मिल सकें। बड़ौदा स्टेट में तो 'पुस्तकालय सहकारी समिति' द्वारा यह कार्य बहुत कुछ सरल हो गया था। लाहौर में मेहरा ऐंड कम्पनी सन् १९२५ ई० में स्थापित हुई जिसने कैटलाग कार्ड्स, डेट स्लिप, एक्सेशन रजिस्टर, बुक लेबुल, कार्ड कैबिनेट आदि सभी प्रकार के सामान पुस्तकालयों को सप्लाई करके अच्छी सेवा की। मद्रास और कलकत्ता में भी दो एक कम्पनियाँ इस प्रकार के कार्य के लिये स्थापित हुईं।

१९४५	नागभूषणम्, पी०	: फर्स्ट लिस्ट आफ तेलगू बुक्स सुटेबुल फार लाइब्रेरीज।
,,	नागराव राज, के०	: बिब्लियोग्रैफी आफ इंडियन कल्चर ऐण्ड इट्स प्रेपरेशन।
,,	,, ,,	: लाइब्रेरी मूवमेंट इन इण्डिया।
,,	पारखी, आर० एस०	: डेसिमल ऐण्ड कोलन क्लैसीफिकेशन, ए समरी ऐण्ड ए कम्परीजन।
,,	रंगनाथन, एस० आर०	: एलीमेंट्स आफ लाइब्रेरी क्लैसीफिकेशन।
,,	,, ,,	: डिक्शनरी कैटलागकोड द्वि०सं० १९५१
,,	पारखी, आर० एस०	: रिफ्रेंस सर्विस इन लाइब्रेरीज़।
१९४६	रंगनाथन, एस० आर०	क्लैसीफिकेशन आफ मराठी लिटरेचर,
,,	,, ,,	: मराठी ललित वाङ्मया चा वर्गीकरण (अनु: बी०पी० कोघालकर)।
,,	,, ,,	: नेशनल लाइब्रेरी सिस्टम (ए प्लान फार इण्डिया)।
,,	,, ,,	: सजेशन्स फार द आर्गनाइजेशन आफ लाइब्रेरीज़ इन इण्डिया।

इसके अतिरिक्त बड़ौदा से 'लाइब्रेरी-साइंस' की सबसे पहिली एक पत्रिका 'लाइब्रेरी मिस्लेनी' प्रकाशित हुई। 'ऑल इण्डिया लाइब्रेरी एसोसिएशन' की ओर से उसके कान्फ्रेंस के विवरण, तथा आंध्र देश लाइब्रेरी एसोसिएशन की ओर उसके कान्फ्रेंस के विवरण भी प्रकाशित हुए। जो अन्य पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई उनका जिक्र प्रान्तीय आन्दोलन के साथ-साथ कर दिया गया है।

वृटिशकालीन पुस्तकालयों पर एक दृष्टि

इस अध्याय में वृटिशकालीन पुस्तकालयों की जो संक्षिप्त चर्चा की गई, उससे साफ जाहिर है कि वृटिशकाल में बहुत वर्षों तक तो कम्पनी शिक्षा के दायित्व से बचती रही। जब दायित्व उसके ऊपर लादा भी गया तो शिक्षा की नीति निर्धारण में भी काफी समय लगा। उसके बाद एक नए ढंग की शिक्षा-प्रणाली और साथ ही नयी शासन-प्रणाली के ढाँचे में ढल कर भारतीय शिक्षा और पुस्तकालयों का रूप ही बदल गया। इतना तो मानना ही पड़ता है कि अंग्रेज शासकों की हार्दिक इच्छा कभी भी भारतीय जनता को

पूर्ण रूप से शिक्षित बनाने की नहीं रही। अतः जो कुछ भी इस काल मे किया गया उसमें शासन चलाने का हित पहले था और जनता का हित बाद में। यही कारण है कि इतने लम्बे अर्से तक शासन करने पर भी भारतीय जनता १० प्रतिशत से अधिक साक्षर नहीं हो सकी यद्यपि कुछ बडे-बडे विद्वान्, कुशल शासक और धुरधर राजनीतिज्ञ भी इस काल में पैदा हुए।

फिर भी अंग्रेजी शासन भारत के लिए एक अर्थ में बहुत ही सहायक सिद्ध हुआ। देश में पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान का प्रचार होने से, तथा रेल, तार, डाक, प्रेस, रेडियो तथा अन्यान्य साधनों के उपलब्ध होने से भारतीय शिक्षा और पुस्तकालयों के विकास के लिए एक ऐसी पृष्ठभूमि बन गई जिस पर अपने ढंग से जो कुछ चाहे किया जा सकता है। चूँकि बृटिशकाल मे जनता के बौद्धिक स्तर को ऊँचा उठाने की बात साफ दिल से शासक वर्ग सोचने नहीं थे, और कमर कस कर इस पर तैयार नहीं होते थे, इसलिए पुस्तकालयों का जनता से सम्पर्क नहीं हो पाया। कहने का तात्पर्य यह है कि बृटिशकाल में पुस्तकालयों को मौलिक शिक्षा (फण्डामेण्टल एजुकेशन) एवं सामाजिक शिक्षा का आधार नहीं माना गया और न तो उन्हें इसके लिए प्रयोग में ही लाया गया। अतः पुस्तकालयों को उभड़ने का मौका नहीं मिल सका।

अध्याय ६

स्वाधीनकालीन पुस्तकालय

नव-निर्माण की ओर

बृटिशकाल में भारत की शिक्षा का प्रतिशत बहुत नीचा था। खेद है कि इतने लम्बे काल तक शासन करने पर भी अंग्रेजों की दूषित नीति से हमारा अनेक प्रकर से पतन हो गया। अतः देश का चतुर्मुखी विकास करके इसको एक सुसंस्कृत और सम्पन्न राष्ट्र बनाने के लिए देश के नेतागण जुट गए। भारत का संविधान बनाया गया और उसे २६ जनवरी १९५० ई० को लागू किया गया।

भारत में स्थित बृटिशकाल की सभी छोटी बड़ी रियासतों को भारत के प्रान्तों में मिला कर निम्नलिखित तीन श्रेणी के राज्य बनाए गए :—

(क) उत्तर-प्रदेश, बम्बई, आन्ध्र, बिहार, मध्य-प्रदेश, पूर्वी पंजाब, उड़ीसा, आसाम, मद्रास, प० बङ्गाल।

(ख) मध्य-भारत, राजस्थान, सौराष्ट्र, हैदराबाद, पेप्सू, ट्रावनकोर, कोचीन, मैसूर, जम्मू एवं काश्मीर।

(ग) हिमाचल प्रदेश, विन्ध्यप्रदेश, दिल्ली, अजमेर, त्रिपुरा, भोपाल, कुर्ग, कच्छ, मणिपुर बिलासपुर, तथा अण्डमान, नीकोबार।

इन प्रदेशों में 'क' श्रेणी का शासन राज्यपाल, 'ख' श्रेणी का राज्य-प्रमुख और 'ग' श्रेणी का उपराज्यपाल तथा डिप्टी-कमिश्नरों के द्वारा होने लगा।*

---

* राज्य पुनर्गठन होने पर अब १४ प्रदेश और ६ केन्द्र शासित क्षेत्र हो गए हैं।

प्रदेश —बम्बई, मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, आन्ध्र, जम्मू-काश्मीर, आसाम, मैसूर, बिहार, उड़ीसा, मद्रास, प० बंगाल, पंजाब और केरल।

क्षेत्र .—हिमाचल प्रदेश, मणिपुर, त्रिपुरा, अण्डमान नीकोबार, दिल्ली, और लकादिव आदि।

इस प्रकार देशी राज्यों का विलयन करके भारत संघ की एक ईकाई के रूप में प्रदेश बनाए गए और इसके साथ ही साथ अनेक जटिल समस्याओं का सामना किया गया जिनमें शरणार्थियों की पुनर्वास व्यवस्था, खाद्यान्न का प्रबन्ध तथा ऐसी अनेक बातें थीं। जमींदारी-उन्मूलन करके भूमि सुधार को हाथ में लिया गया। लेकिन इन सबके ऊपर एक सबसे बड़ी समस्या थी—जनता की अशिक्षा। जनता में अशिक्षा के शिकार प्रौढ़ों का एक बहुत बड़ा वर्ग है। बच्चे जिन्हें बचपन में पढ़ने की सुविधा प्राप्त नहीं होती है, वे बड़े हो कर निरक्षर रह जाते हैं। ऐसे प्रौढ़ स्वतन्त्र देश के लिए कलङ्क रूप हो जाते हैं। फिर बच्चों की शिक्षा में भी शिक्षा का नये ढङ्ग से पुनर्गठन और उसकी व्यवस्था। अतः इन सबकी ओर ध्यान दिया गया।

शिक्षा-दीक्षा का विचार करते समय पुस्तकालयों की उपयोगिता को भी स्वीकार किया गया। राष्ट्रीय सरकार ने यह अनुभव किया कि पुस्तकालय केवल शिक्षण संस्थाओं के लिए ही जरूरी नहीं है बल्कि वे सामाजिक शिक्षा के भी प्रबल साधन हैं। इन पुस्तकालयों के द्वारा नव-प्रौढ़ों की साक्षरता को स्थायी बनाया जा सकता है और जनता का बौद्धिक विकास सरलतापूर्वक किया जा सकता है। अतः पुस्तकालयों से जनता का सम्पर्क स्थापित करने के लिए बड़े पैमाने पर नए सिरे से काम शुरू किया गया।

शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया गया और उसमें काफी उन्नति की गई। चूँकि अब भी पुस्तकालय शिक्षाविभाग के अन्तर्गत ही हैं, अतः शिक्षा की प्रगति का संक्षिप्त परिचय जान लेना आवश्यक है।

प्राथमिक शिक्षा

वृटिशकाल में हमारे देश में ६ से ११ साल के बच्चों में से मुश्किल से ३० प्रतिशत बच्चे स्कूल में पढ़ा करते थे। किन्तु स्वाधीनता के बाद इस ओर ध्यान दिया गया। और 'क' श्रेणी के राज्यों में १९४८ ई० तक १,४०, १२१ प्राथमिक स्कूल हो गए और उनमें पढ़ने वालों की संख्या १,६०,००, ६६४ तक पहुँच गयी। १९५२ के मार्च तक स्कूलों की संख्या १,७७.२८५ हो गई। इस प्रकार स्वाधीनता के बाद ३७, ००० नए स्कूल खोले गए। पूरे भारत में १९५२ में २,२१,०८२ स्कूल थे और उनमें पढ़ने वालों की संख्या १,६२,६६, ८४० थी। शिक्षा में सुधार करने के लिए बुनियादी शिक्षा के सिद्धान्त अपनाए गये। १९५३ तक ५९८ नगरों और

२१,२६० गाँवों में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा फैला दी गई। इस प्रकार भारत की साक्षरता में भी लगभग ६% (१६४१ की अपेक्षा) वृद्धि हुई।

माध्यमिक शिक्षा

प्राथमिक शिक्षा के प्रसार से माध्यमिक शिक्षा में भी वृद्धि हुई। १६४७ के बाद नए स्कूलों में वृद्धि होनी शुरू हुई और १६५३ के अंत तक मिडिल स्कूलों की सख्या १५,२३२ और हाई स्कूलों की सख्या ८६३३ हो गई। माध्यमिक शिक्षा को अधिकतर लोग रोजी कमाने का साधन मानते हैं। इसलिए १६५२ में समूचे देश में सामान्य रूप से माध्यमिक शिक्षा पर सोच-विचार के लिए एक कमीशन की नियुक्ति हुई। उसने रिपोर्ट में पाठ्य-क्रम और परीक्षाओं में भारी हेर-फेर के सुझाव रखे। इसी बीच देश के कई भागों में नए पाठ्य-क्रम बनाये गए और उद्योग धधे, सगीत, दस्तकारी, खेती, जूनियर केडेटकोर तथा समाज स्वय सेवक जैसे काम शुरू करके पाठ्य-क्रम को सुधारा गया। अब उत्तरबुनियादी स्कूलों के रूप में धीरे-धीरे एक नई तरह के माध्यमिक स्कूलों का विकास हो रहा है। १६५३ में केन्द्रीय शिक्षा मत्रालय की ओर से हेडमास्टरों का एक अखिल भारतीय सेमिनार भी शिमला में हुआ। यह प्रयोग बहुत ही सफल रहा।

विश्वविद्यालय और ऊँची शिक्षा की संस्थाएँ

देश के विभाजन के बाद भारत में केवल २१ विश्वविद्यालय थे। १६५४ तक उनकी सख्या ३० हो गई। इसी प्रकार सामान्य शिक्षा देने वाले कालेजों की सख्या भी १६५३ तक ६०६ और व्यावसायिक शिक्षा देनेवाले कालेजों की संख्या ३१४ हो गई। सन् १६४८ में 'क' श्रेणीके राज्यों में कुल २७,००० ग्रेजुएट थे। १६५३ में यह सख्या बढ़ कर ५२,००० हो गई। शिक्षा पर व्यय भी बढ़ा। १६५३ में सारे भारत पर उच्च शिक्षा पर १५ करोड़ २२ लाख खर्च हुआ जिसमें व्यावसायिक शिक्षा पर ५ करोड़ ६४ लाख खर्च हुए। सन् १६४८ ई० में डा० राधाकृष्णन् की अध्यक्षता में एक 'इडियन यूनिवर्सिटी एजुकेशन कमीशन' बनाया गया। उसने १६४६ में अपनी रिपोर्ट पेश की। इस रिपोर्ट में यूनिवर्सिटी के सभी पहलुओं पर विचार करके महत्त्व-पूर्ण सिफारिशें की गई हैं। कमीशन की रिपोर्ट सामान्य रूप से भारत सरकार ने मान ली और उसकी सिफारिशों पर अमल कराने के लिए एक समिति बनाई। कमीशन की राय है कि विश्वविद्यालयों को व्यवसाय, वाणिज्य, उद्योग आदि सभी क्षेत्रों में नेता पैदा करना चाहिए न कि केवल राज नीति

और शासन के क्षेत्र में ही। विज्ञान, टेक्नोलोजी और खेती की शिक्षा का भी विश्वविद्यालयों में विकास होना चाहिए। उसकी सिफारिश के अनुसार एक 'यूनिवर्सिटी ग्राण्ट कमेटी' की भी स्थापना की गई जिसको अधिक काम और अधिकार दिए गए हैं।

टेकनिकल और व्यावसायिक शिक्षा

इस शिक्षा की ओर भी सरकार ने काफी ध्यान दिया। १९४७ में इस क्षेत्र के ग्रेजुएटों की संख्या केवल २,७०० थी जब कि १९५३ में ६,००० हो गई। केन्द्रीय सरकार ने विज्ञान-खोज परिषद् (काउंसिल आफ साइंटिफिक ऐण्ड इण्डस्ट्रियल रिसर्च) स्थापित की। ऑल इंडिया काउंसिल फार टेकनिकल एजुकेशन ने ११ राष्ट्रीय प्रयोगशालाएँ और केन्द्रीय खोज-संस्थाएँ खोलीं। एक इन्टर यूनिवर्सिटी बोर्ड भी बनाया गया। विदेश छात्रवृत्ति समिति की सिफारिशों के अनुसार अनेक वजीफे दिये गए। सरकार ने अनुदान दे कर अनेक संस्थाओं को प्रोत्साहन दिया। अध्यापकों और अध्यापकों की ट्रेनिङ्ग की भी व्यवस्था की गई। 'सेंट्रल इन्स्टीट्यूट आफ एजुकेशन' नामक संस्था की स्थापना १९४७ में हुई जो अब काफी प्रगति कर चुकी है।

सामाजिक शिक्षा

सेंट्रल ऐडवाइजरी बोर्ड आफ एजुकेशन ने १९४८ की 'सक्सेना रिपोर्ट' के अनुसार भी कार्य शुरू किया। सभी तरह के सामाजिक शिक्षा के कामों को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा मन्त्रालय ने अनेक संस्थाओं को अनुदान दिए। इस सामाजिक शिक्षा की दिशा में केन्द्रीय सरकार की अनेक योजनाएँ चल रही हैं।

शिक्षा में अवसरों का समीकरण

शिक्षा और आर्थिक अवसरों में समानता लाने के लिए, पब्लिक स्कूलों के वजीफे, मानवधर्मी विद्याओं, विज्ञान और टेकनोलोजी की खोज के लिए वजीफे, विदेशी वजीफे, अनुसूचित जातियों और कबीलों आदि के लिए वजीफों की योजना की गई।

सांस्कृतिक और अन्तर्राष्ट्रीय कार्य

सरकार ने 'इण्डियन कौंसिल आफ कल्चरल रिलेशन' की स्थापना की जिसके द्वारा भारत का अन्य देशों से सांस्कृतिक सम्बन्ध घनिष्ट हो रहा है। आजादी के बाद अनेक वजीफे, फेलोशिप और ट्रेवेल ग्राण्ट दी गई हैं।

इस बीच साहित्य संगीत और कला को प्रोत्साहन देने के लिए साहित्य

अकादमी, सगीत और नाट्य अकादमी तथा भारत कला समिति की सस्थापना की गई है जिनके द्वारा उत्तम कार्य हो रहा है ।

'नेशनल आर्काइव्ज आफ् इण्डिया' का नाम बदल कर 'राष्ट्रीय पुरालेख सग्रहालय' कर दिया गया। नेशनल लाइब्रेरी का भी पर्याप्त विस्तार किया गया और भारतीय राष्ट्रीय कमीशन बना कर अनेक आयोजन किए जिनसे देश को काफी बौद्धिक और सास्कृतिक लाभ पहुँचा है ।

इस प्रकार स्वाधीन भारत शिक्षा के क्षेत्र में बड़ी तेजी से विकास के पथ पर बढ़ रहा है ।

नवीन पुस्तकालयों का विकास

स्वाधीन भारत में विभिन्न प्रकार के पुस्तकालयों का बृटिशकाल के ढङ्ग पर निम्नलिखित रूप से विकास हुआ :—

१—(क) नेशनल लाइब्रेरी (इम्पीरियल लाइब्रेरी) ।*

१—(ख) मंत्रालयों से सम्बद्ध पुस्तकालय

१९४७ मिनिस्ट्री आफ वर्क, प्रोडक्शन ऐण्ड सप्लाई लाइब्रेरी, नई दिल्ली ।

१९४९ मिनिस्ट्री आफ इक्टर्स्नल अफेयर्स लाइब्रेरी, नई दिल्ली ।

१—(ग) स्वतन्त्र कार्यालयों से संलग्न पुस्तकालय

१९५० प्लानिङ्ग कमीशन लाइब्रेरी, राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली ।

,, सुप्रीमकोर्ट लाइब्रेरी, पार्लियामेंट हाउस, नई दिल्ली ।

१—(घ) मातहत और सम्बद्ध कार्यालयों से संलग्न पुस्तकालय ।

मिनिस्ट्री आफ कामर्स ऐण्ड इण्डस्ट्री

१९४७ ट्रेड मार्क रजिस्ट्री आफिस लाइब्रेरी, बगलौर ।

मिनिस्ट्री आफ कम्युनिकेशन्स

१९४८ सिविल एवेशन ट्रेनिङ्ग सेंटर लाइब्रेरी, बमरौली, इलाहाबाद ।

मिनिस्ट्री आफ फाइनेन्स

१९४८ लाइब्रेरी आफ द आफिस आफ द डिप्टी ए०जी० उड़ीसा (पुरी)

---

* इसका विवरण 'केन्द्रीय सरकार के कार्य' शीर्षक के अन्तर्गत पृष्ठ १०५ पर देखिए ।

मिनिस्ट्री आफ होम अफेयर्स

१९४८ सेक्रेट्रियट ट्रेनिङ्ग स्कूल लाइब्रेरी, नई दिल्ली।

मिनिस्ट्री आफ इन्फारमेशन एण्ड ब्राडकास्टिङ्ग

१९४७ ऑल इण्डिया रेडियो लाइब्रेरी, कटक।
१९४८ ऑल इण्डिया रेडियो लाइब्रेरी, नागपुर।
१९४८ ,, ,, , बड़ौदा।
१९४९ ,, ,, ,, इलाहाबाद।
१९४९ फिल्म डिवीजन लाइब्रेरी, बम्बई।
१९४९ ऑल इंडिया रेडियो लाइब्रेरी, अहमदाबाद।

मिनिस्ट्री आफ डिफेंस

१९४८ डिफेन्स साइंस आर्गनाइजेशन लाइब्रेरी, नई दिल्ली।

२—(क) प्रांतीय सरकारों के पुस्तकालय

१९४७ पंजाब हाईकोर्ट लाइब्रेरी, शिमला।
१९४७ लाइब्रेरी आफ द आफिस आफ द डाइरेक्टर वेटेरीनैरी सर्विसेज, पंजाब।
१९४७ फारेस्ट सेंट्रल लाइब्रेरी, शिमला।
१९४८ ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट लाइब्रेरी, शिमला।
१९४८ पंजाब गवर्नमेंट रिकार्ड्स आफिस रिफ्रेंस लाइब्रेरी, शिमला।
१९४८ रिहैबिटेशन डिपार्टमेंट लाइब्रेरी, जालन्धर।
१९४९ गवर्नमेंट सेंट्रल प्राविंशियल लाइब्रेरी, इलाहाबाद।
१९५० पंजाब स्टेट लाइब्रेरी, चण्डीगढ़।
१९५० लाइब्रेरी आफ द प्राविंशियल एडवाइजरी बोर्ड आफ एजुकेशन, शिमला।

३—यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी

१९४७ पंजाब यूनिवर्सिटी, लाइब्रेरी, शिमला।
१९४८ गौहाटी यूनिवर्सिटी, लाइब्रेरी, गौहाटी, आसाम।
१९४८ रुड़की यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, रुड़की।
१९४९ जम्मू ऐण्ड काश्मीर यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, श्रीनगर।
१९४९ राजपूताना यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, जयपुर।

१९४९ गुजरात यूनिवर्सिटी, लाइब्रेरी, अहमदाबाद ।
१९५० कर्नाटक यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, धारवार ।
१९५० पूना यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, पूना ।
१९५० बड़ौदा यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, बड़ौदा ।

४—रिसर्च लाइब्रेरीज़

१९४७ इण्डियन स्टैण्डर्ड इन्स्टीट्यूसन्स लाइब्रेरी, दिल्ली ।
१९४७ नेशनल केमिकल लेबोरेटरी आफ इण्डिया लाइब्रेरी, पूना ।
१९४८ फिजिकल रिसर्च लेबोरेटरीज लाइब्रेरी, नवरंगपुर, अहमदाबाद ।
१९४९ नेशनल फिजिकल लेबोरेटरी आफ इण्डिया लाइब्रेरी, नई दिल्ली ।
१९४९ मुन्शी सरस्वती मन्दिर ग्रन्थागार, भारतीय विद्याभवन, बम्बई ।
१९४९ सेंट्रल कालेज आफ कर्नाटक म्युजिक लाइब्रेरी, अद्याग, मद्रास ।
१९४९ सेंट्रल ड्रग रिसर्च इस्टीट्यूट लाइब्रेरी, लखनऊ ।
१९४९ सेंट्रल फुड टेकनोलोजिकल रिसर्च इन्स्टीट्यूट लाइब्रेरी, मैसूर ।
१९५० फ्यूअल रिसर्च इन्स्टीट्यूट लाइब्रेरी, जीलगोरा, मानभूम ।
१९५० सेंट्रल ग्लास ऐण्ड सेरेमिक रिसर्च इन्स्टीट्यूट लाइब्रेरी, यादवपुर, कलकत्ता ।
१९५० सेंट्रल रोड रिसर्च इन्स्टीट्यूट लाइब्रेरी, दिल्ली ।

५—पब्लिक लाइब्रेरी

१९४७ महाराष्ट्र ग्रन्थालय, पूना ।
१९४८ कर्नाटक ग्रन्थालय, कर्नाटक रीज० लाइब्रेरी, धारवार ।
१९४८ नागर वाचनालय, सतारा सिटी ।
१९४९ ब्रजमोहन चन्दोला पब्लिक लाइब्रेरी, पौरी, गढ़वाल ।
१९४९ श्री सरस्वती वाचनालय, शाहापुर, बेलग्राम ।
१९५१ दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी (पाइलट प्रोजेक्ट) दिल्ली ।

इनके अतिरिक्त भारत की ६२२ नगर पालिकाओं के द्वारा भी कितने ही सहायता प्राप्त सार्वजनिक पुस्तकालय हैं जिनका नाम स्थानाभाव के कारण नहीं दिया सकता ।

केन्द्रीय सरकार के कार्य

शिक्षा विभाग के अन्तर्गत ही पुस्तकालयों का विकास भी रखा गया । अतः केन्द्रीय शिक्षा विभाग ने पूरे देश में पुस्तकालयों की जो बात सोची उसकी रूपरेखा इस प्रकार है :—

१—वृटिश काल में स्थापित इम्पीरियल लाइब्रेरी को 'नेशनल लाइब्रेरी' का रूप दिया जाय और उसका विकास किया जाय।

२—नेशनल बिब्लियोग्रैफी के निर्माण की ओर ध्यान दिया जाय।

३—प्रदेशों में 'सेन्ट्रल स्टेट लाइब्रेरी' और जिलों में 'जिला पुस्तकालय' स्थापित किए जायँ।

४—राजधानी दिल्ली में एक केन्द्रीय पुस्तकालय हो जिसके द्वारा सब पुस्तकालय एक सूत्र में गुँथे रहें।

इन सभी पुस्तकालयों के कार्यक्षेत्र अलग-अलग हों। जिला पुस्तकालय के द्वारा ग्राम पुस्तकालयों को संगठित किया जाय तथा जिले में जनता के बौद्धिक विकास के लिए सम्भावित प्रयत्न किए जायँ।

इन उद्देश्यों की पूर्त्ति के लिए देश की चतुर्मुखी विकास वाली पञ्चवर्षीय योजनाओं में एक अच्छी रकम स्वीकार की गई जिसका पूरा विवरण आगे दिया गया है।

५—लाइब्रेरी ऐडवाइजरी कमेटी का निर्माण।

किन्तु इसी बीच निम्नलिखित कार्य भी किए गए :—

(क) विभाजन के बाद पाकिस्तान से जो पुस्तकालयाध्यक्ष भारत में आये उनको कार्य मे लगाना भी पुनर्वास मंत्रालय के सामने एक समस्या थी। ऐसे सभी पुस्तकालयाध्यक्षों को यत्र-तत्र पुस्तकालयों में नियुक्त किया गया।

(ख) केन्द्रीय सरकार ने २० मई सन् १९५४ से प्रत्येक प्रकाशन की एक-एक प्रति 'राष्ट्रीय पुस्तकालय' कलकत्ता, सेन्ट्रल पब्लिक लाइब्रेरी बम्बई, और कोनेमरा लाइब्रेरी मद्रास को तथा नये स्थापित होने वाले 'राष्ट्रीय केन्द्रीय पुस्तकालय, दिल्ली को भेजना अनिवार्य कर दिया। १० सितम्बर १९५५ को कोनेमरा लाइब्रेरी को तथा ४ नवम्बर १९५५ को सेंट्रल पब्लिक लाइब्रेरी, बम्बई को राष्ट्रीय पुस्तकालय घोषित कर दिया। इसका उद्देश्य यह है कि समस्त भारतीय साहित्य चारों भागों में सगृहीत और सुरक्षित रहे तथा देश की जनता उनसे लाभ उठावे।

(ग) सन् १९५२ ई० मे नवगठित प्रान्तों के अनुसार भारत के सभी प्रकार के पुस्तकालयों की एक डाइरेक्टरी केन्द्रीय शिक्षा विभाग ने 'लाइब्रेरीज इन इंडिया' नाम से प्रकाशित की। इसमें प्रसिद्ध ४१६६ पुस्तकालयों का विवरण दिया गया।

(घ) यूनेस्को के सहयोग से दिल्ली में सार्वजनिक पुस्तकालय-योजना

के मुख्य केन्द्र के रूप में 'दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी' की स्थापना की गई।

(ङ) अक्टूबर १६५५ में दिल्ली में 'सार्वजनिक पुस्तकालय के विकास' पर यनेस्को की एक अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी का आयोजन किया गया।

(च) 'नेशनल बुक-ट्रस्ट' स्थापित करके जनता तक सस्ता तथा स्वस्थ साहित्य पहुँचाने की योजना बनाई गई। ट्रेनिंग के लिए सेन्ट्रल इस्टीट्यूट की स्थापना की गई।

(छ) इडिया आफिस लाइब्रेरी को प्राप्त करने की चेष्टा की गई।

(ज) हस्तलिखित ग्रथों की खोज और उनके प्रकाशन के कार्य को प्रोत्साहन दिया गया।

(झ) पुस्तकालय-सघों को प्रान्तीय सरकारों ने पुस्तकालय-आन्दोलन के लिए प्रोत्साहित किया।

(ञ) पुस्तकालयाध्यक्षों को विदेश भेज कर प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई।

इसी प्रकार के अनेक कार्य किये गए जिनसे भारतीय पुस्तकालय जगत की उन्नति हुई।

१—नेशनल लाइब्रेरी

वृटिशकालीन इम्पीरियल लाइब्रेरी 'जवा कुसुम हाउस' में व्यवस्थित थी। रिचे कमेटी ने इसको कापी राइट लाइब्रेरी बनाने की सिफारिश की थी। अग्रेजों के शासनकाल में खान बहादुर असादुल्ला उस पुस्तकालय के अध्यक्ष रहे। नवम्बर १६४७ में उनके अवकाश ग्रहण करने पर मिस्टर बी० एस० केशवन् (क्युरेटर आफ लाइब्रेरीज इन द सेंट्रल ब्यूरो आफ एजुकेशन-दिल्ली) को इस लाइब्रेरी का अध्य बनाया गया। ८ सितम्बर १६४८ ई० को इस पुस्तकालय को 'वेल्वेडियर भवन' में लाया गया और इसका नाम बदल कर 'नेशनल लाइब्रेरी' रखा गया। इसकी 'सिलवर जुबली' १ फरवरी १६५३ ई० को मनाई गई। बगाल के गवर्नर श्री० हीरेन्द्रकुमार मुकर्जी ने सभापति का आसन ग्रहण किया और केन्द्रीय शिक्षा मत्री मौलाना आजाद ने इसका उद्घाटन कर के इसका द्वार जनता के उपयोग के लिए खोल दिया।

विकास

नेशनल लाइब्रेरी होने के कारण भारत सरकार के शिक्षा विभाग ने इसके विकास की ओर विशेष रूप से ध्यान दिया। 'डिलीवरी आफ बुक्स

सन् १८६६/१९५४ के द्वारा प्रत्येक प्रकाशन की एक प्रति इसको भेजना सभी प्रकाशकों के लिए कानूनन अनिवार्य कर दिया गया। रोलिङ्ग स्टैक की व्यवस्था की गई। नए ढंग से साज-सज्जा करके प्रशिक्षित कर्मचारियों की नियुक्ति की गई। धीरे-धीरे इस पुस्तकालय में लगभग ११ लाख पुस्तकें और ३०० तक कर्मचारी हो गए। इसके अध्ययन कक्ष में २०० पाठकों को पढने का प्रबंध किया गया। पत्र-पत्रिका कक्ष में अंग्रेजी तथा भारतीय भाषाओं की पत्रिकाओं के प्रदर्शन की व्यवस्था की गई जिनकी संख्या धीरे-धीरे ३६० तक पहुँच गई। संस्कृत और बंगला भाषाओं की सगृहीत पुस्तकों की सूची छापी गई। बगाल लाइब्रेरी एसोसिएशन की सर्टिफिकेट कोर्स की कक्षाएँ लगाने की सुविधा दी गई। पुस्तकालय को श्री आशुतोष मुकर्जी का ८५,००० ग्रथों का सग्रह भी प्राप्त हुआ। उसकी व्यवस्था की गई।

१९५६–५७ में पुस्तकालय के लिए ७,७५,००० रु० नियत किया गया। उसके पूर्व वर्ष १९५५–५६ में ६,७६,००० रु० था। १९५७–५८ के लिए १२,६६,७०० रु० की व्यवस्था की गई है।

१९५६–५७ में प्रेस तथा पुस्तक रजिस्ट्री अधिनियम १८६७ और पुस्तक वितरण (सार्वजनिक पुस्तकालय) अधिनियम १९५४ के अधीन पुस्तकालय ने ४६४४० पुस्तकें प्राप्त कीं। इस अवधि में कुल १६०३६ जिल्दों की वृद्धि की गई। १५६५५ पत्रिकाएँ प्राप्त हुईं जिनमें से ५६७ खरीद कर प्राप्त की गईं।

ग्रन्थ-सूची का प्रकाशन

लेखकों के अनुसार बनाई गई यूरोपीय भाषा की एक सूची जिल्द ७ (क्यू० से आर० तक) जिसमें ५२३० नाम हैं, जुलाई १९५६ में प्रकाशित की गई। जिल्द २ (एच० से क्यू० तक) संस्कृत, पालि, प्राकृत की पुस्तकों की सूची सितम्बर १९५६ में प्रकाशित हुई। इस वर्ष पत्रिकाओं, समाचार-पत्रों और गजटों की सूची प्रकाशित की गई।

जनता के अनुरोध पर सन्दर्भ तथा सन्दर्भ ग्रन्थ सूची प्रभाग और ग्रन्थ सूची प्रभाग ने अनेक महत्त्वपूर्ण विषयों की छोटी-छोटी पुस्तिकाएँ प्रकाशित की जिनमें विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रकाशकों की सूची, महिलाओं और बालकों के लिए हिन्दी पुस्तकों की सूची, बंगाली, हिन्दी, कन्नड, मलयालम.

मराठी, उड़िया, तामिल और तेलगू की पत्रिकाओं की सूची, चरक सन्दर्भ सूची, रवीन्द्रनाथ ठाकुर के गीतों की अनुक्रमणिका आदि हैं।

पुस्तकालय में जनता को सुविधा देने के लिए अनेक कार्य किए गए। पुस्तकों के लिए स्थान की व्यवस्था की गई। अखिल भारतीय पुस्तकालय सघ के ग्यारहवें अधिवेशन के अवसर पर एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

भारत सरकार ने द्वितीय पचवर्षीय योजना (१९५७-५८) में नेशनल लाइब्रेरी को १० लाख रुपया निम्नलिखित कार्य के लिए दिया है:—

१—मुख्य भवन के एक भाग को पूरा निर्माण कराने के लिए।

२—सम्पूर्ण कार्ड कैटलाग का पुनर्गठन करने के लिए।

३—इण्डोलोजी की बिब्लियोग्रैफी को पूरा करने के लिए।

४—निजी दफ्तरीखाना (होम बाइंडिंग) स्थापित करने के लिए।

५—बाल-पुस्तकालय के लिए।

इनके अतिरिक्त १९५७—५८ के लिए निम्नलिखित कार्यक्रम है—

(क) फोटो प्रतिलिपिकरण उपस्कर की प्रस्थापना।

(ख) निर्वात धूमायन वेश्म की प्रस्थापना।

(ग) पुस्तक लिफ्ट की प्रस्थापना।

(घ) पुस्तकालय के परिसर के घास के मैदानों को ताजा करना।

(ङ) तृतीय और चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों के लिए रियायती मकानों का निर्माण।

(च) अध्येता छात्रावास का निर्माण।

२—इंडियन नेशनल बिब्लियोग्रेफी

डिलीवरी आफ बुक्स कानून के पास हो जाने पर देश के प्रत्येक प्रकाशक और सरकारी एजेंसियों को कानूनी तौर पर एक प्रति नेशनल लाइब्रेरी को और ३ प्रतियाँ अन्य तीन पुस्तकालयों को भेजना अनिवार्य हो गया। इसके पहले से भी नेशनल लाइब्रेरी को पुस्तकें प्राप्त होती रही हैं और अब तो यह सख्या बराबर बढ़ती जा रही हैं।

केन्द्रीय सरकार ने कुछ स्टाफ दे कर फिलहाल नेशनल लाइब्रेरी में ही भारत की नेशनल बिब्लियोग्रैफी बनाने का काम प्रारभ करा दिया। इस

कार्य की नीति निर्धारण करने तथा अन्य बातों पर विचार करने के लिए निम्नलिखित व्यक्तियों की एक समिति बनाई गई :—

श्री बी० एस० केशवन् (अध्यक्ष) ।

सदस्य श्री डी० एन० मार्शल, श्री एस० एस० सेठ, श्री एन० एम० केतकर, श्री वाई० एम० मुले, श्री सी० आर० बनर्जी, श्री ए० के० ओहदेदार, और श्री विनयेन्द्र सेन गुप्त ।

उक्त कमेटी ने अपनी बैठकें करके कार्य की पद्धति निश्चित की और तदनुसार अब तक कुछ भाषाओं का कार्य समाप्त हो चुका है । अब तैयार सामग्री का छापने की व्यवस्था की जायगी ।

साहित्य एकेडमी बिब्लियोग्रैफी

साहित्य एकेडेमी ने देश में १६०१ से १६५३ के बीच प्रकाशित साहित्य की सेलेक्ट बिब्लियोग्रैफी बनाने की एक योजना बनाई । यह कार्य तदनुसार निम्नलिखित व्यक्तियों की रेख-रेख में प्रारम्भ हुआ :—

१—आसामी	: डा० विरञ्चिकुमार बरुआ, गौहाटी यूनिवर्सिटी, आसाम ।
२—बंगाली	: डा० सुकुमार सेन कलकत्ता ।
३—गुजराती	: श्री उमाशंकर जोशी, अहमदाबाद ।
४—हिन्दी	: डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी, बनारस ।
५—कन्नड़	: प्रो० ए० एन० मूर्थीराव, बंगलौर ।
६—काश्मीरी	: मिर्जा गुलामहुसेन बेग, काश्मीर ।
७—मलयालम	: श्री एस० कुंजन पिल्लई, ट्रिवेण्ड्रम ।
८—मराठी	: श्री शंकर गनेश दाते, पूना ।
६—पंजाबी	: डा० गंगासिंह, पटियाला ।
१०—तामिल	: प्रो० एल० पी० कुमार रामनाथन चेट्टियर, अन्नामलाई नगर ।
११—तेलगु	: डा० जी० बी० सीतापती, मद्रास ।
१२—उर्दू	: प्रो० ए० ए० सरूर, लखनऊ ।

संस्कृत, इंगलिश और उड़िया की बिब्लियोग्रैफी नेशनल लाइब्रेरी के स्टाफ द्वारा बनाई जा रही है। श्री बी० एस० केशवन एकेडेमी के भी टेक-निकल सलाहकार हैं।

३—प्रथम पंचवर्षीय योजना में पुस्तकालयों की प्रगति

इस योजना में ६ स्टेट सेंट्रल लाइब्रेरी, ६६ जिला लाइब्रेरी और ५२ अस्तित्त्व रखनेवाली जिला लाइब्रेरीज के विकास के लिए ८८, ६१, ४६६ रु० स्वीकृत किया गया। इस योजना के अनुसार जो प्रगति हुई, उसका विवरण इस प्रकार है .—

६ स्टेट सेंट्रल लाइब्रेरियों की स्थापना की गई। ये आसाम, पश्चिम बंगाल, मध्यप्रदेश, पंजाब, पेप्सू, राजस्थान, सौराष्ट्र, भूपाल और विंध्यप्रदेश में खोली गई। इस प्रकार की तीन लाइब्रेरियों को बम्बई में केन्द्रीय सहायता दी जा रही हैं।

जिला पुस्तकालय

इस योजना के अन्तर्गत निम्नलिखित राज्यों में कुल मिला कर ६६ जिला में पुस्तकालय खोले गए :—

आसाम	७	सौराष्ट्र	५
प० बंगाल	१७	भोपाल	२
बिहार	१२	विंध्यप्रदेश	७
मध्यप्रदेश	२२		
राजस्थान	२४	कुल	६६

इस प्रकार के ५२ पुस्तकालयों को केन्द्रीय सरकार सहायता दे रही है। जिसमें मद्रास में १४ बम्बई में २२ बिहार में ५ और आंध्र में ११ हैं।

१६५५-५६ के बीच स्टेट लाइब्रेरीज़ के लिए १४,१३,३२८ रु०ग्राण्ट के रूप मे स्वीकार किया गया। इनसे कलकत्ता, चंडीगढ़ और पटियाला में स्टेट लाइब्रेरी स्थापित की गई।

इसी प्रकार १६५५-५६ में ४,०८,४२४ रु० जिला पुस्तकालय के लिए स्वीकृत किया गया। इनसे मध्यप्रदेश में दो जिला पुस्तकालय जबलपुर और मरथवादा में स्थापित किये गए।

पश्चिम बंगाल में ७ स्टेट लाइब्रेरी, बरद्वान, मिदनापुर, चौबीस परगना (में, दो) बनकुरा, मालदा और कूचबिहार में स्थापित हुई।

द्वितीय पंचवर्षीय योजना

इस योजना मे पुस्तकालय विस्तार के लिए १४० लाख रुपया स्वीकार किया गया। इसके द्वारा भारत के पूरे ३२० जिलों मे से १०० जिलों में सर्कुलेटिङ्ग लाइब्रेरी सर्विस चालू होगी। सेंट्रल स्टेट लाइब्रेरी इसका केन्द्र होगी। जिला लाइब्रेरी अपने से सन्वधित ग्राम क्षेत्रों मे पुस्तकों को सरकुलेट करने की व्यवस्था करेगी। बड़े राज्यों में क्षेत्रीय पुस्तकालय भी होंगे और सब के ऊपर नेशनल सेंट्रल लाइब्रेरी होगी जो दिल्ली में होगी। जिला लाइब्रेरी अपने अंतर्गत गाँव पुस्तकालयों की ट्रेनिङ्ग की व्यवस्था भी करेगी। वह पुस्तक-प्रदर्शनी तथा ऐसे आयोजन करेगी जिनसे जनता पुस्तकालय की ओर आकृष्ट हो। स्टेट लाइब्रेरी बिब्लियोग्रैफी तैयार करेगी और पाठकों के लिए 'ऐडवाइजरी सर्विस' की व्यवस्था करेगी।

४—नेशनल सेन्ट्रल लाइब्रेरी

जुलाई १९४७ ई० में डा० रङ्गनाथन ने नेशनल सेंट्रल लाइब्रेरी का मेमोरेण्डम तैयार किया था जिस पर विचार करने के लिए सेंट्रल गवर्नमेंट ने निम्नलिखित व्यक्तियों की एक कमेटी बनाई।

१. डा० ताराचन्द, शिक्षा सलाहकार भारत सरकार, (अध्यक्ष)।
२. डा० रङ्गनाथन, प्रेसीडेंट ऑल इण्डिया लाइब्रेरी एसोसिएशन।
३. डा० एस० एन० सेन, डाइरेक्टर आफ् नेशनल आर्काइव्ज, नई दिल्ली।
४. डा० पी० एम० जोशी ,, ,, ,, बम्बई।
५. डा० डी०एस० कोठारी, डीन साइन्स फाकल्टी, दिल्ली यूनिवर्सिटी।
६. श्री बी० एस० केशवन, नेशनल लाइब्रेरियन (सेक्रेटरी)।

इस समिति की प्रथम बैठक ७ अप्रैल १९४८ को हुई जिसमें डा० रंगनाथन जी से नेशनल सेंट्रल लाइब्रेरी का प्लान बनाने का अनुरोध किया गया। इस कमेटी की अन्तिम रिपोर्ट के बाद सरकार ने सेंट्रल रिफ्रेंन्स लाइब्रेरी नई दिल्ली में स्थापित करने का निश्चय किया। इसके लिए २५ लाख रु० पहिली योजना में रखा गया। यह सिर्फ पुस्तकालय ही न होगा बल्कि लोगों को रिसर्च की सुविधाएँ प्रदान करेगा। यह इंडियन नेशनल बिब्लियोग्रैफी, विदेशी पुस्तकालयों से अन्तर्ऋण (इन्टलोन) की व्यवस्था भी करेगा। इस पुस्तकालय के लिए इंडिया गजट भाग २ स० ३, १९ मार्च सन् १९५४ के अनुसार (पब्लिक लाइब्रेरी ऐक्ट ५६) २१ मई १९५४ से प्रकाशित

सम्पूर्ण भारतीय साहित्य को प्राप्त करने की व्यवस्था की गई है। इसका भवन भी बनना शुरू हो गया है।

५—लाइब्रेरी ऐडवाइजरी कमेटी

भारत सरकार ने निम्नलिखित व्यक्तियों की एक 'लाइब्रेरी ऐडवाइजरी कमेटी' बनाई है जो सरकार को पुस्तकालय-सेवा के विस्तार में सहायता प्रदान करेगी :—

१—श्री बी० एस० केशवन, डाइरेक्टर नेशनल लाइब्रेरी कलकत्ता।

२—श्री टी० डी० वाकनीस, क्युरेटर, आफ लाइब्रेरीज, बड़ौदा।

३—श्री डी०आर० कालिया, डाइरेक्टर, दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी, दिल्ली।

४—श्री एन० बद्रैया, प्रेसीडेंट, मैसूर स्टेट एडल्ट एजुकेशन काउंसिल, मैसूर।

५—श्री जगदीशचन्द्र माथुर, आई०सी० एस०, डाइरेक्टर जनरल ऑल इंडिया रेडियो, दिल्ली।

६—श्रीमती जॉन मथाई, बम्बई।

७—श्री एस० एस० सेठ, लाइब्रेरियन, हिस्टारिकल डि०, मिनिस्ट्री आफ इक्स्टर्नल अफेयर्स, नई दिल्ली।

८—श्री के० पी० सिनहा, डाइरेक्टर शिक्षा-विभाग, बिहार (अध्यक्ष)।

९—श्री सोहन सिंह, सहायक एजुकेशनल ऐडवाइजर, शिक्षा-विभाग नई दिल्ली (सेक्रेटरी)।

भारत सरकार की यह पुस्तकालय परामर्श समिति भारत में वर्तमान पुस्तकालयों की गतिविधि और स्थिति की जाँच एक प्रश्नावली द्वारा करेगी जो कि विधान सभा के सदस्यों, सरकारी पदाधिकारियों, पुस्तकालयाध्यक्षों तथा अभिरुचि रखनेवाले व्यक्तियों को भेजी जायगी। इसकी लगभग ५०००, प्रतियाँ व्यक्ति और संस्थाओं को भेजी जायँगी। कमेटी विभिन्न प्रदेशों का दौरा करेगी और सरकारी अफसरों और प्रमुख पुस्तकालय सेवियों से विचार-विनिमय करेगी। यह अपनी रिपोर्ट सरकार को मार्च १९५८ तक देगी, जिसके आधार पर नीति निर्धारित होगी।*

(ग) आधुनिक भारतीय पुस्तकालयों का वर्गीकरण

अन्य देशों की भाँति हमारे देश में भी विविध पुस्तकालय हैं। इन पुस्तकालयों का क्रमबद्ध विवरण उपस्थित करने के लिए भारत सरकार के शिक्षा विभाग की ओर से सन् १९५२ ई० में 'लाइब्रेरीज इन इंडिया' नामक पुस्तक

---

* प्रश्नावली भेजी गई है और दौरा करने का कार्य-क्रम बन रहा है।

प्रकाशित हुई। इसमें ११६६ पुस्तकालयों* का विवरण दिया गया है। इस पुस्तक में भारतीय पुस्तकालयों को निम्नलिखित ६ वर्गों मे बाँटा गया है :—

१—केन्द्रीय सरकार के पुस्तकालय।

२—प्रान्तीय सरकार के पुस्तकालय।

३—यूनिवर्सिटी और कालेज के पुस्तकालय।

४—अनुसधानशालाओं, प्रयोगशालाओं और सोसाइटियों के पुस्तकालय।

५—पब्लिक स्कूल लाइब्रेरी।

६—पब्लिक लाइब्रेरी।

भारत सरकार के पुस्तकालयों को पुनः चार भागों में विभाजित किया गया है—

(क) नेशनल लाइब्रेरी।

(ख) मत्रालय से संलग्न पुस्तकालय।

(ग) भारत सरकार के स्वतंत्र कार्यालयों से सम्बद्ध पुस्तकालय।

(घ) मातहत और सम्बद्ध कार्यालयों से संलग्न पुस्तकालय।

इसी प्रकार प्रान्तीय सरकार के पुस्तकालयों को दो भागों में विभाजित किया गया है :—

(क) विभागीय पुस्तकालय (ख) संग्रहालय पुस्तकालय।

इसके अतिरिक्त यूनिवर्सिटी और कालेज पुस्तकालय के दो भाग किए गए हैं—

(क) यूनिवर्सिटी पुस्तकालय (ख) कालेज पुस्तकालय।

अन्य वर्गों में भेद नहीं किया गया है। इस प्रकार भारत के पुस्तकालयों को विभाजित करके उनका विवरण तीन प्रकार से दिया गया है :—

१—प्रान्त के अनुसार पुस्तकालयों का विवरण।

२—स्टॉक के अनुसार पुस्तकालयों का विवरण।

३—प्रबंध के अनुसार पुस्तकालयों का विवरण।

आगे दी गई सारिणी (चार्ट) से यह बात स्पष्ट हो जायगी।

---

* यद्यपि पुस्तकालयों की संख्या इससे कहीं अधिक है किन्तु सरकार को सभी पुस्तकालयों ने पूरा विवरण नहीं भेजा। अतः प्राप्त विवरणों पर यह पुस्तक आधारित है।

प्रान्त के अनुसार पुस्तकालयों का विवरण

प्रान्त	नेशनल लाइब्रेरी	केन्द्रीय मन्त्रालय से संबद्ध पुस्तकालय	भारत सरकार के स्वतन्त्र कार्यालयों से सम्बद्ध पुस्तकालय	भारत सरकार के श्रीट-गांव स० कार्यालयों से संबद्ध पुस्तकालय	प्रान्तीय विभागीय पुस्तकालय	प्रान्तीय संग्रहालय पुस्तकालय	विश्वविद्यालय पुस्तकालय	कॉलेज पुस्तकालय	अन्य उच्चतर शिक्षा संस्थाओं के पुस्तकालय	पब्लिक स्कूल लाइब्रेरी	पब्लिक लाइब्रेरी	योगफल
(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)	(७)	(८)	(९)	(१०)	(११)	(१२)	(१३)
अजमेर	—	—	—	—	—	—	—	१	—	१	१	३
आसाम	—	—	—	१	१	१	१	१६	३	—	४	३०
अण्डमान, नी० द्वीप	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
पश्चिमी बंगाल	१	—	—	११	२	—	१	१०४	८	—	४०	१६७
भूपाल	—	—	—	—	—	—	—	१	—	—	१	२
बिहार	—	—	—	—	—	—	१	४५	३	—	११	६०
बिलासपुर	—	—	—	—	३	—	—	—	—	—	—	३
बम्बई	—	—	—	८	—	—	४	६८	६	१	८०	२००
कुर्ग	—	—	—	—	—	—	—	१	—	—	—	१
दिल्ली	—	१२	३	२२	—	—	१	१७	८	१	१	६५
हिमाचल प्रदेश	—	—	—	—	—	—	—	१	—	—	१	२
हैदराबाद	—	—	—	—	२	१	१	२०	१	—	१	२६
जम्मू, काश्मीर	—	—	—	—	—	—	१	१४	—	—	२	१७

कच्छ	—	—	—	—	—	—	—	७	१	२	२	१२
मध्य भारत	—	—	—	—	—	—	२	४०	—	१	१०	५६
मध्य प्रदेश	—	—	—	३	—	—	३	१०९	३	१	४१	१६०
मद्रास	—	—	—	३	—	—	—	१	—	—	१	२
मनीपुर	—	—	—	—	—	—	१	३३	३	—	५	४५
मैसूर	—	—	—	१	२	—	१	१७	—	—	४	२६
उड़ीसा	—	—	—	३	—	१	१	९	—	१	३	१३
पी० ई० पी० एस० यू०	—	—	—	—	—	—	—	४७	२	—	५	७२
पंजाब	—	—	—	६	११	—	१	२९	१	३	५	३९
राजस्थान	—	—	—	—	—	—	१	२	—	—	६	११
सौराष्ट्र	—	—	—	—	—	३	—	२५	१	—	८	३८
ट्रावनकोर, कोचीन	—	—	—	—	३	—	१	२	—	—	—	२
त्रिपुरा	—	—	—	—	—	—	—	६६	९	२	१५	१०७
उत्तर प्रदेश	—	—	—	४	४	१	६	२	—	—	१	८
विन्ध्य प्रदेश	—	—	—	—	५	—	—	—	—	—	—	—
योग	१	१२	३	६२	३३	७	२६	७०९	५२	१३	२४८	११६६

स्टॉक के अनुसार पुस्तकालयों का विवरण*

स्टॉक की शृङ्खला† (१)	नेशनल लाइब्रेरी (२)	केन्द्रीय मन्त्रालय से सम्बद्ध पुस्तकालय (३)	भारत सरकार के स्वतन्त्र विभागों से सम्बद्ध पुस्तकालय (४)	भारत सरकार से सलग्न सहा० कार्यालयों से सम्बद्ध पुस्तकालय (५)	प्रान्तीय विभागीय पुस्तकालय (६)	प्रान्तीय सग्रहालय पुस्तकालय (७)	विश्वविद्यालय पुस्तकालय (८)	कालेज पुस्तकालय (९)	अन्य उच्चतर शिक्षा संस्थाओं‡ के पुस्तकालय (१०)	पब्लिक स्कूल लाइब्रेरी (११)	पब्लिक लाइब्रेरी (१२)	योगफल (१३)
५०० से कम पुस्तकें	—	—	—	७	७	—	—	१९	६	—	—	३९
५०० से १,००० "	—	—	—	५	२	२	—	३८	३	—	—	५०
१,००१ से २,००० "	—	—	—	५	३	४	—	७५	६	२	—	९५
२,००१ से ३,००० "	—	१	—	५	३	१	—	७८	२	२	—	९२
३,००१ से ४,००० "	—	—	—	६	१	—	१	५६	३	१	—	६८
४,००१ से ५,००० "	—	—	१	३	२	—	१	४९	३	१	—	६०
५,००१ से ६,००० "	—	—	—	७	३	—	—	३१	४	१	३६	८२
६,००१ से ७,००० "	—	१	—	२	—	—	—	२९	२	—	२०	५४
७,००१ से ८,००० "	—	—	—	१	२	—	—	२३	१	—	२४	५१
८,००१ से ९,००० "	—	—	—	२	—	—	१	१२	२	१	११	३०
९,००१ से १०,००० "	—	—	—	१	—	—	१	८	३	३	१९	३५

१०,००० से १५,००० ”	—	१	—	५	१	—	२	६७	२	१	३९	११८
१५,००१ से २०,००० ”	—	—	—	२	१	—	१	४५	५	—	१८	७२
२०,००१ से २५,००० ”	—	२	—	१	—	—	१	२४	२	—	९	३९
२५,००१ से ३०,००० ”	—	१	—	२	१	—	१	१४	—	—	५	२४
३०,००१ से ३५,००० ”	—	१	—	२	—	—	१	७	१	—	५	१७
३५,००१ से ४०,००० ”	—	२	—	—	—	—	—	५	३	—	२	१२
४०,००१ से ४५,००० ”	—	१	—	—	—	—	१	२	१	—	२	७
४५,००१ से ५०,००० ”	—	—	—	१	—	—	२	२	—	—	२	७
५०,००१ से १,००,००० ”	—	१	१	१	४	—	७	३	२	—	५	२४
१,००,००१से ६,००,००० ”	१	—	—	१	२	—	६	२	१	—	१	१४
योग	१	११	१	५६	३३	७	२६	५८९	५२	१२	१९८	९९० $

* ३१ मार्च १९५१ तक।

† पुस्तकें, पत्रिकाएँ, पुस्तिकाएँ तथा हस्तलिखित ग्रंथ आदि।

‡ विश्वविद्यालय, अनुसन्धानशालाओं और संस्थाओं से जो सम्बद्ध संस्थाएँ नहीं हैं।

$ शेष १७६ पुस्तकालयों का विवरण उपलब्ध नहीं है।

प्रबन्ध के अनुसार पुस्तकालयों का विवरण

स्वरूप	केन्द्रीय सरकार द्वारा प्रबन्धित	प्रान्तीय सरकार द्वारा प्रबन्धित	लोकल बोर्डों द्वारा प्रबन्धित	प्राइवेट संस्थाओं द्वारा प्रबन्धित	योगफल
(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)
नेशनल लाइब्रेरी	१	–	–	–	१
केन्द्रीय मन्त्रणालय से सम्बद्ध पुस्तकालय	१२	–	–	–	१२
भारत सरकार के स्वतन्त्र विभागों से सम्बद्ध पुस्तकालय	३	–	–	–	३
भारत सरकार से संलग्न सहा० कार्यालयों से सम्बद्ध पुस्तकालय	६२	–	–	–	६२
प्रान्तीय विभागीय पुस्तकालय	–	३३	–	–	३३
प्रान्तीय संग्रहालय पुस्तकालय	–	७	–	–	७
विश्वविद्यालय पुस्तकालय	–	२	–	२४	२६
कालेज लाइब्रेरी	७	१९४	५	५०३	७०९
अन्य उच्चतर शिक्षा संस्थाओं* से सम्बद्ध पुस्तकालय	२२	३	१	२६	५२
पब्लिक स्कूल लाइब्रेरी	२	१	–	१०	१३
पब्लिक लाइब्रेरी	–	२२	१८	२०८	२४८
योग	१०९	२६२	२४	७७१	१,१६६

* विश्वविद्यालयों, अनुसन्धान केन्द्रों और सोसाइटीज़ से जो असम्बद्ध पुस्तकालय हैं।

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी का काउण्टर
सदस्यगण घर के लिए पुस्तकें उधार ले रहे हैं।



श्री डी० आर० कालिया, एम० ए०, एल० एल० बी०
डाइरेक्टर, दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी

(घ) दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी

पुस्तकालय के क्षेत्र में दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी की स्थापना एक सराहनीय कार्य है। यह पुस्तकालय यूनेस्को और भारत सरकार के संयुक्त प्रयास से दिल्ली में १९५१ ई० में स्थापित किया गया। इसका उद्घाटन माननीय प्रधान मन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू ने २७ अक्टूबर १९५१ ई० को किया। इस पुस्तकालय का उद्देश्य यह है कि सार्वजनिक पुस्तकालय-सेवा के क्षेत्र में आधुनिकतम रीतियों का प्रचार किया जा सके। पुस्तकालयाध्यक्षों को लाइब्रेरी ट्रेनिङ्ग की सुविधा दे कर और पुस्तकालयों के मामलों में सलाह दे कर तथा इस पुस्तकालय में व्यवहारिक रूप में सब टेकनिकों को दिखा कर यह दक्षिणपूर्व एशिया में सार्वजनिक पुस्तकालयों के विकास के लिए एक आदर्श पुस्तकालय हो सके।

इस पुस्तकालय का महत्त्व इसके द्वारा की जाने वाली सेवाओं के विभिन्न रूप से ही प्रकट होता है। यह प्रति दिन सवेरे ८ बजे से शाम के ८ बजे १२ घण्टे रोज खुला रहता है और वर्ष भर में किसी भी दिन बन्द नहीं होता। यह केवल पुस्तकें उधार देने वाली लाइब्रेरी नहीं हैं बल्कि समुदाय की सामूहिक आवश्यकताओं का पूरक एक कम्युनिटी सेंटर भी हैं। इस पुस्तकालय का सदस्य बन कर पुस्तकें घर ले जाने के लिए जमानत के रूप में कुछ भी जमा करने की जरूरत नहीं पड़ती। इसके लिए केवल एक किसी जिम्मेदार व्यक्ति की फॉर्म पर सिफारिश भर होनी चाहिए। इस समय इस पुस्तकालय के लगभग २७,००० सदस्य हैं और प्रतिमास लगभग १५०० नए सदस्य बनते हैं।

घर के लिए पुस्तकें

इस पुस्तकालय में इस समय लगभग ६५,००० पुस्तकें हैं। इसमें लगभग २००० नयी प्रस्तकें प्रतिमास बढ़ती रहती हैं। ये पुस्तकें खुली आलमारियों में रखी जाती हैं और पाठक बिना किसी रोक टोक के अपनी इच्छानुसार पुस्तकें उनमें से चुन सकते हैं। पुस्तकें घर पर ले जाकर पढ़ने के नियम भी बहुत ही सरल हैं। पुस्तकें उधार ले जाने वाले से उसके हस्ताक्षर नहीं लिए जाते। औसतन लगभग ११०० पुस्तकें हर रोज घर पर पढ़ने के लिए दी जाती हैं। पिछले चार साल में १ लाख ४०० हजार पुस्तकें लोगों को घर पर पढ़ने के लिए दी गई जिनमें से केवल ७५७ पुस्तकें वापस नहीं मिल सकीं। यह संख्या विदेशी पुस्तकालयों में खोने वाली पुस्तकों की संख्या के मुकाबिले बहुत कम है।

इस पुस्तकालय में पुस्तकों के लेन-देन के अलावा एक रिफ्रेंस और सूचना विभाग भी है जिसमें विश्वकोश, कोश, शब्दकोश, समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, तथा अन्य सामग्री सुगमतापूर्वक मिल सकती है।

इस विभाग द्वारा पत्र-तार तथा टेलीफोन से सभी प्रकार की सूचनाएँ और रिफरेंस लोगों को बताए जाते हैं।

बच्चों के लिए अलग बालकक्ष है तथा उनके लिए उसी कक्ष से मिला हुआ एक 'कल्चरल ऐक्टिविटी रूम' भी हैं जिसमें खिलौने, लकड़ी के अक्षर, मनोहर चित्र तथा मैकेनोज़ आदि रखे रहते हैं। बच्चों के लिए कहानी तथा फिल्म आदि की भी सुन्दर व्यवस्था है। बाल कक्ष में एक पुस्तकालय है जिसमें से वे घर पर पढने के लिए पुस्तकें ले जा सकते हैं। अभी घर पर पढ़ने के लिए ले जाने वाली पुस्तकों का अनुपात लगभग २०० पुस्तक प्रतिदिन का है। किशोर बालकों के लिए ड्रामा, सगीत, साहित्य आदि के अनेक आयोजन उन्हीं के द्वारा कराये जाते हैं।

सामाजिक शिक्षा का भी एक अलग विभाग है जिसके द्वारा प्रौढ़ों के लिए सास्कृतिक आयोजन किए जाते हैं। इस विभाग के द्वारा फिल्म, प्रदर्शनी, व्याख्यान, नाटक, वादविवाद प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया जाता है। इस विभाग के अन्तर्गत प्रोजेक्टर, पोस्टर, माइक्रोफोन, ग्रामोफोन रिकार्ड्स, टेप रिकार्डर, हारमोनियम, तबला आदि अनेक दृश्य-श्रव्य उपकरण हैं जिनके द्वारा सामाजिक शिक्षा का प्रसार किया जाता है और प्रौढ़ों को साक्षरता की ओर आकृष्ट किया जाता है। इस विभाग का ओर से प्रौढ़ोपयोगी साहित्य की तीन पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं।

जो लोग इस पुस्तकालय से दूर हैं उनके लिए पुस्तकालय की ओर से चलती फिरती लाइब्रेरी की व्यवस्था की गई है। शहर में सात 'डिपोजिट स्टेशन' काम कर रहे हैं जो अनेक सस्थाओं को कुछ निश्चित समय के लिए पुस्तकें उधार देते हैं। इस चलती फिरती लाइब्रेरी के साथ सिनेमा और संगीत का भी प्रबध रहता है। पिछले दो वर्षों में इस चलती फिरती लाइब्रेरी से १२ हजार १०० पुस्तकें लोगों को पढ़ने के लिए उधार दी गईं।

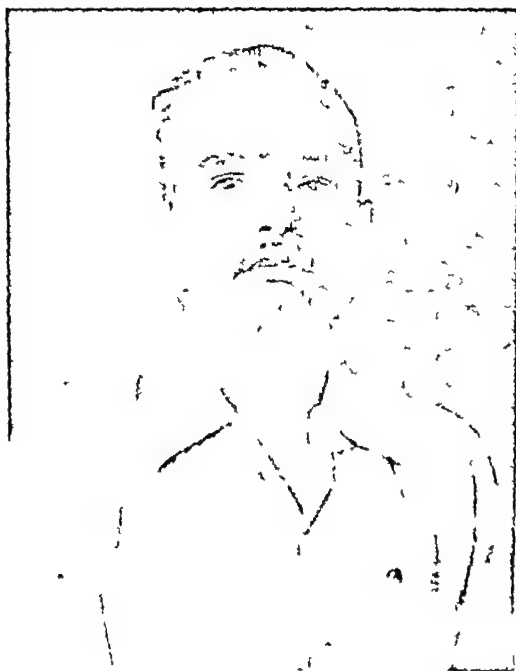
इस पुस्तकालय में सार्वजनिक पुस्तकालय के पुस्तकालयाध्यक्षों के क्रियात्मक प्रशिक्षण की भी व्यवस्था की गई है।

इस प्रकार इस पुस्तकालय ने सिद्ध कर दिया है कि यदि समुचित सुविधा प्रदान की जाय तो पुस्तकालय सार्वजनिक शिक्षा के महत्त्वपूर्ण एव सफल साधन हो सकते हैं।

यूनेस्को सेमिनार में उत्तरप्रदेश सरकार

के

प्रतिनिधि



श्री डी० पी० माहेश्वरी, एम ए एल टी

शिक्षाप्रसार अधिकारी

उत्तरप्रदेश

(ङ) यूनेस्को का अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार

यूनेस्को के अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन ६ अक्टूबर से २६ अक्टूबर १९५५ तक दिल्ली में किया गया। इसका उद्घाटन केन्द्रीय शिक्षा मंत्री मौलाना आजाद महोदय ने ६ अक्टूबर को पार्लियामेंट हाउस में किया जिसमें शिक्षा एव पुस्तकालयों में रुचि रखने वाले गण्यमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

कार्य-पद्धति

इस सेमिनार में अफगानिस्तान, आस्ट्रेलिया, बर्मा, लंका, भारत, इंडोनेशिया, जापान, मलाया, नेपाल, पाकिस्तान, फिलिपाइंस, थाईलैण्ड तथा युनाइटेड नेशन्स के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। भारत की ओर से श्री वी० एस० केशवन, श्री हरि सर्वोत्तम राव, श्री टी० डी० वाकनीस और श्री डी०आर० कालिया महोदय प्रतिनिधि के रूप में तथा श्री गोविन्द प्रसाद अग्रवाल, श्री बलवन्त सिंह गुजराती, श्री एन० आर० गुप्ता, श्री वी० एम० कपाडिया, सुश्री पुष्पा कुमारी कपिला, श्री जी० बी० पाटेल, श्री एस० राघवन, श्री जगन्नाथ प्रसाद शाह, श्री के० टी० मेन्टाई, एवं श्री डी० पी० माहेश्वरी (उप शिक्षा-प्रसार अधिकारी, उत्तर प्रदेश) पर्यवेक्षक के रूप में सम्मिलित हुए। प्रो०के०जी० सैयदेन तथा प्रो० हुमाऊँ कबीर ने भी अपना महत्त्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया।

इस सेमिनार के नेता ल्यूटन पब्लिक लाइब्रेरी के लाइब्रेरियन एवं यूनेस्को लाइब्रेरी विशेषज्ञ श्री एफ० एम० गार्डनर महोदय थे। भारत की कई प्रान्तीय सरकारों ने भी अपने-अपने पर्यवेक्षक इस सेमिनार में भेजे। मि० इ० एन० पिटर्सन, अध्यक्ष, पब्लिक लाइब्रेरीज डवलपमेंट लाइब्रेरीज़ डिवीजन, यूनेस्को काफी पहले से अपने स्टाफ सहित दिल्ली आए और भारत सरकार तथा दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी के अधिकारियों से सम्पर्क स्थापित किया और उनके सहयोग से सेमिनार का प्रारंभिक जरूरी प्रबंध किया। मिस्टर गार्डनर को उनके कार्य में न्यूजीलैण्ड नेशनल लाइब्रेरी सर्विसेज के डाइरेक्टर श्री एच० मैकमिल और पाकिस्तान की आर्काइव्ज और लाइब्रेरीजके डाइरेक्टरेट के आफिसर आन स्पेशल ड्यूटी मिस्टर एच० ए० काजी ने विशेष रूप से सहायता की।

यूनेस्को लाइब्रेरी डिवीजन के Mlle S. Basset द्वारा सेमिनार कार्यालय का सचालन सफलतापूर्वक किया गया। सेमिनार की कार्यवाही को सुगम बनाने के लिए कई दुभाषिए भी संलग्न थे।

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी के उत्साही डाइरेक्टर श्री डी०आर० कालिया ने अपने स्टाफ सहित बड़ी तत्परता से सहयोग दे कर सेमिनार को सफल बनाया।

इस सेमिनार का उद्देश्य एशिया में पुस्तकालय सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करना और एशिया में पब्लिक लाइब्रेरी सर्विस के विस्तार के लिए सुझाव और प्रस्ताव तैयार करना था विशेष रूप से मौलिक शिक्षा के सम्बन्ध में।

पूरा सेमिनार ग्रूप-प्रणाली पर सञ्चालित किया गया। पहिला ग्रुप 'पब्लिक लाइब्रेरी' का था जिसके नेता मि० गार्डनर थे। दूसरा ग्रुप 'एशिया में प्रौढ शिक्षा की सामग्री' के सम्बध में था जिसके नेता पाकिस्तान के प्रतिनिधि श्री एच० ए० काजी थे। तीसरा दल 'बाल पुस्तकालय' का था जिसके नेता न्यूजीलैण्ड के प्रतिनिधि श्री मैकसिल महोदय थे।

इन तीनों दलों की समानान्तर बैठकें प्रतिदिन होती रहीं। प्रत्येक सप्ताह के अत में एक 'प्रारंभिक अधिवेशन' होता था जिसमें प्रत्येक दल की रिपोर्ट पढ़ी जाती थी और उस पर सभी दलों के प्रतिनिधि विचार-विनिमय करते थे।

प्रत्येक दल का अपना Rapporteur था। प्रत्येक पिछले दिन के वाद-विवाद का सच्छिप्त रूप तैयार कर लिया जाता था और Mimeogrsaphed सच्छिप्त रूप प्रत्येक दल को दूसरे दिन की बहस शुरू होने से पहले मिल जाता था। इस प्रकार दल में किए गए विचारों की जाँच हो जाती थी और कोई प्वाइट छूट नहीं सकता था। दल का नेता बहस के समय इस बात पर ध्यान रखता था कि प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह प्रतिनिधि या पर्यवेक्षक हो, प्रस्तुत विषय में पूरा भाग ले रहा है या नहीं। उनको अपना विचार प्रकट करने की पूरी आजादी थी। इस प्रकार बड़े अनुशासित ढग से शान्तिपूर्वक प्रत्येक दल की कार्यवाही होती थी। इसका फल यह हुआ कि प्रत्येक दल की रिपोर्ट विचारों से परिपूर्ण और ठोस रूप में सामने आई।

सेमिनार के अन्तिम सप्ताह की उल्लेखनीय बात यह थी कि माननीय पडित नेहरू भी सेमिनार के प्रतिनिधियों से मिले और अपने कुछ विचार प्रकट किये।

सेमिनार के दिनों में अखिल भारतीय पुस्तकालय-सघ, भारत सरकार पुस्तकालय-संघ और दिल्ली पुस्तकालय-संघ ने प्रतिनिधियों और पर्यवेक्षकों का स्वागत किया। केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री माननीय मौलाना आजाद ने भी सेमिनार में शामिल होने वालों को जलपान के लिए राष्ट्रपति भवन में आमन्त्रित किया। यूनेस्को ने भी स्विस होटल में एक दिन सभी प्रतिनिधियों, पर्यवेक्षकों एवं शिक्षाविदों का स्वागत किया।

सेमिनार की रिपोर्ट

राष्ट्रीय-जन पुस्तकालय सेवा के विकास के सम्बन्ध में समूह की अन्तिम रिपोर्ट एशिया के देशों की वास्तविक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए विचार पूर्ण ढंग से प्रस्तुत की गई है। देश में पुस्तकालय की आयोजना से सम्बधित सभी पहलुओं पर जैसे, साक्षरता का विकास, स्थानीय सरकारों में विशाल पुनर्जागृति, नगर और ग्रामीण क्षेत्रों में यातायात के आदान-प्रदान की सुविधाएँ, लोगों के रहन-सहन का दर्जा तथा उनका आर्थिक विकास आदि सभी पर पूर्ण विचार किया गया है। यह निश्चित किया गया कि एक जन-पुस्तकालय-सेवा को कानून के द्वारा निर्धारित किया जाना चाहिये, जिसका उपयोग जनता निःशुल्क रूप से कर सकेगी और जिस पुस्तकालय का व्यय जनता के धन से चलेगा। यह पुस्तकालय स्थापना की आधार भित्ति है। दूसरे, इस पुस्तकालय में न केवल विद्वान और विद्यार्थी अध्ययन करेंगे बल्कि प्रत्येक नागरिक, वह चाहे जो पेशा करता हो, चाहे जितनी थोड़ी-बहुत शिक्षा प्राप्त हो, चाहे जिस वातावरण में रहता हो—सभी इस सेवा से लाभ उठायेंगे। जहाँ कहीं भी पुस्तकालय-विधान पहले से वर्तमान हैं वहाँ परीक्षणों का अध्ययन करने के बाद यह पाया गया है कि बहुत छोटी इकाई होने से, सहयोग के न होने से, पर्याप्त कोष न होने से, सरकार की उदासीनता, ट्रेंड कर्मचारियों के अभाव आदि कारणों के द्वारा उतना अच्छा निष्कर्ष नहीं निकल रहा है जितना कि कानून से निकलना चाहिए।

विचार गोष्ठी ने यह अनुभव किया कि इधर-उधर छिटके पुस्तकालयों को इस योजना के अन्तर्गत एक 'जन-पुस्तकालय' के सरक्षण में कार्य करना चाहिये। धन द्वारा सहायता प्राप्त निजी (प्राइवेट) सस्थाएँ गलत ठहराई गईं। विचार गोष्ठी ने इस बात पर विशेष बल दिया कि जन-पुस्तकालय-सेवा के व्यय का धन राष्ट्रीय या प्रान्तीय सरकारों से मिलना चाहिये, विशेष-कर प्रारम्भिक व्यय का पूँजी के रूप में। गत पाँच वर्ष में पुस्तकालयों पर किये जाने वाले और शिक्षा पर किये जाने वाले व्यय को तुलनात्मक रीति से देखते हुए विचार गोष्ठी ने दोनों के उचित सन्तुलन पर बल दिया।

पुस्तकालय की स्थापना जहाँ तक सम्भव हो स्थानीय प्रशासक-सीमाओं के अन्दर ही होनी चाहिये, जहाँ इनका विकास हो सके और ये क्षेत्र पुस्तकालय के विकास में पूर्ण सहयोग दे सकेंगे, इन क्षेत्रों का चुनाव नगर और ग्रामीण क्षेत्रों के मध्य में होगा तथा ये पुस्तकालय इतनी दूरी पर नहीं होंगे

क पुस्तकालय डाइरेक्टर या जिला पुस्तकालय बोर्ड इन पर अधिकार रख सकने में कठिनाई अनुभव करेंगे।

रिपोर्ट का दूसरा अन्तिम निर्णय था कि केन्द्रीय पुस्तकालय बोर्ड नियम (कानून) बद्ध स्वयं परिचालित सस्था होगी जो एक मन्त्री पर निर्भर करेगी और इसको अधिकार होंगे कि यह पुस्तकालय सेवाओं का विकास करे और इस निमित्त स्वीकृति भी दे। इस बोर्ड के अधिकार सम्बन्धी प्रश्न अभी विवादग्रस्त हैं। उनके एक मत होने के लिये हमें प्रतीक्षा करनी चाहिये।

रिपोर्ट के दिलचस्प अवतरणों (Paragraphs) में से राष्ट्रीय पुस्तकालय-सेवा के कार्यों का वर्णन अति महत्त्वपूर्ण है। राष्ट्रीय पुस्तकालय के क्या कार्य हैं? क्या यह राष्ट्रीय-पुस्तकालय सेवा से भिन्न और विशिष्ट है? यदि ऐसा है तो राष्ट्रीय पुस्तकालय-सेवा के क्या विधान हैं? एशिया में विभिन्न प्रकार के जैसे Unitary और Federal राज्य वर्तमान हैं। ऐसे विभिन्न राज्यों में राष्ट्रीय पुस्तकालय और राष्ट्रीय-पुस्तकालय-सेवा का क्या प्रकार (रूप) होगा? इत्यादि प्रश्नों पर विचार किया गया।

राष्ट्रीय पुस्तकालय एक वह संस्था है जिसके कि स्वयं अधिकार हैं, जो राष्ट्रीय प्रकाशनों की रक्षा करती है और विश्व की सस्कृति और सभ्यता सबधी पुस्तकों का चुनाव करती है। उसका प्रधान लक्ष्य राष्ट्रीय पुस्तकों की सूची (Bibliography) निर्माण करना होताहै तथा वह अन्तर्राष्ट्रीय ऋण और अन्त-र्राष्ट्रीय पुस्तकों के आदान-प्रदान के केन्द्र के रूप में कार्य करती है और जहाँ सम्भव हो देश का यूनियन कैटलाग रखती है।

राज्यों में राष्ट्रीय पुस्तकालय का कर्तव्य है कि वह राष्ट्रीय पुस्तकालय-सेवा का निर्माण करे। राज्यों में राष्ट्रीय पुस्तकालय का पुस्तकालयाध्यक्ष केन्द्रीय पुस्तकालय बोर्ड के पुस्तकालयाध्यक्ष की हैसियत से कार्य करता है। केन्द्रीय पुस्तकालय बोर्ड राष्ट्रीय पुस्तकालय पर निर्भर नहीं है।

रिपोर्ट में केन्द्रीय पुस्तकालय बोर्ड के कार्यों का एव यह किस प्रकार राज्य और जिला बोर्डों के सहयोग से अपना राष्ट्रीय रूप स्थिर करती है, इसका विस्तृत विश्लेषण किया गया है।

दिल्ली सार्वजनिक पुस्तकालय आयोजन की आशातीत सफलता विचार गोष्ठी को यह कहने के लिये प्रेरित करती है कि एशिया के देशों में पथ-प्रद-र्शन, शिक्षण और परीक्षण कार्यों के लिये अधिक से अधिक सुदृढ़ जन-पुस्त-कालयों की आवश्यकता है। दूसरे जिन आवश्यक तथ्यों पर रिपोर्ट में

विचार किया गया उनमें से कुछ मुख्य ये हैं—पुस्तकालय-भवनों के निर्माण की समस्या, पुस्तकों का एक बड़ी संख्या में वितरण, स्वेच्छा से कार्य करने वाले कर्मचारियों का प्रयोग, समूह में विशेष वर्गों की सेवा, पुस्तकालय टेकनिक, कर्मचारियों का प्रशिक्षण, चुनाव और सामाजिक स्थिति, पुस्तकालयाध्यक्ष की कला में प्रशिक्षण प्राप्त करनेवाले लोगों के लिए विदेशी अनुभवों का महत्त्व, पुस्तकालय-विस्तार-सेवा विशेषतया नये पढ़े-लिखे लोगों के लिये प्रादेशिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग, राष्ट्रीय पुस्तकों की सूची का निर्माण और पुस्तकालय समितियों द्वारा किये जाने वाले कार्य की समस्याएँ।

विचार गोष्ठी की संक्षिप्त रिपोर्ट में, जो कि ३० नवम्बर को (Unesco CUA173) द्वारा प्रसारित हुई निम्नलिखित मुख्य तथ्यों का सारांश दिया गया है :—

१—एशिया में सभी लोगों के लिए मुक्त और बराबर आधार पर उचित रूप से आयोजित, जन-पुस्तकालय-सेवा का विकास।

२—सभी एशिया के देशों में जहाँ कोई पुस्तकालय-कानून नहीं है, राष्ट्रीय जन-पुस्तकालय के कानूनों को क्रियात्मक रूप देना।

३—पुस्तकालय सम्बन्धी प्रशिक्षण की सुविधाओं में उन्नति तथा पुस्तकालयाध्यक्षों के वेतन एवं सामाजिक रहन-सहन में विकास।

४. जन-पुस्तकालयों का व्यय जनता के चन्दे से किया जायगा।

५. यूनेस्को, एशिया की सरकारों से मिल कर अतिरिक्त जन-पुस्तकालय आयोजना बनाये।

६. यूनेस्को नवीन पढ़े-लिखे लोगों के लिए उचित जन-पुस्तकालय सेवाओं की सुविधा प्रदान करने के लिये अनुसन्धान जारी रखेगा।

७. यूनेस्को एशिया में एक ऐसा कार्यालय स्थापित करेगा जो विभिन्न सरकारों को सहमति और सहायता प्रदान कर जन-पुस्तकालय के विकास में सहयोग देगा।

द्वितीय दल (ग्रुप टू) की रिपोर्ट में, प्रौढ़ों के लिये प्रारम्भिक अध्ययन की सामग्री प्रदान करने के सम्बन्ध में जो मुख्य समस्या है वह यह कि निरक्षरता केवल उन क्षेत्रों में ही है जहाँ पालन-पोषण की सुविधा अच्छी नहीं है, जहाँ प्रायः सदैव बीमारी का साम्राज्य रहता है और जहाँ अति गरीबी है। इसीलिये यह उचित है कि प्रारम्भिक अध्ययन की सामग्री प्रदान करने में

राष्ट्रीय योजना लोगों की सामाजिक और आर्थिक विकास को मुख्य रूप से ध्यान में रखे। रिपोर्ट वर्तमान पठन सामग्री को देखती है और उसमें अन्तर (lacunae) का निरीक्षण करती हैं, औद्योगिक, धार्मिक तथा अन्य क्षेत्रों में पठन-सामग्री के क्रमों को निर्धारित (प्रस्तुत) करती हैं। यह श्रव्य और दृश्य ((Audo-visual) सम्बन्धी सहायताओं एव उनके चुनाव तथा उनके जन पुस्तकालयों के प्रयोग के प्रश्नों पर विचार करती है। यह कुछ विशेष देशों की बहु-भाषा सम्बन्धी एव लिपि-विभिन्नताओं की समस्या पर विचार करती है। इन दिशाओं में यहाँ आवश्यक परिणाम निकाले गये हैं कि देश की राष्ट्रीय भाषामें पुस्तकों के प्रदान करने के साथ-साथ प्रादेशिक भाषा-सामग्री को भी लेना होगा, और जहाँ तक सभव हो सके, सम्पूर्ण देश के लिये एक लिपि का अनिवार्य होना, पुस्तकालयाध्यक्षों के कार्य में सुविधा प्रदान करेगा। औद्योगिक शब्द-कोश का एशिया की भाषाओं में निर्माण (रूपान्तर), कुछ यूरोपीय भाषाओं के लिये महत्व, अनुसधान-शिक्षण व्यवस्था तथा शिक्षा-केन्द्र का विकास और पुस्तक-प्रकाशन की व्यवस्था—इन पर रिपोर्ट में मुख्य रूप से विचार-विनिमय किया गया है। इसमें चार महत्वपूर्ण वस्तुएँ बताई गई हैं। प्रथम सरकारी और प्रबन्ध विभागों के सम्मुख जिनका कार्य प्रश्न-तालिका का उपस्थित करना, नवीन-शिक्षित लोगों के लिये सामग्री प्रदान करना है, जिसे पठन-सामग्री के स्वभाव (Nature), वितरण और उत्पत्ति आदि के विषय में सूचना सग्रहीत करना है। इसके अतिरिक्त यह प्रस्तुत की गई पुस्तकों की भाषाओं, उनकी पूर्व-परीक्षाएँ तथा क्रमिक स्थिति-करण (ग्रेडिङ्ग), शिक्षण में विभिन्न सीढियों (Stages), पुस्तकों के अतिरिक्त शिक्षण में अन्य सुलभ सामग्रियों की सहायता, उनके (पुस्तकों के) आकार-प्रकार जिनमें कि उन्हें निर्गत होना है और प्रस्तुत की गई सामग्री का मूल्याकन (की आलोचना) आदि प्रश्नों की सूचना एकत्रित करेगी। द्वितीय, एशिया के देशों में प्रारम्भिक पठन (-अध्ययन) सामग्री तथा इसके उत्पादन का निरीक्षण। तृतीय, प्रौढ शिक्षा साहित्य से सम्बन्धित शीर्षकों (Titles) की एक विषय-सूची और स्थानीय कृषि, उद्योग (व्यापार) तथा हस्तकला द्वारा जीविकोपार्जन के साधनों में सुधार (और विकास)। चतुर्थ, वाङ्मय-सूची के उपकरणों और प्रौढ-शिक्षा के क्षेत्र में कर्मचारियों के लिये सहायताओं के चुनाव के रूप में हस्तकलाओं का पुनस्मरण।

उपर्युक्त (Unesco) (CUA|73) के द्वारा प्रसारित सक्षिप्त रिपोर्ट ने (Group Two) की रिपोर्ट को निम्न प्रकार से सक्षिप्त किया है :—

प्रौढ़-शिक्षा के लिये उचित पठन-सामग्री के विशेष अभाव तथा एशिया में साहित्य प्रस्तुत करने वाली विभिन्न संस्थाओं (एजेंसीज) में परस्पर असहयोग की भावना को ध्यान में रखते हुए आवश्यक है कि प्रत्येक देश में भली प्रकार व्यय द्वारा चलाए जाने वाले एक राष्ट्रीय उत्पादन केन्द्र की स्थापना की जाय। इस दिशा में, यह हर्ष का विषय है कि भारतवर्ष ने 'राष्ट्रीय पुस्तक-न्यास' के निर्माण के द्वारा एक बहुत बड़ा सराहनीय कदम उठाया है। छोटे बालकों के लिये पुस्तकालय-सेवा के विषय में तृतीय दल की रिपोर्ट सामग्रियों एवं भवनों के संग्रह, विस्तार सम्बन्धी कार्य, स्कूल-पुस्तकालयों, और वर्तमान (कार्यरत) पुस्तकालयों के लिये आवश्यक विशेष प्रकार के कर्मचारी-गण पर विशेष रूप से विचार करती है।

पूर्वकथित Unesco (CUA|73) की संक्षिप्त रिपोर्ट तृतीय दल के निर्णयों को इस प्रकार संक्षेप में प्रदर्शित करती है:—

१. सभी जन-पुस्तकालय बच्चों की सेवा को ध्यान में रखेगें और उसे प्रदान करेंगे।

२. स्कूल में बच्चों की पुस्तकालय सम्बन्धा सेवा का विकास एक निश्चित आयोजना के आधार पर किया जायगा और इन सेवाओं को सभी स्कूल के बच्चों के लिये सुलभ बनाया जायगा।

३. यूनेस्को एशिया की सरकारों से मिल कर प्रादेशिक, या राष्ट्रीय आधार पर स्कूलों और जन-पुस्तकालयों में बच्चों के लिये पुस्तकालय की सेवाओं के निर्देश के हेतु एक सुदृढ़ आयोजना बनायेगी।

४. यूनेस्को एशिया के बच्चों और नवयुवक व्यक्तियों के लाभार्थ अच्छी पुस्तकों के निर्माण के लिये एक आयोजना बनायेगी।

५. यूनेस्को विश्व साहित्य की उन पुस्तकों की—वह मौलिक हों चाहें अनुवादित—तालिका तैयार करेगी जो एशिया के बच्चों के लिये लाभप्रद हों।

एशियन लाइब्रेरी एसोसिएशन

२३ अक्टूबर १९५५ में यूनेस्को सेमिनार के दिनों में अनेक एशियाई देशों के प्रतिनिधियों ने मिल कर 'एशियन लाइब्रेरी एसोसिएशन' की स्थापना की। इसके सभापति Mr severino L velasco (फिलिपाइन्स) और मन्त्री श्री डॉ० आर० कालिया (भारत) चुने गए।

पुस्तक-जाकेट प्रदर्शनी

आकर्षक पुस्तक तैयार करने को प्रोत्साहन देने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय 'पुस्तक जाकेट प्रदर्शनी २७ अप्रैल ५६ को दिल्ली में आयोजित की गई जिसका उद्घाटन केन्द्रीय शिक्षा विभाग के उपमन्त्री डा० के० एल० श्रीमाली महोदय ने किया।

(च) नेशनल बुक ट्रस्ट

केन्द्रीय सरकार ने जनता में सरल और स्वस्थ साहित्य को सस्ते मूल्य पर प्रचारित करने के लिए तथा क्लैसिकल एव अन्य विशेष साहित्य जिन्हें प्रकाशक लाभ की दृष्टि से छापने में हिचकते हैं, उन्हें छापने के लिए एक 'नेशनल बुक ट्रस्ट' की स्थापना की। चालू प्रथम वर्ष में ३० लाख रुपये का व्यय अनुमानित है। इसकी समिति इस प्रकार है :—

डा० जॉन मथाई, वाइस चान्सलर बम्बई युनिवर्सिटी (अध्यक्ष)।

सदस्य :—

१—डा०ए० लक्ष्मण स्वामी मुदालियर, वाइस चान्सलर मद्रास यूनिव०
२—डा० जाकिर हुसेन ,, अलीगढ ,,
३—श्री मुल्कराज आनन्द।
४—श्री ख्वाजा अहमद अब्बास।
५—श्री दिलीपकुमार गुप्त।
६—श्री पीटर जयसिंघे।
७—श्री डी० जे० तेन्दुलकर।
८—श्रीकृष्णा कृपलानी।
६—प्रो० मुजीव।
१०—प्रो० हुमाऊँ कवीर।

इनके अतिरिक्त भारत सरकार के शिक्षा तथा सूचना मन्त्रालयों के मन्त्री भी ट्रस्ट के सदस्य होंगे।

पुस्तकालयाध्यक्षों की ट्रेनिङ्ग

पुस्तकालय-विज्ञान की शिक्षा देने के लिए 'सेंट्रल इन्स्टीट्यूट' स्थापित करने के निमित्त १० लाख रुपये की एक रकम रखी गई है।

(छ) इण्डिया आफिस लाइब्रेरी के लिए प्रयत्न

देश के विभाजन के पश्चात् भारत और पाकिस्तान दोनों ने इस

लाइब्रेरी को लेने की बात चलाई। केन्द्रीय-शिक्षा मन्त्री मौलाना आजाद इस लाइब्रेरी के समझौते के सम्बन्ध में बातचीत करने इंगलैण्ड भी गए। वे २६ जुलाई १६५५ को वापस आए। २६ जुलाई को प्रेस कान्फ्रेस में भाषण देते हुए उन्होंने बताया कि बृटिश कॉमनवेल्थ के सेक्रेटरी लार्ड होम के साथ पत्र-व्यवहार हो रहा है और अभी तक कोई निर्णय नहीं हो पाया है। लार्ड होम का विचार है कि इण्डिया आफिस लाइब्रेरी इंगलैण्ड मे ही अखण्ड रूप से पूर्ववत् बनी रहे। यों वैधानिक रूप से लाइब्रेरी की सारी सम्पति तथा ईस्ट इण्डिया कम्पनी के समस्त कागजात पर अविभाजित भारत का अधिकार है। इस सम्बन्ध में १६४८ ई० के स्वतंत्रता अधिनियम के तैयार होते समय गवर्नर जनरल ने अपनी कौंसिल मे स्पष्ट रूप से कहा था कि उक्त सामग्री भारत की सम्पत्ति है। इस प्रकार अभी यह मामला खटाई में पड़ा हुआ है। यदि ज्ञान का विभाजन हुआ अर्थात् लाइब्रेरी की सामग्री भारत और पाकिस्तान मे बँट गई तो यह एक अदूरदर्शिता होगी।

(छ) हस्तलिखित-ग्रंथों की खोज

देश के स्वाधीन होने पर भारत सरकार ने तथा प्रान्तीय सरकारों ने भी हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज करने तथा उन्हें प्राप्त करके उनको प्रकाश में लाने का कार्य भी अपनाया। सन् १६५२-५३ में भारत सरकार ने ३१ ऐतिहासिक पाण्डुलिपियों और डाकूमेंट्स विभिन्न पार्टीज से १२,००५ रु० की लागत पर प्राप्त किया। इनमें सरोजिनी नायडू की कविताएँ, अमीर खुसरो की रचनाएँ, मुगलकालीन कुछ फरमान एवं डाकूमेंट्स थे। सरकार ने अरब कवि बोस्तानी का ८०,००० रु० में क्लैसिकल पुस्तकों के ट्रांसलेशन की पाडुलिपि का कापीराइट ले कर जनता में सस्ते दामों मे वितरण की योजना तैयार की। इसमें महाभारत, भगवद्गीता,रामायण, शकुन्तला, नल-दमयन्ती और ए समरी आफ इण्डियन मैथोलोजी आदि मुख्य ग्रथ हैं जिनमे से शकुन्तला का प्रकाशन हाथ मे लिया गया। नेशनल आर्काइव्ज आफ इण्डिया ने प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों के रखने के लिए नई रासायनिक खोज की और २००० के लगभग ग्रथों को उसी रीति से रखा। सरकार ने भण्डारकर रिसर्च इंस्टीट्यूट पूना, सयाजीराव ओरियन्टल इंस्टीट्यूट बड़ौदा, कलकत्ता यूनिवर्सिटी और मैन्युस्क्रप्ट लाइब्रेरी अड्यार, मद्रास को रिसर्च स्कालरों की सुविधा के लिए मैन्युस्क्रप्ट्स की माइक्रोफिल्म कापी उधार देने की एक योजना भी स्वीकार की।

जम्मू और काश्मीर सरकार ने संस्कृत के २३६ बहुमूल्य ग्रंथ प्राप्त किए।

४६ फारसी और अरबी, १६ पाली और १६ तिब्बती। इनमें से ८६ संस्कृत के ग्रंथ प्रकाशित भी हुए। इनमें 'त्रिकशास्त्र' बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। सरकारी रिसर्च पंडित और मौलवी विभिन्न दुर्लभ ग्रंथों का सम्पादन कर रहे हैं। मलिक हसन का ११वीं शताब्दी का लिखा हुआ काश्मीर का इतिहास भी मिला है जिसमें आरंभ से १८६५ तक का इतिहास है और जिसका पता कल्हण की राजतरंगिणी से भी नहीं लग पाया था।

उत्तर प्रदेशीय सरकार ने अपने एक परिचय के द्वारा राज्य के समस्त जिलाधीशों को आदेश दिया है कि वे अपने-अपने जिले में व्यक्तियों और संस्थाओं के पास जो हस्तलिखित ग्रंथ हों, उनका विवरण सरकार को भेजें। इस ओर कार्य भी शुरू हो गया है।

नागरी प्रचारिणी सभा ने अपने कार्यकर्त्ताओं के द्वारा खोजे गए ग्रंथों की खोज रिपोर्ट प्रकाशित की। हिन्दी संग्रहालय में सुरक्षित ५००० ग्रंथों का सूची-पत्र भी सम्मेलन की ओर से सन् १९५७ में प्रकाशित किया गया। बिहार राष्ट्रभाषा प्रचार परिषद ने भी अपनी 'हस्तलिखित ग्रंथों की खोज' के दो भाग प्रकाशित किए।

कैटलागस कैटलागरम्

इन सब संस्थाओं के निजी हस्तलिखित ग्रंथों के सूचीपत्रों के अतिरिक्त एक महत्त्वपूर्ण सूचीपत्र 'कैटलागस कैटलागरम्' (प्रथम खंड) मद्रास यूनिवर्सिटी की ओर से १९४९ ई० में प्रकाशित हुआ। इसका सम्पादन मद्रास यूनिवर्सिटी में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष श्री सी० कुन्हनराजा ने किया। ३८० पृष्ठों के इस सूचीपत्र में केवल 'अ' अक्षर ही आ पाया है। इसको निम्नलिखित संस्थाओं के तथा कुछ व्यक्तिगत संग्रहों के भी हस्तलिखित ग्रंथों के सूचीपत्रों से तैयार किया गया है :—

पुस्तकालय, ओरियंटल इन्स्टीट्यूट, रिसर्च सोसाइटीज़ और मैनुस्क्रप्ट लाइब्रेरीज़

अड्यार लाइब्रेरी, अड्यार।

आनन्दाश्रम, पूना।

ऐंग्लो संस्कृत लाइब्रेरी, नवद्वीप।

एनी पब्लिक लाइब्रेरी, बेनी बाजार, सिलहट, आसाम।

अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, बीकानेर।

भण्डारकर [illegible] रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना।

भारतीय इतिहास संशोधक मंडल, पूना।
भारतीय विद्याभवन, बम्बई।
बिब्लिओथिक नेशनल, पेरिस।
बिहार ऐण्ड उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी, पटना।
बाम्बे ब्रांच आफ रॉयल एशियाटिक सोसाइटी, बम्बई।
डाहिलक्ष्मी लाइब्रेरी, नाडियाद।
दकन कालेज पोस्ट ग्रेजुएट ऐण्ड रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना।
गवर्नमेंट ओरियन्टल लाइब्रेरी, मैसूर।
ग्रेटर इंडिया सोसाइटी, कलकत्ता।
गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद।
नेशनल लाइब्रेरी, कलकत्ता।
इण्डिया आफिस, लन्दन।
जिन्द स्टेट पब्लिक लाइब्रेरी, जिन्द।
कृष्ण देवराय आन्ध्र भाषा निलय हैदराबाद, दक्षिण।
लाइब्रेरी आफ कांग्रेस, इंडिक सेक्शन, वाशिंगटन।
मद्रास गवर्नमेंट ओरियंटल मैनुस्क्रिप्ट लाइब्रेरी, मद्रास।
मदुरा तामिल संग्रहम, मदुरा।
मीमांसा विद्यालय, पूना।
ओरियन्टल इन्स्टीट्यूट बड़ौदा।
रंगपुर साहित्य परिषद, कलकत्ता।
सिंधिया ओरियन्टल इन्स्टीट्यूट, उज्जैन।
सोसाइटीज़ एशियाटिक, पेरिस।
तंजौर महाराज शरफोजी सरस्वती महल लाइब्रेरी, तंजौर।
तेलगु एकेडेमी, कोकोनाद।
ट्रावनकोर यूनिवर्सिटी ओरियन्टल मैनुस्क्रिप्ट लाइब्रेरी, ट्रिवेन्ड्रम।
ट्रिवेन्डम पब्लिक लाइब्रेरी, ट्रिवेन्डम
बंगीय साहित्य परिषद, कलकत्ता।
वारेन्द्र रिसर्च सोसाइटी, राजशाही, बंगाल।
वेदशास्त्र उत्तेजक सभा, पूना।
वारंगल हिस्टारिकल रिसर्च सोसाइटी वारंगल, हैदराबाद।

यूनिवर्सिटी, कालेज और स्कूल

आन्ध्र यूनिवर्सिटी, वाल्टेयर।

अन्नामलाई यूनिवर्सिटी, मद्रास ।
बम्बई यूनिवर्सिटी, बम्बई ।
कलकत्ता यूनिवर्सिटी, कलकत्ता ।
कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी ऐण्ड ट्रिनिटी कालेज, कैम्ब्रिज ।
ढाका यूनिवर्सिटी, ढाका ।
डी० ए० वी० कालेज, लाहौर ।
फर्गुसन कालेज, पूना ।
एच० पी० टी० कालेज, नासिक ।
नार्मल स्कूल, सिल्वर ।
उस्मानिया यूनिवर्सिटी, हैदराबाद ।
पजाब यूनिवर्सिटी, लाहौर ।
श्रीरामपुर कालेज, श्री रामपुर ।

म्युजियम और आर्कलोजी विभाग

आर्कलाजिकल विभाग, जोधपुर ।
आर्कलाजिकल सर्वे आफ इंडिया ।
कोलम्बो म्युजियम, कोलम्बो ।
कटक म्युजियम, कटक ।
इण्डियन म्युजियम, कलकत्ता ।
म्युनिस्पल म्युजियम, इलाहाबाद ।
प्रिंस आफ वेल्स म्युजियम, बम्बई ।

संस्कृत,कालेज और पाठशालाएँ

महाराजा सस्कृत कालेज, मैसूर ।
महाराजा सस्कृत कालेज, विजयानगरम् ।
प्राज्ञ पाठशाला वाय, सतारा जिला ।
रामेश्वरम् देवस्थानम् पाठशाला, मदुरा ।
सस्कृत पाठशाला राजापुर, रत्नगिरि ।
सस्कृत कालेज, उद्दीपी ।
उभय वेदान्त सस्कृत कालेज, श्री परुमबुदुर ।
वेदशास्त्र पाठशाला, पुदुकोटा ।

स्टेट्स

अजयगढ, भरतपुर, भोर, बरद्वान, कोचीन, धरमपुर, गोढवाल,

जयपुर उड़ीसा, काश्मीर, कैंम्भोर, कोटा, पुदुकोटा, उदयपुर और विजयानगरम् ।

जैन संस्थाएँ

अलक पन्नालाल दिगम्बर जैन ।
सरस्वती भवन, झालरापाटन ।
अमृत लाल मगन लाल शाह जैन विद्याशाला, अहमदाबाद ।
कासकीर्ति पंडिताचार्य जैन भंडार भुवन बेलगोला, मैसूर ।
सेंट्रल जैन लाइब्रेरी, आरा ।
दिगम्बर जैन भण्डार, दिल्ली ।
दिगम्बर जैन लाइब्रेरी, रोहतक ।
जैन मंदिर भण्डार, पानीपत ।
जैन मंदिर घिलाखली, घिरोर, मैनपुरी ।
वीरवाणी विलास जैन सिद्धान्त भवन, मूडबिद्री ।
शान्तिनाथ जैन मंदिर, अलीगंज एटा ।
स्याद्वाद जैन महाविद्यालय, भदैनी बनारस ।
राजाराम कालेज, कोल्हापुर ।

हिन्दू मत और मंदिर

अहोविलास मठ, श्रीरंगम् ।
कलालागर देवस्थानम्, मद्रास ।
काची कामकोटि शंकराचार्य मठ, कुंभकोना ।
कृष्णपुर मठ, उड्डीपी ।
नाथद्वारा, उदयपुर ।
पेशावर मठ, उड्डीपी ।
प्रतिवादि भयंकर मठ, काची ।
रंगनाथ स्वामी देवस्थानम् म्युजियम और लाइब्रेरी, श्रीरंगम् ।
शृंगेरी शंकराचार्य मठ, शृंगेरी ।
उपनिषदाश्रम मठ, काची ।

अन्य संस्थाएँ

आसाम गवर्नमेंट बुकडिपो ।
आयुर्वेद केमिकल वर्क्स, कोल्हापुर ।
मातृभूमि कार्यालय, ग्वालियर ।

निर्णय सागर प्रेस, बम्बई ।

पचाचार्य प्रेस, मैसूर ।

रेड्डी होस्टल सुल्तान बाजार, हैदराबाद ।

इससे इस बात का भी अनुमान किया जा सकता है कि भारत के कोने-कोने में विभिन्न सस्थाओं में महत्त्वपूर्ण ग्रथ बहुत बड़ी सख्या में सुरक्षित हैं और इस बात की बहुत जरूरत है कि देहातों तथा नगरों में विभिन्न व्यक्तियों के पास जो ग्रथ पड़े हैं, उनका भी उद्धार किसी सुनिश्चित योजना के अनुसार किया जाना चाहिए। इन ग्रथों से भारत के साहित्य की श्रीवृद्धि होगी और अतीत की सस्कृति पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश पड़ेगा ।

इसके अतिरिक्त निम्नलिखित सूचियाँ भी प्रकाशित हुई हैं .—

१६४७ राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रथों की खोज : विद्यापीठ, उदयपुर, सपा० अगरचन्द नाहटा ।

१६४८ कन्नड़ प्रान्तीय ताड़पत्रीय ग्रथ सूची : भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, सपा० भुजबली शास्त्री ।

१६४६ इम्पारटेंट हिस्टारिकल मैनुस्क्रप्ट्स : रघुवीर लाइब्रेरी सीतामऊ, सपा० डा० रघुवीर ।

१६५२ राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रथों की खोज . साहित्य सदन, उदयपुर : सपा० उदयसिंह भटनागर ।

१६५२ हस्तलिखित हिन्दी ग्रथों की खोज का पिछले ५० वर्षों का विवरण . नागरी प्रचारिणी सभा, काशी ।

१६५५ प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण . राष्ट्रभाषा प्रचार परिषद्, पटना : सपा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी ।

गिलगिट मैनुस्क्रप्ट के नाम से १६३१ में डा० रघुनाथ सिंह स्टेट आफिसर ने १६ पुरानी बुद्धिस्ट ग्रथों (पाली में) का पता लगाया जिसका सम्पादन डा० नलिनाथ दत्त, कलकत्ता यूनिवर्सिटी ने किया और प्रकाशित हुई । शेष को भारत सरकार के पास इन्फेक्टेड होने के कारण भेजा गया जो ५, ६ शताब्दी की लिखी हुई थीं । यह गिलगिट मैनुस्क्रप्ट्स ससार के प्राचीन ग्रथों में से हैं। १६ तिब्बती ग्रथों के सिर पैर का पता अभी विशेषज्ञ लगा रहे हैं। 'ओरिजिन ऐण्ड ग्रोथ आफ काश्मीरी म्युजिक' का भी पता लगा है । दाराशिकोह की खुद की लिखी 'सिरी अकबर' नामक पुस्तक मिली है जो बहुमूल्य है ।

गवर्नमेंट रिसर्च और पब्लिकेशन विभाग को ५००० हस्तलिखित पोथियों के संग्रह की बड़ी चिन्ता है जो उत्तर भारत का सबसे बड़ा संग्रह है। वह जम्मू रघुनाथ संस्कृत कालेज के संरक्षण में एक ट्रस्ट के अधिकार में है। जिसका नाम धर्म अर्थ ट्रस्ट है। धर्म अर्थ समिति सरकार को इसकी प्रतिलिपि भी नहीं देना चाहती।

बहादुरसिंह जी सिंधी के दान द्वारा श्री दालचन्द जी सिंघी की पुण्य-स्मृति मे सिंधी जैन ग्रंथमाला की स्थापना १६२६ ई० में हुई थी। उसकी ओर से भी श्री मुनिजिन विजय के सम्पादकत्व में ५ दुर्लभ जैन ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं तथा और भी प्रकाशित हो रहे हैं। इस ग्रथमाला के अन्तर्गत जैन आगम, दर्शन, साहित्य, इतिहास, कथात्मक विविध विषय, प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, प्राचीन राजस्थानी आदि के उपलब्ध ग्रथों को प्रकाशित करने की बड़ी सुन्दर योजना बनाई गई है।

(झ) प्रदेशों में पुस्तकालयों और संघों की प्रगति

अखिल भारतीय पुस्तकालय-संघ की प्रगति

बृटिशकाल में इस संघ के सात अधिवेशन हो चुके थे। उसके बाद अब तब इसके चार अधिवेशन हुए।

सघ का आठवाँ अधिवेशन २० से २३ जनवरी १६४६ ई० को नागपुर यूनिवर्सिटी में डा० रंगनाथन जी के सभापतित्व में हुआ। इसका उद्घाटन माननीय मगलदास पकवासा, राज्यपाल, मध्य-प्रदेश ने किया। स्वागत समिति के अध्यक्ष पंडित कुंजीलाल दुबे, वाइस चासलर, नागपुर यूनिवर्सिटी ने प्रतिनिधियों का स्वागत किया। इस अधिवेशन मे विभिन्न भागों से लगभग २०० प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

इन्दौर सेंट्रल लाइब्रेरी के निमत्रण पर संघ का नवाँ अधिवेशन ११ से १४ मई १६५१ तक श्री टी० डी० वाकनीस (क्युरेटर आफ लाइब्रेरीज, बम्बई) की अध्यक्षता मे हुआ।

उसके बाद १० वाँ अधिवेशन हैदराबाद में १ से ६ जून १६५३ को श्री एस० दास गुप्ता की अध्यक्षता में हुआ। हैदराबाद स्टेट के शिक्षा-मन्त्री श्री देवीसिंह चह्वान ने इसका उद्घाटन किया। उस्मानिया यूनिवर्सिटी के वाइस चान्सलर श्री डा० एम० भगवन्तम स्वागतसमिति के स्वागताध्यक्ष थे।

संघ का ग्यारहवाँ अधिवेशन ७ अप्रैल से १० अप्रैल १९५६ तक कलकत्ता में श्री एस० बशीरुद्दीन साहब, लाइब्रेरियन, अलीगढ़ यूनिवर्सिटी की अध्यक्षता में हुआ। कलकत्ता यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर श्री एन० के० सिद्धान्त स्वागताध्यक्ष थे। अधिवेशन का उद्घाटन पश्चिमी बंगाल के राज्यपाल श्री एच० के० मुकर्जी महोदय ने किया।

इन सभी अधिवेशनों में कुछ निबन्ध पढे जाते रहे और उन पर विचार-विनिमय होता रहा तथा अन्य सामयिक बातों की चर्चा हुआ करती थी।

इस समय श्री बी० एस० केशवन संघ के अध्यक्ष और श्री पी० सी० बोस प्रधान मन्त्री हैं।

इण्डियन लाइब्रेरी डाइरेक्टरी

'डाइरेक्टरी आफ इण्डियन लाइब्रेरीज़' का प्रथम संस्करण सन् १९३८ ई० में प्रकाशित हुआ। इसका सम्पादन एक समिति के द्वारा किया गया। द्वितीय संस्करण सन् १९४४ ई० में प्रकाशित हुआ। इसकी तैयारी श्री आर० गोपालन, श्री सन्तराम भाटिया, श्री राय मथुराप्रसाद, श्री एस० बशीरुद्दीन, खान बहादुर के० एम० असादुल्ला, सरदार सोहन सिंह और श्री वाई० एम० मूले ने की। तृतीय संस्करण की तैयारी के लिए अखिल भारतीय पुस्तकालय-संघ की कार्य समिति ने १९५० में निश्चय किया। प्रश्नावली भेजी गई। उसकी गति मन्द रही किन्तु १९५१ की जुलाई में यह निश्चय किया गया कि प्राप्त सूचनाओं के आधार पर बिना देर किए तृतीय संस्करण छाप दिया जाय। फलतः १९५१ में यह डाइरेक्टरी प्रकाशित की गई। इसका सम्पादन डा० रंगनाथन जी, श्री एस० दास गुप्ता एवं श्री भगनानन्द जी ने किया। इसमें ६ अध्याय हैं :—

प्रथम अध्याय में लाइब्रेरी की डाइरेक्टरी है। प्रत्येक पुस्तकालय के विषय में सूचनाएँ टेबुलर फार्म में दी गई हैं।

द्वितीय अध्याय में पुस्तकालयों की भौगोलिक तरतीब दी गई है।

तृतीय अध्याय में पुस्तकालयों का उनके रूप (टाइप) के अनुसार विभाजन दिया गया है।

चौथे अध्याय में पुस्तकालय-संघों के सम्बन्ध में सूचनाएँ दी गई हैं।

पाँचवें अध्याय में पुस्तकालय-विज्ञान के स्कूलों का परिचय है।

छठे अध्याय में भारत में प्रकाशित पुस्तकालय-साहित्य को वर्गीकृत करके दिया गया है।

सातवें अध्याय में भारत के लाइब्रेरी ऐसोसियेशन के कुछ व्यक्तियों के सम्बन्ध में जीवन-सम्बन्धी संक्षिप्त परिचय दिए गए हैं।

यद्यपि इस डाइरेक्टरी के सम्बन्ध में भेजी गई प्रश्नावली का उत्तर लगभग एक तिहाई पुस्तकालयों, कुछ पुस्तकालय संघों तथा लाइब्रेरी ऐसोसियेशन के सदस्यों ने नहीं भेजे, फिर भी डाइरेक्टरी काफी उपयोगी है।

संघ ने इनके अतिरिक्त निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित कीं :—

१९५० डा० एस० आर० रंगनाथन : लाइब्रेरी टूर १९४८ यूरोप एण्ड अमेरिका. इम्प्रेशन एण्ड रिफ्लेक्शन।

१९५० डा० एस० आर० रंगनाथन : ग्रन्थ अध्ययनार्थ हैं (अनु० श्री [illegible] लाल नागर)।

१९५१ " " " : पब्लिक लाइब्रेरी प्रोविजन एण्ड डाक्यूमेन्टेशन प्रोब्लम्स।

१९५१ " और के० एम० शिवरामन : लाइब्रेरी मैनुअल।

१९५१ " " " : ग्रन्थालय प्रक्रिया (अनु० श्री [illegible] लाल नागर)।

इनके अतिरिक्त १९४९ से 'अ[illegible] . 'ग्रंथालय' की पत्रिकाओं का प्रकाशन होता रहा। अक्टूबर [illegible] से 'अबगिला' के स्थान पर 'इण्डियन लाइब्रेरी जरनल' नामक [illegible]काशन शुरू किया गया।

उत्तर प्रदेश

इस काल में उत्तर प्रदेश सर[illegible]कालयों के विकास की ओर विशेष ध्यान दिया। सरकार नगर [illegible] अच्छे पुस्तकालयों को वार्षिक अनुदान दे कर उन्हें पुस्तकालय-सेवा के लिए प्रोत्साहित करती रही। सन् १९५५-५६ के बजट में ६२ पुस्तकालयों को १७,००० रु० अनुदान दिया गया। १९५६-५७ के बजट में इस धन में वृद्धि कर दी गई और ८८ पुस्तकालयों को २५,००० रु० अनुदान दिया गया। देहरादून में अन्धों के लिए भी एक पुस्तकालय स्थापित किया गया।

प्रान्तीय केन्द्रीय पुस्तकालय

उत्तर-प्रदेश सरकार ने इलाहाबाद में दिसम्बर १९४९ में केन्द्रीय पुस्त-

कालय की स्थापना की। इसमें प्रारम्भ में पुस्तकों का संग्रह प्रेस ऐण्ड रजिस्ट्रेशन आफ बुक्स ऐक्ट के अन्तर्गत प्राप्त पुस्तकों और शिक्षा से सम्बन्धित विषयों का था। इस पुस्तकालय को प्रथम पचवर्षीय योजना के अन्तर्गत किसी प्रकार का विशेष प्रोत्साहन नहीं मिल सका। अब द्वितीय पचवर्षीय योजना के अन्तर्गत इस पुस्तकालय के विकास की योजना बनाई गई है। साथ ही यह भी निश्चय किया गया है कि इससे सम्बद्ध ६ जिला पुस्तकालय स्थापित किए जायँ। ये पुस्तकालय मेरठ, मथुरा, आगरा, बरेली, कानपुर, अलमोड़ा, झाँसी, गोरखपुर और वाराणसी में स्थापित किए जा रहे हैं। इनके लिए विशेष रूप से भवनों के निर्माण और साज-सामान आदि के सग्रह की भी व्यवस्था हो गई है। समस्त योजना में पुस्तकों, कर्मचारियों और भवनों आदि पर लगभग १८ लाख रुपया व्यय होगा। इसमें से केन्द्रीय पुस्तकालय भवन पर ४ लाख, प्रत्येक जिला पुस्तकालय भवन पर ३० हजार, केन्द्रीय पुस्तकालय के फर्नीचर आदि सामग्री पर १ लाख २० हजार तथा प्रति जिला पुस्तकालय की सामग्री एव पुस्तकों आदि पर १० हजार रुपये व्यय होंगे। योजना के प्रथम वर्ष (१९५६–५७) में भवन निर्माण के कार्य में सन्तोषजनक प्रगति हुई है। शनैः शनैः पुस्तकालय-सम्बन्धी आवश्यक सामग्री भी सग्रहीत कर ली गई है।

बाल पुस्तकालय विभाग, पुस्तकालयाध्यक्षों का प्रशिक्षण, जिला पुस्तकालयों द्वारा पुस्तकों का वितरण आदि केन्द्रीय पुस्तकालय की प्रमुख विशेषताएँ होंगी। प्रशिक्षण योजना के अन्तर्गत प्रति वर्ष २० छात्रों को ट्रेण्ड करने का प्रबन्ध किया जायगा। प्रशिक्षण की रूपरेखा अभी सरकार के विचाराधीन है। इस केन्द्रीय पुस्तकालय में अब तक १ लाख २५ हजार पुस्तकें सग्रहीत हो चुकी हैं। श्री मगनानन्द जी इस पुस्तकालय के अध्यक्ष हैं।

शिक्षा-प्रसार विभाग

स्वाधीनता के पश्चात् इस विभाग के कार्यों में उत्तरोत्तर वृद्धि होती रही। विभाग की ओर से साक्षरता को बढ़ाने और उसे स्थायित्व प्रदान करने के लिए १३१७ पुस्तकालय स्थापित हैं जिनमें से ४० केवल महिलाओं के लिए हैं। इनके अतिरिक्त ३६०० वाचनालय भी हैं। इन पुस्तकालयों और वाचनालयों को प्रति वर्ष विभाग द्वारा उपयोगी एव सरल साहित्य पहुँचाया जाता है। इन पुस्तकालयों से ग्रामीण लोग पुस्तकें घर ले जा कर पढ़ते हैं। वाच-

नालयों मे लोग आ कर समाचार-पत्र और पत्रिकाओं द्वारा लाभ उठाते हैं। कुछ वर्षों की प्रगति का विवरण इस प्रकार है :—

वर्ष	स्वीकृत धन पुस्तकों के लिए	समाचार-पत्र पत्रिकाओं के लिए	निर्गत पुस्तकें	वाचनालय के उपयोगकर्त्ताओं की संख्या
१९५३-५४	३४,१०२=)॥।	२३,७२५।≡)५	८,३८,६२७	८,७६,८५३
१९५४-५५	७६,३१७)	३६,७६७।≡)	७,५३,१७८	६,२७,६६४
१९५५-५६	८४,०००)	४८,०००)	७,५३,१७८	६,२७,६६४

अनुदान

उपर्युक्त विभागीय पुस्तकालयों के अतिरिक्त इस विभाग द्वारा सुव्यवस्थित ग्रामीण पुस्तकालयों को अनुदान भी दिया जाता है। इसका विवरण इस प्रकार है :—

वर्ष	ग्रामीण पुस्तकालय	अनुदान की रकम
१९५४	२०७	७,४७६ रु०
१९५५	२०८	७,६३२ रु०
१९५६	१९७	७,३५६ रु०

विभागीय पुस्तकालय

शिक्षा-प्रसार विभाग के कार्यालय में भी एक सुव्यवस्थित पुस्तकालय है जिसमें विविध विषयों की २६०० पुस्तकें संगृहीत हैं।

अन्य कार्य

इधर इस विभाग में एक चलचित्र केन्द्र स्थापित हुआ है जिसके द्वारा दृश्य श्रव्य साधनों का उत्पादन किया जाता है और गाँव तथा नगर की शिक्षा संस्थाओं एवं ग्रामीण क्षेत्रों में चलचित्र प्रदर्शन की भी व्यवस्था की

जाती है। विभाग के पास पाँच प्रचार वाहन हैं जो रेडियो, ग्रामोफोन, चित्र-पट्टी तथा चलचित्र-प्रदर्शन चित्रों से युक्त हैं।

इनके अतिरिक्त यह विभाग ऐसे अनेक आयोजन करता रहता है जिससे शिक्षा प्रचार में सहायता मिल सके,जैसे प्रौढ़ साहित्य का प्रकाशन, सेमिनार, सामाजिक शिक्षा सप्ताह एव प्रदर्शनी आदि। इस समय श्री द्वारिकाप्रसाद जी माहेश्वरी शिक्षा-प्रसार अधिकारी हैं।

पुस्तकालय-विज्ञान की शिक्षा

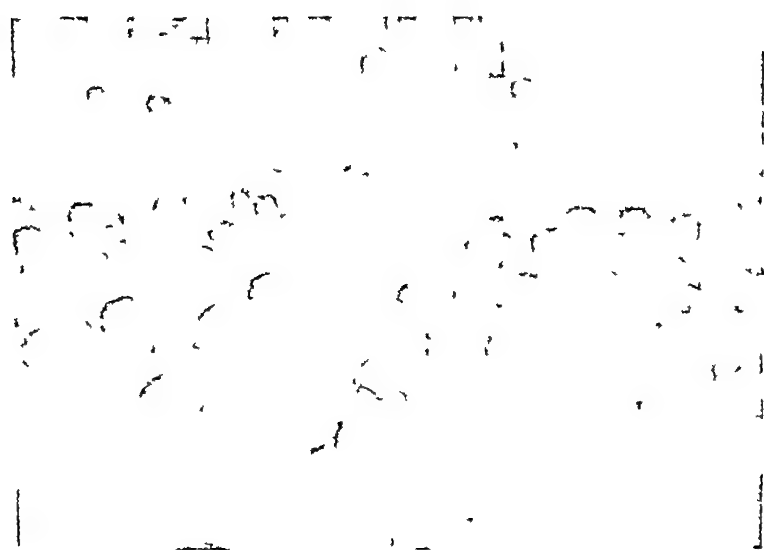
इस प्रदेश में १९५१ ई० से अलीगढ़ विश्वविद्यालय में श्री एस० वशीरुद्दीन साहब के प्रयत्नों से एक 'सर्टिफिकेट कोर्स' चालू किया गया। यह कोर्स सफलतापूर्वक चल रहा है।

काशी विश्वविद्यालय में सन् १९५६ से डा० जगदीशशरण शर्मा पुस्तकालय-विज्ञान-प्रशिक्षण के अध्यक्ष नियुक्त किए गए हैं। अतः इस प्रदेश में पुस्तकालय-विज्ञान के प्रशिक्षण का यह केन्द्र अब अधिक लोकप्रिय हो रहा है।

पुस्तकालय-संघ

उत्तर प्रदेश में नए पुस्तकालय-सघ की स्थापना अगस्त १९५६ में हुई। इसका उद्‌घाटन प्रदेश के मुख्य मत्री डा० सम्पूर्णानन्द जी ने किया। श्री राधाकुमुद मुकर्जी, वाइस चान्सलर, लखनऊ यूनिवर्सिटी इसके स्वागताध्यक्ष और श्री एस० बशीरुद्दीन साहब (अलीगढ़ यूनिवर्सिटी) अधिवेशन के सभापति थे। इसका सगठन हो गया है और आशा है निकट भविष्य में इसके द्वारा प्रान्त में पुस्तकालय आन्दोलन को बहुत वल मिलेगा। इस समय श्री सी० जी० विश्वनाथन (वनारस) सभापति और श्री के० कुमार लाइब्रेरियन, अमीरुद्दौला पब्लिक लाइब्रेरी प्रधान मत्री हैं।

प्रान्तीय सघ के अतिरिक्त कई जिलों में जिला पुस्तकालय-सघ भी स्थापित हो गए हैं। इनमें से 'इलाहाबाद पुस्तकालय सघ' उल्लेखनीय है। इसकी स्थापना प्रयाग विश्वविद्यालय के आनरेरी लाइब्रेरियन डा० वनारसीप्रसाद सक्सेना तथा अखिल भारतीय पुस्तकालय-सघ के उपाध्यक्ष श्री एस० वशीरुद्दीन जी की प्रेरणा से १९५६ ई० में हुई। यह एक रजिस्टर्ड सस्था है। इसने अपने जिले में पुस्तक-प्रदर्शनी, भाषण, लेख और प्रचार द्वारा काफी जागृति पैदा कर दी है। इस सघ का वार्षिकोत्सव २० जनवरी १९५७ को श्री एस० वशीरुद्दीन साहब की अध्यक्षता में मनाया गया। इस समय श्री प्रो० एस० सी० देव सभापति और श्री द्वारकाप्रसाद शास्त्री प्रधान मत्री हैं।



विहार राज्य पुस्तकालय-मघ के पूर्णिया अधिवेशन का एक दृश्य
नेशनल लाइब्रेरियन श्री बी० एम० केशवन भाषण देते हुए

बिहार

बिहार सरकार ने पुस्तकालय-विकास की एक योजना स्वीकार करके पुस्तकालयों की देख-रेख के लिए एक अलग 'पुस्तकालय विभाग' स्थापित किया। सरकार ने पटना स्थित सिनहा लाइब्रेरी को 'केन्द्रीय राज्य पुस्तकालय' घोषित किया। प्रान्त के प्रत्येक जिले के हेडक्वाटर में 'जिला केन्द्रीय पुस्त-कालय' स्थापित किये। पुस्तकालयों को राज्य सरकार ने ग्राण्ट देने में बहुत उदारता का परिचय दिया। १९४९ ई० में पुस्तकालयों को एक लाख का आवर्त्तक और तीन लाख का अनावर्त्तक अनुदान (ग्राण्ट) दिया गया। मद्रास की भाँति अपने प्रदेश में भी पुस्तकालय-अधिनियम लागू करने का निश्चय किया और इसके लिए एक कमेटी भी बनाई। पटना में पाँच बाल पुस्तकालय स्थापित किये गए। समाज-शिक्षा विभाग द्वारा तीन सौ भ्रमण-शील पुस्तकालय संचालित किये गये। सरकार द्वारा प्रति वर्ष ६०० हाई स्कूल ५३५ बेसिक स्कूल और लगभग २०,००० मिडिल अपर तथा लोअर स्कूलों के पुस्तकालयों को भी ग्राण्ट देने की व्यवस्था की गई। अपने राज्य से पाँच पुस्तकालयाध्यक्षों को 'दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी' में वहाँ की कार्य-पद्धति का अध्ययन करने के लिये भेजा। पुस्तकालय-अधीक्षक प्रो० नवलकिशोर जी गौड़ हैं।

बिहार राज्य पुस्तकालय संघ

बृटिशकाल में इस संघ के तीन अधिवेशन हो चुके थे। उसके बाद संघ के निम्नलिखित अधिवेशन हुए :—

चौथा	१९४८	दरभङ्गा	श्री चडेश्वरप्रसाद सिंह
पाँचवाँ	१९५१	भागलपुर	" जगन्नाथप्रसाद मिश्र
छटाँ	१९५३	रहीमपुर	" जगन्नाथप्रसाद मिश्र
सातवा	१९५५	पूर्णिया	" जगन्नाथप्रसाद मिश्र
आठवाँ	१९५६	गया	" देवव्रत शास्त्री

ऊपर के पाँचवें अधिवेशन में संघ का विधान स्वीकृत हुआ। उसके बाद संघ का काम तेजी से बढ़ा। १९५२ तक लगभग ३००० पुस्तकालय संघ से सम्बद्ध हो गए। संघ के जिला पुस्तकालय संघ प्रत्येक जिले में स्थापित हुए और कुछ सबडिविजनल संघ भी। संघ के कार्यकर्त्ताओं में श्री अनुज शास्त्री, श्री परमानन्द दोषी, श्री रुद्रदेवनारायण सिनहा, श्री प्रभुनारायण गौड़ और पं० जगन्नाथप्रसाद मिश्र के नाम उल्लेखनीय हैं।

पुस्तकालयाध्यक्षों का प्रशिक्षण

पूर्णिया अधिवेशन के बाद प्रशिक्षण शिविर के दो सत्र हुए। १९५४ में एक महीने का १८ जून १९५५ से और दूसरा २० फरवरी १९५६ से। पहले में ३० प्रशिक्षणार्थी पास हुए और दूसरे में २२ जिनमें ५ महिलाएँ भी थीं। इस मद में सरकार ने ३०००) देने की व्यवस्था की। सिनहा लाइब्रेरी के लाइब्रेरियन श्री प्रभु नारायण गौड़ ने दो छात्राओं को १०-१० रुपये की छात्रवृत्तियाँ भी दीं।

सरकारी सहायता

सघ को बिहार राज्य सरकार ने काफी प्रोत्साहन दिया। कार्यालय चलाने को ३०००) वार्षिक सहायता देना स्वीकार किया। राँची, पटना, दरभगा, मुँगेर और पूर्णिया के जिला पुस्तकालय सघों को ३०,००० रु० के एक-एक मोटरवान दिये गए।

संघ के क्रियाकलाप

सघ ने कई महत्त्वपूर्ण कार्य किए। 'पुस्तकालय' नामक एक मासिक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया। पुस्तकालय कर्मचारियों के ट्रेनिङ्ग की भी व्यवस्था की। इसके लिए उसने 'प्रशिक्षण शिविर' चलाया जिसके लिए सरकार ने पहली बार पाँच सौ रुपये की सहायता दी। उसके बाद १९५६ में पुस्तकालय-कर्मचारियों की ट्रेनिङ्ग के लिए २५,००० की सहायता बिहार सरकार ने दी।

बिहार में प्रथम पंचवर्षीय योजना

प्रथम पचवर्षीय योजना में सरकार ने लगभग ३८ लाख रुपया खर्च किया। राज्य के ५ जिलों में जिला पुस्तकालय स्थापित हुए। प्रत्येक सब-डिविजन में एक-एक राज्य पुस्तकालय खोलने के लिए तीन लाख ६६ हजार रुपया स्वीकार किया गया। सिनहा लाइब्रेरी को ४२,००० की आवर्तक और २ लाख ३० हजार की अनावर्त्तक ग्राण्ट की व्यवस्था की गई है। इसके हाते में एक बाल पुस्तकालय और एक अजायब घर बनाने का निश्चय हो चुका है। उसके भवन के लिए १ लाख तथा पुस्तक तथा अन्य सामानों के लिए ५० हजार रुपया खर्च होने जा रहा है। बच्चों के लिये अब तक १० पुस्तकालय थे जिन पर तीस हजार अनावर्त्तक और ९४००) आवर्त्तक खर्च होता रहा है। अब सात और पुस्तकालय खुले, जिन पर २१००) अनावर्त्तक और ६८५०) आवर्त्तक रूप मे खर्च होगा।



जिलानुसार पुस्तकालयों की ग्राण्ट का विवरण
(सन् १९५६-५७)

जिले	साधारण	इफिसिएन्सी	स्पेशल	योग
१. पटना	१२,०००	३,७५०	·	१५,७५०
२ गया	९,०००	१,५००		१०,५००
३. शाहाबाद	८,२५०	१,५००	...	९,७५०
४ भागलपुर	७,५००	२,२५०	...	९,७५०
५. मुँगेर	११,२५०	३,०००	·	१४,२५०
६. सहरसा	३,०००	७५०	...	५,२५०
७. सथाल परगना	३,७५०	१,५००	....	६,७५०
८. पूर्णिया	५,२००	७५०	१,५००	८,२५०
९. मुजफ्फरपुर	१०,५००	३,०००	२२,५०	१३,५००
१०. दरभगा	९,०००	१,५००	..	१०,५००
११. सारन	९,०००	१,५००	...	१०,५००
१२. चंपारन	५,२५०	१५००	२२५०	९०००
१३. राची	२,२५०	१५००	...	५२५०
१४. हजारी बाग	२,२५०	१५००	१५००	५२५०
१५. सिंघभूम	२,२५०	१५००	१५००	५२५०
१६. मानभूम	२,२५०	१५००	१५००	५२५०
१७. पलामू	२,२५०	१५००	१५००	५२५०
	१,०५,०००	३०,०००	१५,०००	१,५०,०००

बिहार सरकार पहिली पंचवर्षीय योजना मे १ लाख की जो ग्राट सार्वजनिक पुस्तकालयों को देती थी, उसे द्वितीय पंचवर्षीय योजना में दो लाख कर दिया और पिछड़े हुए जिलों के पुस्तकालयों को तीव्र गति से बढ़ने के लिए कुछ स्पेशल ग्राण्ट भी दी। यह ग्राण्ट प्रत्येक जिले में पुस्तकालयों के चार ग्रेड बना कर दी गई।

(क) १००) से १५०) प्रति पुस्तकालय।
(ख) ७०) से १००) ,, ,,
(ग) ४०) से ७०) ,, ,,
(घ) ३५) से ५०) ,, ,,

पुस्तकालय संदेश

श्रीकृष्ण खण्डेलवाल महोदय ने अप्रैल १६५२ ई० में पटना से 'पुस्तकालय सदेश' नामक मासिक पत्रिका का सम्पादन और प्रकाशन शुरू किया। इस पत्रिका ने बिहार में ही नहीं अन्य हिन्दी भाषा भाषी प्रान्तों में भी पुस्तकालय-आन्दोलन में बहुत योग दिया। समय-समय पर इस पत्रिका के आकर्षक विशेषाङ्क भी प्रकाशित हुए। सभवतः अब इसका प्रकाशन बन्द हो गया है।

अ० भा० पुस्तकालय-विज्ञान परिषद्

हिन्दी के माध्यम से पुस्तकालय-विज्ञान की शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था करने के निमित्त बिहार में 'पुस्तकालय-विज्ञान शिक्षा परिषद' नामक सस्था की स्थापना भी हुई। इस परिषद ने अखिल भारतीय पैमाने पर 'पुस्तकालय-प्रवेश' और 'पुस्तकालय-कला भूषण' परीक्षाएँ सचालित की।

नालन्द का पुस्तकालय

भारत का गौरव नालन्द का प्राचीन पुस्तकालय इसी बिहार प्रदेश में था जिसकी चर्चा 'बौद्धकालीन पुस्तकालय' में की गई है। केन्द्रीय सरकार ने बिहार राज्य सरकार को ३२०७६ रु० नालन्द में पुस्तकालय भवन को पूरा करने के लिए दिया जो कि 'इस्टीच्यूट आफ रिसर्च ऐण्ड पोस्ट ग्रेजुएट स्टडीज फार पाली ऐण्ड बुद्धिस्ट लर्निङ्ग' से संलग्न है।

पंजाब

देश के विभाजन के बाद पूर्वी पजाब का एक अलग प्रान्त बना तो इसमें पुस्तकालयों को नये सिरे से सगठित करने की आवश्यकता पड़ी। इस प्रदेश की राजधानी चण्डीगढ़ बनाई गई। चण्डीगढ में सेंट्रल स्टेट लाइब्रेरी, पजाब सरकार शिक्षा विभाग द्वारा अस्थायी तौर पर १५-१०-५५ को पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत स्थापित हुई। निश्चय किया गया कि इस पुस्तकालय में ओपेन एक्सेस सिस्टम रहे। लेंडिङ्ग और रिफ्रेंस विभागों के साथ-साथ दृश्य-श्रव्य उपकरण तथा उत्तम बाल-कक्ष की व्यवस्था की जाय। सन् १६५५-५६ में पजाब प्रदेश में पुस्तकालय-विस्तार योजना के लिए केन्द्रीय सरकार ने दो लाख रुपया दिया। फिलहाल यह सेंट्रल लाइब्रेरी गवर्नमेंट कालेज, चंडीगढ़ में रखी गई और इसको सगठित करने का काम शुरू किया गया। श्री बलवन्त सिंह गुजराती बी० ए०, ए० एल० ए० लाइब्रेरियन और इन्द्रसिंह एम० ए० तथा श्रीमती

राजेन्द्र चोपड़ा बी० ए० सहायक लाइब्रेरियन के पद पर नियुक्त किये गए। पुस्तकालय के लिए २६७४६ पुस्तकें खरीदी गई।

सन् १९४८ के पुस्तकालय-आन्दोलन से पूर्वी पंजाब में ७०० से अधिक पुस्तकालय तथा वाचनालयों को सरकार के विभिन्न विभागों के अन्तर्गत संगठित किया गया। इनमें से १५० नगर में हैं तथा शेष गाँवों में हैं।

पुस्तकालय-संघ

'पूर्वी पंजाब पुस्तकालय संघ' ने अपना प्रथम अधिवेशन अक्टूबर १९४८ ई० को शिमला में किया। इसमें प्रैक्टिकल लाइब्रेरी ट्रेनिङ्ग, पुस्तक-प्रदर्शनी, प्रौढ़ शिक्षा, पाठक परामर्श सेवा, समाचार-पत्रों की प्रदर्शनी आदि अनेक आयोजन किये गये।

संघ का दूसरा अधिवेशन गवर्नमेंट ट्रेनिङ्ग कालेज (वीमेंस), शिमला में १६ नवम्बर से २० नवम्बर १९४९ को हुआ। इसका उद्घाटन सरदार नरोत्तम सिंह जी शिक्षा मन्त्री ने किया। स्वागताध्यक्ष शिक्षा संचालक श्री के० सी० खन्ना महोदय थे। प्रो० डी० सी० शर्मा ने अपना भाषण पढ़ा। ५,००० से अधिक विभिन्न विषयों की पुस्तकें प्रदर्शित की गई। हजारों दर्शकों ने इससे लाभ उठाया।

संघ ने २७ से ३० अक्टूबर १९५० को वाई० एम० सी० ए० हाल शिमला में पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया। इसका उद्घाटन माननीय चीफ जस्टिस हरिक, पूर्वी पञ्जाब हाईकोर्ट ने किया।

१५ जून १९५१ ई० को संघ ने चौथी पुस्तक प्रदर्शनी वाई० एम० सी० ए० के हाल में शिमला में आयोजित की। इसका उद्घाटन जी०डी०खासला महोदय आई० सी० एस० पञ्जाब हाईकोर्ट ने किया। स्वागताध्यक्ष बैरिस्टर टेकचन्द जी थे। ६००० पुस्तकें प्रदर्शित की गई। इस आयोजन के लिये संगठन मन्त्री श्री सन्तराम भाटिया जी तथा जी० एल० तेग्हान महोदय को पुस्तक-प्रेमियों ने धन्यवाद दिया। २० से २४ मार्च १९५२ में संघ ने पाँचवीं पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन तथा कुछ अन्य आयोजन अपने वार्षिक अधिवेशन के साथ साथ किये।

संघ की ओर से पुस्तक-प्रदर्शनी और लाइब्रेरी सेमीनार का आयोजन ८ से १२ फरवरी १९५४ में जालन्धर में गवर्नमेंट ट्रेनिङ्ग कालेज के हाल में

किया गया। इस पुस्तक-मेला के अध्यक्ष पूर्वी पंजाब के शिक्षा-संचालक डाक्टर ए० सी० जोशी महोदय थे। ६ फरवरी १६५४ को लाइब्रेरी सेमीनार का उद्घाटन नेशनल लाइब्रेरियन श्री बी० एस० केशवन ने किया।

कलचरल फेस्टिवल

भारत में अपने ढंग का यह पहला 'कलचरल फेस्टिवल' सरहिन्द क्लब, अम्बाला कैन्टोन्मेंट में १६५१ ई० में २८ नवम्बर से ३ दिसम्बर तक आयोजित किया गया। श्री यादवेन्द्रसिंह बहादुर, राजप्रमुख पेप्सू ने इसका उद्घाटन किया। इसका आयोजन पुस्तकालयों और वाचनालयों की सहायता के लिए किया गया था। इसमें श्री सतराम जी भाटिया ने पुस्तक-प्रदर्शनी का आयोजन किया जिसका उद्घाटन श्री पी० एन० थापर, आई० सी० एस० फाइनेंस कमिश्नर, पंजाब ने किया। इसमें विभिन्न विषयों की ४००० पुस्तकें प्रदर्शित की गईं। बाल-साहित्य का प्रदर्शन बहुत ही सफल रहा। लगभग दो लाख व्यक्तियों ने इसको देखा और लाभ उठाया।

इण्डियन लाइब्रेरियन

श्री संतराम भाटिया महोदय विभाजन के बाद से 'इण्डियन लाइब्रेरियन' पत्रिका को शिमला से प्रकाशित करते रहे। उसके बाद अब जालधर सिटी से इसका प्रकाशन सफलतापूर्वक कर रहे हैं। अंग्रेजी में भारतीय पुस्तकालय जगत में यह अच्छी पत्रिका मानी जाती है और इसका बहुत आदर है।

पेप्सू

१ फरवरी १६५५ ई० को सेंट्रल पब्लिक लाइब्रेरी, पेप्सू का शिलान्यास मुख्य मत्री श्री वृषभानु जी द्वारा पटियाला मे हुआ। यह पुस्तकालय भारत के शिक्षा-विभाग की योजना का एक अङ्ग है। इसमें लाइब्रेरी ट्रेनिङ्ग क्लास तथा बाल पुस्तकालय की भी व्यवस्था की जायगी।

पेप्सू पुस्तकालय-संघ

'पेप्सू पुस्तकालय संघ', 'पूर्वी पंजाब पुस्तकालय सघ' के साथ मिल गया और इसके सभापति श्री बलवन्त सिंह गुजराती, प्रधान मन्त्री श्री जी० एल० तेरहान और सगठन मन्त्री श्री सतराम भाटिया बनाए गए।

दिल्ली

देश के विभाजन के बाद भारत-सघ की राजधानी दिल्ली ही रही इसमें शासन आदि की सुविधा के लिए अनेक नए विभाग एवं कार्यालय

खुले, पुराने विभागों में विस्तार किया गया। इन विभागों और कार्यालयों के साथ-साथ पुस्तकालयों की स्थापना हुई। इस प्रकार दिल्ली के पुस्तकालय-विकास को पाँच भागों में बाँटा जा सकता है :—

१—नए पुस्तकालयों की स्थापना।

२—पुराने पुस्तकालयों का विस्तार।

३—पुस्तकालय सम्बंधी विशेष चर्चायें और आयोजन।

४—पुस्तकालय-संघ की गतिविधि।

५—पुस्तकालय-विज्ञान की शिक्षा-व्यवस्था।

१-नए पुस्तकालयों की स्थापना

स्वाधीनता के बाद सरकार ने दिल्ली में जो सबसे महत्त्वपूर्ण पुस्तकालय स्थापित किया, उसका नाम है, 'दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी'। इसका परिचय पीछे दिया जा चुका है।

फिरका लाइब्रेरी

फिरका डवलपमेंट डिपार्टमेंट द्वारा २५ सेंट्रल लाइब्रेरी बनाने के लिए २५ फिरकों में निश्चय किया गया। फिरका के हर गाँव में शाखा कार्यालय खोलने की योजना बनाई गई। प्राथमिक पाठशालाओं के हेडमास्टरों के चार्ज में वे पुस्तकालय शुरू में रहें, ऐसा निश्चय किया गया। सरकार ने फिरका में हर एक सेंट्रल लाइब्रेरी को ३१८०), ५००) पुस्तकों के लिए, २१०) अन्य खर्च के लिए स्वीकार किया। २४-३५रु० मासिक ग्रेड पर लाइब्रेरियन की स्वीकृति हुई और उनको एक साइकिल प्यून भी दिया गया। यह योजना जनवरी १९४८ में बनी।

२—पुराने पुस्तकालयों का विस्तार

(क) पार्लियामेंट लाइब्रेरी—इस लाइब्रेरी में प्रतिवर्ष ५,००० पुस्तकें बढ़ने लगीं और धीरे-धीरे ६०,००० पुस्तकें ३००,००० सरकारी प्रकाशन और डाकूमेंट्स और ५०,००० डिबेट्स की प्रतियां हो गईं। १९५१ में इसका बजट ३०,००० रु० था।

शिक्षा विभाग की सेंट्रल एजुकेशनल लाइब्रेरी का संगठन किया गया। श्री आर० गोपालन के अवकाश ग्रहण करने पर उनके स्थान पर श्री एन० एम० केतकर महोदय की नियुक्ति की गई।

३—पुस्तकालय-सम्बंधी विशेष आयोजन

यों तो पुस्तकालय-सम्बधी अनेक आयोजन दिल्ली में हुए किन्तु उनमें से दो आयोजन विषय प्रसिद्ध हैं :—

(अ) यूनेस्को का अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार ।

(ब) इण्डियन एडल्ट एजुकेशनल एसोसिएशन की ओर से उसका छठाँ सेमिनार ।

(अ) यूनेस्कों सेमिनार का विवरण पीछे दिया जा चुका है ।

(ब) भारतीय पुस्तकालय और सामाजिक शिक्षा विषय पर विचारार्थ इस सेमिनार का आयोजन २६ सितम्बर से ५ अक्टूबर १९५५ को किया गया । इसका उद्‌घाटन करते हुए प० गोविन्द बल्लभ पत ने कहा कि 'साक्षर और नव-साक्षरों को शिक्षित करने का कार्य जारी रखने की आवश्यकता है । इन पुस्तकालयों में पुस्तकों के चुनाव पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये जिससे कि उनके द्वारा प्रसारित ज्ञान अपूर्ण न हो' । बम्बई लाइब्रेरीज के क्युरेटर श्री टी० डी० वाकनीस ने भी इसमें भाग लिया । इसका निर्देशन भारत सरकार के असिस्टेन्ट एजुकेशनल ऐडवाइजर सरदार सोहन सिंह जी ने किया ।

इस सेमिनार में निम्नलिखित ६ समस्याओं पर विचार किया गया .—

१ किन तरीकों से पुस्तकालय भारत में साधारण नव-निर्माण के लिए योगदान कर सकते हैं ।

२ सामाजिक शिक्षा और पुस्तकालयों के बीच किस प्रकार का सम्बन्ध है ?

३. नव-भारत का पुस्तकालयीय ढाँचा ।

४. लाइब्रेरी ट्रेनिंग ।

५. लाइब्रेरी कानून ।

६. लाइब्रेरी साहित्य ।

पहली समस्या पर सेमिनार ने मत व्यक्त किया कि पुस्तकालय, व्यक्तियों, दलों, और सस्थाओं के साथ काम करते हुए उत्तम साहित्य को उभाड़ कर, अपेक्षाकृत अच्छी प्रकार की साक्षरता को प्रोत्साहन दे कर वर्त्तमान नव-निर्माण में सहयोग दे सकते हैं ।

द्वितीय समस्या पर यह मत व्यक्त किया गया कि सामाजिक-शिक्षा और पुस्तकालय-सगठन में घनिष्ट सबंध है । इसमें पुनरुक्ति कार्य से बचना

चाहिए। यह ठीक होगा कि पुस्तकालय और सामाजिक शिक्षा दोनों एक ही शिक्षा विभाग के अन्तर्गत रहें।

तीसरी समस्या पर सिफारिश की गयी कि भारत सरकार पुस्तकालय-कमीशन बनावे जो भारत के पुस्तकालयों की वर्त्तमान स्थिति की जाँच-पड़ताल करे और भविष्य के लिए एक लाइब्रेरी कानून की सिफारिश करे। नेशनल सेंट्रल लाइब्रेरी, नेशनल लाइब्रेरी बोर्ड, जिला पुस्तकालय, प्रारम्भिक ग्राम पुस्तकालय आदि के कर्त्तव्य आदि की रूपरेखा पर भी विचार किया गया।

चौथी समस्या पर सेमिनार का यह मत रहा कि प्रत्येक स्तर पर पुस्तकालय-सम्बन्धी प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाय। यह सुझाव दिया गया कि लाइब्रेरी के पाठ्य-क्रम में मौलिक-सामाजिक शिक्षा को भी शामिल किया जाय। शाखा, जिला और प्रदेश पुस्तकालयों की योग्यता का भी विश्लेषण किया गया।

पाँचवीं समस्या पर सेमिनार की राय थी कि एक पुस्तकालय-कानून बनाना चाहिए। अखिल भारतीय पुस्तकालय-संघ या भारत सरकार द्वारा नियुक्त विशेषज्ञों की किसी समिति द्वारा लाइब्रेरी कानून का ढाँचा बनाया जाय।

छठीं समस्या पर विचार करते हुए सेमिनार ने पुस्तकों की श्रेणियाँ बनाईं जिनमें कि लाइब्रेरियन रुचि रखते हैं और विशिष्ट एजेंसियों तक उनको प्रचारित करने पर बल दिया गया।

इस प्रकार इस सेमिनार ने अनेक महत्त्वपूर्ण समस्याओं पर विचार कर के यूनेस्को सेमिनार के लिए एक पृष्ठभूमि तैयार कर दी।

पुस्तकालय-संघ

दिल्ली में दो पुस्तकालय-संघ स्थापित हुए :—

१. गवर्नमेंट आफ इण्डिया लाइब्रेरी एसोसिएशन।

२. दिल्ली लाइब्रेरी एसोसिएशन।

१. 'गवर्नमेंट इण्डिया लाइब्रेरी एसोसिएशन' सरकारी पुस्तकालयों के कर्मचारियों द्वारा स्थापित किया गया। इसके द्वारा सरकारी पुस्तकालयों के कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने की भी व्यवस्था १६५१ में एक क्लास खोल कर की गई। यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन के सदस्य प्रो० एस० के०

कोई हानि नहीं पहुँची। पहले बड़ौदा राज्य में जिला पुस्तकालय को ७००) वार्षिक अनुदान, तालुका पुस्तकालय को ३००) वार्षिक अनुदान मिलता था किन्तु बम्बई सरकार ने क्रमशः इनको ६०००) और ४५०) अनुदान कर दिया। बड़ौदा के ग्राम पुस्तकालयों को 'सामाजिक शिक्षा योजना' के अन्तर्गत ही रखा गया। विलय के बाद बड़ौदा स्टेट लाइब्रेरीज़ के भूतपूर्व क्युरेटर श्री टी० डी० वाकनीस महोदय ही बम्बई लाइब्रेरीज़ के क्युरेटर बनाए गये।

कर्नाटक लाइब्रेरी एसोसिएशन

इस संघ को १६५० में सरकार द्वारा मान्यता मिली। इसको वार्षिक अनुदान भी मिलने लगा। इसने पुस्तकालय विज्ञान पर कन्नड़ मे एक पुस्तक प्रकाशित की और १६५३ में लाइब्रेरी ट्रेनिंग कोर्स भी शुरू किया। कर्नाटक पुस्तकालयों की डाइरेक्टरी प्रकाशित करने का कार्य सघ ने अपने हाथ में लिया है और आशा है शीघ्र ही प्रकाशन हो सकेगा।

अधिवेशन

सघ के तत्त्वावधान में ऑल बम्बई कर्नाटक लाइब्रेरी कांफ्रेंस का अधिवेशन धारवार में १६४८ में हुआ। बम्बई हाईकोर्ट के जज माननीय एम० सी० छागला ने इसका उद्‌घाटन किया और मैसूर लाइब्रेरी के लाइब्रेरियन श्री जीं हनुमत राव ने अध्यक्षता की। दुर्लभ कन्नड़ ग्रंथों और पत्र-पत्रिकाओं की एक प्रदर्शनी भी हुई। इसके बाद तृतीय अधिवेशन १६५२ मे कुण्ड-गोल और कुम्ता में १६५३ में हुए। कुडगोल अधिवेशन की अध्यक्षता श्री वी० एन० दातार ने की और कुम्ता अधिवेशन की अध्यक्षता श्री आद्य रङ्गाचार जी ने।

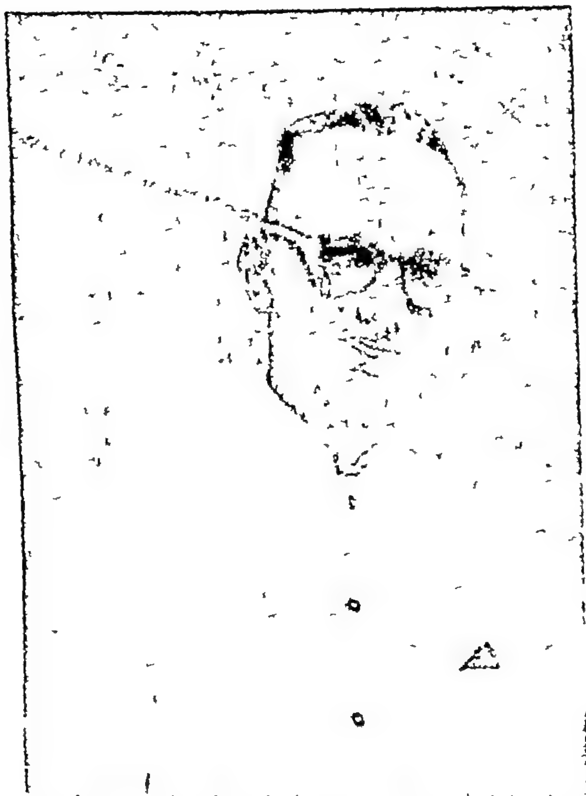
यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी

१६ नवम्बर १६५४ को बड़ौदा यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी का राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद ने उद्‌घाटन किया। ५ जनवरी १६५५ को गुजरात विद्यापीठ पुस्तकालय का उद्‌घाटन माननीय प० नेहरू ने किया। आपने कहा कि 'हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि प्रत्येक गाँव में एक पुस्तकालय हो।'

बम्बई के भूतपूर्व मुख्य मन्त्री ने ३० मार्च १६४८ को सेठ जी० एस० मेडिकल कालेज, बम्बई में 'मेडिकल लाइब्रेरी' का उद्‌घाटन किया।

महात्मा गांधी रेलिक्स प्रेजर्वेशन कमेटी

गाधी से सम्बन्धित सभी चल वस्तुओं को एकत्र करने की कमेटी डा०



श्री टी० डी० वाकनीस, एम० ए०, एफ० एल० ए०
क्युरेटर ग्राफ लाइब्रेरीज
बम्बई प्रदेश

राजेन्द्रप्रसादजी के सभापतित्व में बनी और दिसम्बर १९५३ में 'गाधी ज्ञान मन्दिर' की स्थापना वर्धा में हुई।

पुस्तकालय संघ

महाराष्ट्र पुस्तकालय संघ की स्थापना १९४९ ई० में हुई। इसने ट्रेनिङ्ग कोर्स की व्यवस्था की। इसने पुस्तकालय-योजना के विस्तार के लिए एक प्लानिङ्ग कमेटी (श्री वाकनीस, श्री हिंग्वे, श्री कोल्हाटकर और श्री काले महोदय) बनाई। १९ अप्रैल से ५ जून १९५५ को एस० एन०, वार्वे के निर्देशन में ५२ विद्यार्थियों को पूना में ट्रेनिङ्ग दी गई। सन् ५५ मे इस सघ के विभिन्न श्रेणियों के २८९ सदस्य बन चुके थे। बम्बई सरकार ने सघ को १३५० रु० की ग्राण्ट भी दी। इसकी ओर से प्रतिवर्ष ट्रेनिंग क्लास की व्यवस्था की जाती है। एक मराठी पत्रिका 'साहित्य सहकार' का प्रकाशन होता है और पुस्तकालय-विज्ञान की पाँच पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

बम्बई लाइब्रेरियन स्टाफ यूनियन

बम्बई में पुस्तकालय कर्मचारियों का एक संगठन यूनियन के रूप में हुआ। इसका दूसरा अधिवेशन २६ जून १९५३ को टाउन हाल, बम्बई में प्रिंसिपल एम० बी० डोंगे, एम० एल० सी० की अध्यक्षता में हुआ। ११-७-४८ को भी एक कान्फ्रेंस करके लाइब्रेरी-कर्मचारियों की नौकरी की दशा सुधारने और वेतन बढ़ाने के सबंध में मॉगों की सूची प्रस्तुत की गई। इस प्रकार इसका प्रयास भी अपने ढंग का अनुपम रहा।

पुस्तकालय-विज्ञान शिक्षा

बम्बई राज्य में बम्बई विश्वविद्यालय मे श्री डी० एन० मार्शल महोदय की अध्यक्षता में पुस्तकालय-विज्ञान में डिप्लोमा कोर्स की व्यवस्था है। इसके अतिरिक्त पूना, बम्बई, गुजरात और कर्नाटक के पुस्तकालय संघ भी पुस्तक-प्रदर्शनी तथा पुस्तकालय ट्रेनिङ्ग कक्षाओं की व्यवस्था करते हैं।

मद्रास राज्य

मद्रास राज्य में पुस्तकालय-आन्दोलन अधिक सगठित रूप से आगे बढ़ा। डा० रगनाथन ने जो माडेल लाइब्रेरी ऐक्ट बनाया था, उस पर आधारित 'लाइब्रेरी बिल' मद्रास सरकार ने पास कर दिया। इस प्रकार भारत में सब से पहला लाइब्रेरी ऐक्ट पास करने का श्रेय इसी राज्य को है। इस 'मद्रास पब्लिक लाइब्रेरी ऐक्ट' के अनुसार राज्य में स्थानीय कर्मचारियों ने काम

करना शुरू किया। मद्रास नगर और जिला सेलम को छोड़ कर सभी जिलों में डिस्ट्रिक्ट सेन्ट्रल लाइब्रेरी स्थापित की गईं। मद्रास राज्य ने १९५३ में २,७१,७०३ रुपये और १९५४ में ६,३४,२१० रुपये खर्च किया। डाइरेक्टर आफ पब्लिक लाइब्रेरीज़, मद्रास के आफिस में चिल्ड्रेन्स लाइब्रेरी स्थापित हुई जिसके द्वारा बालकों में पढ़ने की आदत का विकास किया गया।

१९५४ तक मद्रास में २८८८ पुस्तकालय और ६८६ रीडिङ्ग रूम हो चुके थे। इनसे ७३,०५,१६१ व्यक्तियों ने २४,४५,५३० पुस्तकों का उपयोग किया था।

मद्रास लाइब्रेरी एसोसिएशन

यह एसोसिएशन बड़ी लगन और तत्परता से कार्य करता रहा। इसके अधिवेशन सफलतापूर्वक होते रहे। २७वाँ वार्षिक अधिवेशन ६ अप्रैल १९५४ में हुआ जिसमें मद्रास लाइब्रेरी ऐक्ट में लाइब्रेरी डाइरेक्टर को सरकार द्वारा नियुक्त किये जाने वाले की आलोचना की गई। सब ने यह सिफारिश की कि ट्रेंड ग्रेजुयेट लाइब्रेरियन को ट्रेंड ग्रेजुएट टीचर का ग्रेड स्कूलों और कालेजों में दिया जाय।

इस प्रदेश में कालेज लाइब्रेरियन्स का भी एक सगठित रूप है जिसका प्रथम अधिवेशन २८ सितम्बर १९४७ को **Y.M.C.A.** (मद्रास) में हुआ।

बङ्गाल प्रदेश

बगाल लाइब्रेरी एसोसिएशन के अधिवेशन प्रति वर्ष होते रहे। ३–४ अप्रैल १९५३ को सुनीतिकुमार चटर्जी की अध्यक्षता में इसका एक सफल अधिवेशन हुआ। २४–५–५३ ई० की एक बैठक में १५ वें ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर में उत्तीर्ण २५ व्यक्तियों को प्रमाण-पत्र दिए गए। इस एसोसिएशन ने 'पश्चिमी बगाल लाइब्रेरी डाइरेक्टरी' का भी काम अपने हाथ में ले लिया है। मालदा के ट्रेनिंग कैम्प से इस एसोसिएशन की ओर लोग अधिक आकृष्ट हो गये हैं।। बगाल सरकार इसके क्रिया-कलापों से सतुष्ट हो कर ग्राण्ट भी दे रही है। बगाल के पुस्तकालय-आन्दोलन में श्री प्रभातकुमार मुकर्जी भूतपूर्व लाइब्रेरियन, शान्तिनिकेतन, श्री विमलकुमार दत्त, वर्त्तमान लाइब्रेरियन शन्तिनिकेतन तथा श्री प्रमीलचन्द्र बसु, लाइब्रेरियन कलकत्ता यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी आदि प्रमुख है। श्री प्रमीलचन्द्र जी तो जन्मजात लाइब्रेरियन हैं और इस एसोसिएशन के प्राण हैं। 'ग्रंथागार' पत्रिका इस एसोसिएशन से प्रकाशित हो रही है।

इंडियन एसोसिएशन आफ स्पेशल लाइब्रेरीज़ ऐण्ड इन्फार्मेशन सर्विस

इसकी स्थापना डा० एस० एल० होरा की प्रेरणा से कलकत्ता में हुई। कार्य को संगठित करने के लिए योग्य व्यक्तियों के नेतृत्व में ६ उपविभाग बना कर कार्य प्रारम्भ कर दिया गया।

हैदराबाद

इस राज्य मे एक 'ऑल हैदराबाद लाइब्रेरी एसोसिएशन' की स्थापना स्वाधीनकाल में हुई। इसके द्वितीय अधिवेशन का सभापतित्व श्री के० जी० सैयदैन, ऐडीशनल सेक्रेटरी, शिक्षा विभाग, केन्द्रीय सरकार ने किया। उन्होंने अपने भाषण में इस बात पर बल दिया कि द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अंत तक (१९६१) सभी राज्यों में स्टेट और जिला लाइब्रेरियों की स्थापना हो जायगी और उनके अपने भवन हो जायेंगे और वे सुयोग्य पुस्तकालयाध्यक्षों द्वारा संगठित होंगे।

संघ का तीसरा अधिवेशन सितम्बर १९५६ में हुआ जिसका उद्‌घाटन श्री बी० एन० दातार महोदय, (केन्द्रीय मन्त्री) ने किया। इस अवसर पर स्पेशल लाइब्रेरी कान्फ्रेंस और पुस्तक प्रदर्शनी आदि के भी आयोजन हुए। स्पेशल लाइब्रेरी कान्फ्रेंस के सभापति श्री आर० एस० पारखी महोदय थे और श्री आर० एम० जोशी स्वागताध्यक्ष। पुस्तक प्रदर्शनी का उद्‌घाटन हैदराबाद के गृहमन्त्री श्री डी० जी० बिन्दु ने किया।

डा० राधाकृष्णन ने भी उस्मानिया यूनिवर्सिटी में हस्तलिखित ग्रंथों की एक प्रदर्शिनी का उद्‌घाटन किया।

मैसूर

मैसूर राज्य के विभिन्न केन्द्रों में हिन्दी पुस्तकालयों की स्थापना मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद् द्वारा की गई। प्रथम पञ्चवर्षीय योजना के अन्तर्गत भारत सरकार ने अहिन्दी प्रान्तों में हिन्दी प्रचार के लिए पाँच लाख रुपये की आर्थिक सहायता दी। मैसूर सरकार ने अपने राज्य मे हिन्दी के प्रचार पर हजारों रुपये खर्च किए। मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद् को आठ केन्द्रों में हिन्दी पुस्तकालय खोलने की आर्थिक सहायता दी गई। परिषद् ने ये पुस्तकालय—बंगलूर परिषद के दफ्तर में, सिरा, आनेकल, होलवेरे, सतेवेन्सू, जगलूर, आलदूर और मल्लाड़ी हल्ली में खोले। ये पुस्तकालय स्थानीय समिति की देख-रेख में चल रहे हैं।

ट्रावनकोर कोचीन

ट्रावनकोर-कोचीन के सयुक्त राज्य बनने पर सरकार ने पुस्तकालयों की सख्या और बढ़ा दी। धीरे-धीरे १४८१ पुस्तकालय 'पुस्तकालय सघ' की देख-देख में चलने लगे। पुस्तकालयों की देख-रेख के लिए एक अधिकारी की नियुक्ति हुई। पुस्तकों की संख्या में भी वृद्धि हुई और सन् १९५० में कुल पुस्तक सख्या १२,५८,७५० हो गई। सरकार २ पाई प्रति व्यक्ति पुस्तकालय-सेवा पर व्यय कर रही है।

पुस्तकालय-संघ

'ट्रावनकोर-कोचीन ग्रन्थालय संघ' ट्रिवेन्ड्रम एक सुसगठित सस्था है। इस सघ से १९५४-५५ के अन्त तक १,६८५ पुस्तकालन सम्बद्ध हो गये थे। कम से कम ८०) की ग्राण्ट पुस्तकालयों को मिलती है। १९५४-५५ के अन्त तक ४१७ पुस्तकालयों के निजी घर बनाए गये। सघ के आर्गनाइजर इस्पेक्टर और भरण समितियाँ पुस्तकालयों के काम को कन्ट्रोल करते हैं। १९५४-५५ में १,७०,४१५ रुपये ग्राण्ट पुस्तकालयों को दी गई।

मध्य-प्रदेश

'मध्य-प्रदेश राज्य पुस्तकालय सघ' का अधिवेशन २९-३० अक्टूबर १९५५ को नेशनल लाइब्रेरी के डिप्टी लाइब्रेरियन श्री वाई० एम० मुले की अध्यक्षता में नागपुर में हुआ। नागपुर हाईकोर्ट के भूतपूर्व जज श्री डब्ल्यू० बी० पौराणिक स्वागताध्यक्ष थे। श्री मुले ने इस बात पर बल दिया कि अनिवार्य शिक्षा की भाँति सरकार को लाइब्रेरी ऐक्ट भी शीघ्र ही बनाना चाहिए। पुस्तकालय की देख रेख का विभाग अलग होना चाहिए। इंडिया आफिस लाइब्रेरी को वापस लाने के लिए प्रस्ताव पास किया गया और गाँव लाइब्रेरी और नेशनल बुक ट्रस्ट की योजना के लिए सरकार को धन्यवाद दिया गया।

सौराष्ट्र

मेघजी पेथराज ट्रस्ट के ४ लाख रुपये के दान से सौराष्ट्र में ८०० लाइब्रेरी खोलने की योजना बनाई गई जिनमें से १०० पुस्तकालय पहले से ही ग्राम पचायत की ओर से चल रहे हैं।

राजस्थान

२ अक्टूबर १९५५ को कुछ उत्साही पुस्तकालयाध्यक्षों ने जोधपुर नगर में 'जोधपुर लाइब्रेरी एसोसिएशन की स्थापना की। २० जनवरी १९५६ की

बैठक में इसके मन्त्री श्री एम० एल० सिन्धवी (लाइब्रेरियन जसवन्त कालेज) चुने गये।

आन्ध्र

आन्ध प्रदेश में आन्ध्र यूनिवर्सिटी वाल्टेयर के लाइब्रेरियन श्री ए० रामकृष्णराव की अध्यक्षता में २-१०-५५ को एक बैठक लाइब्रेरियन और सीनियर स्टाफ की हुई जिसमे 'आन्ध्र लाइब्रेरियन्स एसोसियेशन' बनाने का निश्चय किया गया। इसका उद्देश्य देश में लाइब्रेरियनशिप को बढ़ाना तथा पुस्तकालय कर्मचारियों की दशा और हैसियत मे सुधार करना है। श्री ए० रामकृष्णराव इसके अध्यक्ष और श्री पं० सत्यनारायण पटनायक स० लाइब्रेरियन आन्ध्र यूनिवर्सिटी मन्त्री चुने गए।

वेस्ट बंगाल लाइब्रेरी एसोसिएशन

एसोसिएशन का ६वाँ अधिवेशन किदरपुर, कलकत्ता में ८-६ अप्रैल १६५५ ई० को हुआ। डा० बी० सी० राय ने कार्फ्रेंस का उद्घाटन किया। कार्फ्रेंस की अध्यक्षता श्री प्रभातकुमार मुकर्जी ने की। कार्फ्रेंस के अवसर पर पुस्तकों की प्रदर्शनी का उद्घाटन प्रसिद्ध पत्रकार डा० हेमेन्द्र प्रसाद घोष ने किया।

(१) सामाजिक शिक्षा और पुस्तकालयों का सहयोग।

(२) पुस्तकालय आन्दोलन में टेकनीशियनों का योगदान।

आदि विषयों पर विचार किया गया। कार्फ्रेंस ने माँग की कि कलकत्ता यूनिवर्सिटी पुस्तकालय-विज्ञान में मास्टर डिग्री कोर्स चालू करने के प्रश्न पर शीघ्रतापूर्वक विचार करे। प० बंगाल की सभी शिक्षण-संस्थाएँ अपने यहाँ ट्रेण्ड योग्य लाइब्रेरियन रखें और प्रकाशक लोग उत्तम पुस्तकों के उत्पादन में वृद्धि करें।

पुस्तकालयाध्यक्षों का सहयोग

इस काल में अनेक प्रान्तों ने तथा विशेष रुप से कुछ पुस्तकालयों ने डा० रङ्गनाथन का सहयोग चाहा। फारेस्ट रिसर्च इन्स्टीट्यूट लाइब्रेरी, देहरादून, इण्डियन इन्स्टीट्यूट आफ साइंस, और यूनिवर्सिटी आफ बम्बई लाइब्रेरी के अनुरोध पर डा० रङ्गनाथन जी ने उनका निरीक्षण किया और उनके पुनर्गठन के लिए अनेक सुझाव दिए।

लाइब्रेरियन कांफ्रेंस

२७ सितम्बर १६५६ को केन्द्रीय शिक्षा विभाग की ओर से दिल्ली में

पुस्तकालयाध्यक्षों का एक सम्मेलन हुआ। इसमें दो प्रकार के लोग थे। एक तो वे पुस्तकालयाध्यक्ष जो ह्वीट लोन एजुकेशनल इक्सचेंज प्रोग्रैम के अन्तर्गत १६५५ ई० में सयुक्तराष्ट्र अमेरिका गए थे और दूसरे वे पुस्तकालयाध्यक्ष थे जो इसी प्रोग्रैम क अन्तर्गत १६५६ में जाने वाले थे। इस सम्मेलन का उद्‌घाटन शिक्षा विभाग के सेक्रेटरी श्री के० जी० सैयदेन महोदय ने किया और निर्देशक थे नेशनल लाइब्रेरियन श्री बी० एस० केशवन। इस सम्मेलन के सदस्य तीन दलों में स्वत. विभक्त हो गए। इन दलों के नेता थे श्री बशीरुद्दीन, श्री एस० एस० सेठ, और श्री एस० दास गुप्ता। इस सम्मेलन में दिल्ली विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री डा० वी० के० आर० बी० राव, यूनिवर्सिटी ग्राट कमीशन के सेक्रेटरी डा० सेमुअल मथाई, ह्वीट लोन प्रोग्रैम के अमेरिकन पक्ष के प्रधान डा० उडमैन के भी भाषण हुए।। इस आयोजन का उद्देश्य यह था कि सयुक्त राष्ट्र अमेरिका को जाने वाले दल के लोग १६५५ में यात्रा करके आए हुए दल के लोगों के अनुभवों और विचारों से पूर्णतः परिचित हो जायँ और उनसे लाभ उठा सकें। इसलिए उपर्युक्त तीन दलों के विषय भी अलग कर दिए गये थे जो इस प्रकार थे :—

१—राष्ट्रीय स्तर पर पुस्तकालयों का सगठन और सचालन तथा कर्मचारियों का प्रशिक्षण।

२—सूचीकरण, और वितरण सेवा के कुछ यत्रीकरण विवरण सहित (यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी के दृष्टिकोण से)।

३—पुस्तकालय भवन एव पुस्तकालय विस्तार सेवा (कालेज स्तर पर)।

इन दलों ने आपस में अपने विषयों पर भलीभाँति विचार-विनिमय किया और अत में प्रत्येक दल ने अपनी रिपोर्ट और सुझाव अतिम सेशन के लिए पेश किया। सब दलों के सुझावों और सिफारिशों पर बहस और विचार-विनिमय हुए और अत में उन्हें स्वीकार किया गया।

(ञ) पुस्तकालयाध्यक्षों की विदेश-यात्रायें

स्वतन्त्र भारत का अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध अनेक देशों से स्थापित हो जाने पर पुस्तकालयाध्यक्षों को विदेशों में जा कर पुस्तकालय-संगठन और सचालन सम्बन्धी विशेष ज्ञान और अनुभव प्राप्त करने के अनेक अवसर मिले। अनेक लाइब्रेरियन विदेशों में गए और वहाँ से ज्ञान एव अनुभव प्राप्त करके लौटे।

स्मीट लोन एजुकेशनल इक्सचेंज प्रोग्रैम

इस योजना के अन्तर्गत पहली ट्रिप में निम्नलिखित व्यक्तियों ने ६ फरवरी १६५४ ई० को ५ महीने की संयुक्त राष्ट्र की विदेश यात्रा की :—

१. श्री एस० दासगुप्ता, अध्यक्ष लाइब्रेरी साइन्स विभाग, दिल्ली यूनि० ।

२. श्री एस० बशीरुद्दीन, लाइब्रेरियन, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी ।

३. श्री नबी अहमद, जामिया मिलिया, नई दिल्ली ।

४. श्री अमरनाथ शर्मा, लाइब्रेरियन, दिल्ली पोलीटेकनिक ।

५. श्री जे० एस० आनन्द, लाइब्रेरियन, सेंट्रल एजुकेशनल लाइब्रेरी ।

६. श्री एस० रामभद्रन, असिस्टेंट लाइब्रेरियन, दिल्ली यूनिवर्सिटी ।

७. श्री एम० वी० वाजिफदार, असिस्टेन्ट लाइब्रेरियन, टाटा इन्स्टीट्यूट आफ फंडामेंटल रिसर्च, बम्बई ।

८. श्री के० आर० देसाई, लाइब्रेरियन, गुजरात यूनिवर्सिटी ।

६. श्री पी० सी० बोस, लाइब्रेरियन कलकत्ता यूनिवर्सिटी ।

१० श्री बी० सी० बनर्जी, असिस्टेन्ट लाइब्रेरियन विश्व भारती, शान्ति-निकेतन ।

११. श्री डी० सी० सरकार, लाइब्रेरियन बगाल इंजीनियरिङ्ग कालेज ।

१२. श्री वी०वी० राघवेन्द्र राव, लाइब्रेरियन, इण्डियन इन्स्टीट्यूट आफ साइंस, बंगलौर ।

इन्होंने वहाँ सेमिनार, वाद-विवाद आदि में भाग लिया । अमेरिकन लाइ-ब्रेरी असोसिएशन के वार्षिक अधिवेशन में सम्मिलित हुए और दस स्टेट्स की यूनिवर्सिटी पुस्तकालयों को देखा । लाइब्रेरी आफ कांग्रेस, वाशिंगटन, को देखा तथा अन्य क्रिया-कलापों में भी भाग लिया । ये लोग जुलाई के अन्तिम सप्ताह में लौटे । २८ जुलाई को सायंकाल ६ बजे उनका स्वागत दिल्ली लाइब्रेरी एसोसिएशन की ओर से किया गया ।

इस योजना के अन्तर्गत दूसरी ट्रिप मे निम्नलिखित ११ लाइब्रेरियन का दूसरा दल २६ फरवरी ५६ को पाँच मास की अध्ययन यात्रा पर गया है :—

१. श्री बर्नार्ड ऐन्डर्सन — बम्बई

२. श्री प्रभातकुमार मुकर्जी — आगरा

३. श्री कृष्ण श्रीपद देशपाण्डे — कर्नाटक यूनिवर्सिटी धारवार

४. श्री जनार्दन मनकेश्वर कान्तिकर, इण्डियन इंस्टीट्यूट आफ पब्लिक ऐड०, नई दिल्ली ।

५. श्री अशोककुमार बनर्जी, इण्डियन इंस्टीट्यूट आफ टेकनोलोजी, खड्गपुर।

६. श्री बनारसी लाल पाठक, सागर यूनिवर्सिटी, सागर।

७ श्री विनयेन्द्रसेन गुप्ता, नेशनल लाइब्रेरी।

८. श्री सरदार तारासिंह, लखनऊ यूनिवर्सिटी।

९ श्री बी० के० त्रिवेदी, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी।

१०. श्री कृष्णजी शकर हिंग्वे, पूना यूनिवर्सिटी।

डा० रगनाथन ने योरप और अमेरिका की बहु उद्देशीय यात्रा ७ जून सन् १९४८ से अक्टूबर १९४८ तक की। उनकी यात्रा के निम्नलिखित कारण थे :—

१. 'इंटरनेशनल फेडरेशन फार डाकुमेंन्टेशन' ने 'क्लैसीफिकेशन ऐण्ड इंटरनेशनल डाकुमेंन्टेशन' पर एक स्मृति-पत्र के लिए प्रार्थना की थी।

२ हेग में जून १९४८ में एफ० आई० डी० की कार्फ्रेंस में भाग लेने का निमन्त्रण मिला था।

३ बृटिश काउन्सिल का नियन्त्रण था कि वे दो मास तक उसके अतिथि के रूप में ग्रेटब्रिटेन देखें।

४. इण्डियन स्टैण्डर्ड इस्टीट्यूशन के प्रतिनिधियों के नेता के रूप में आई० एस० ओ० की छठीं बैठक में भाग लेना था जो हेग में होने वाली थी।

५. दिल्ली यूनिवर्सिटी का निमत्रण था कि वे दिल्ली यूनिवर्सिटी के प्रतिनिधि की हैसियत से राष्ट्रमण्डल की यूनिवर्सिटियों की कार्फ्रेंस में जुलाई १९४८ को आक्सफोर्ड में शामिल हों।

६. भारत के केन्द्रीय शिक्षा विभाग की इच्छा थी कि डा० साहब यूरोप के कुछ देशों का भ्रमण करें और सामान्य रूप से पुस्तकालय-जगत् के नव विकास का और विशेष रूप से नेशनल सेंट्रल लाइब्रेरी के विषय मे अध्ययन करें।

७. सयुक्त राष्ट्र का निमत्रण था कि उसके पुस्तकालय विशेषज्ञो की अन्तर्राष्ट्रीय ऐडवाइजरी कमेटी में भाग लें।

८ यूनेस्को के अन्तर्राष्ट्रीय लाइब्रेरियनशिप के स्कूल की फाक्ल्टी के एक सदस्य हो जायँ जो कि इगलैण्ड में सितम्बर १९४८ में होने वाली थी।

६. इण्डियन लाइब्रेरी एसोसिएशन की प्रार्थना थी कि उसके प्रतिनिधि के रूप में इंटरनेशनल फेडरेशन आफ लाइब्रेरी एसोसिएशन के १४ वें सेशन में सितम्बर १९४८ में लन्दन में भाग लें।

उन्होंने विदेशों में नेशनल लाइब्रेरी सिस्टम, सिटी लाइब्रेरी सिस्टम, ग्राम पुस्तकालय सिस्टम, यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, और व्यापारिक लाइब्रेरियों का अध्ययन किया।

इनके अतिरिक्त निम्नलिखित लाइब्रेरियन ने फुटकर सुविधाओं के अन्तर्गत विदेश यात्रा की और पुस्तकालय-सम्बंधी गम्भीर अनुभव प्राप्त किया :—

श्री जनार्दन, लाइब्रेरियन कोनेमरा पब्लिक लाइब्रेरी, मद्रास, यूनेस्को की मीटिङ्ग मे सम्मिलित होने के लिए मैनचेस्टर गये।

श्री वी० एस० केशवन, नेशनल लाइब्रेरियन चार महीने की अध्ययन यात्रा पर फरवरी १९५२ में अमेरिका गए। उन्होंने वहाँ पुस्तकालयों के उच्च संचालकों से सम्पर्क स्थापित किया और अनेक पुस्तकालयों का निरीक्षण किया।

श्री एस० एस० सेठ, लाइब्रेरियन, इक्टर्नल अफेयर्स, भारत सरकार द्वारा फुलब्राइट ट्रैवेल ग्राण्ड पा कर स्मिथ मुन्ट (Mundt) फेलोशिप के अन्तर्गत अमेरिका में ६ मास वाशिंगटन लाइब्रेरी में लाइब्रेरी साइंस में रिसर्च करने में विताया। श्री विमलकुमार दत्त, (लाइब्रेरियन, शान्ति निकेतन लाइब्रेरी) भी उक्त फेलोशिप के अन्तर्गत गए और लौटते समय अनेक देशों के पुस्तकालयों को देखा।

श्री एम० एम० एल० टंडन ने यूनेस्को फेलोशिप के अन्तर्गत पुस्तकालय-संगठन एवं सामाजिक शिक्षा का ६ मास अध्ययन करने के लिए यू०एस०ए० और इंगलैण्ड की यात्रा की।

श्रीमती कमला कपूर, यू० एस० आई०एस० लाइब्रेरी, नई दिल्ली ने इम्प्ल्वाइज ओरियेन्टेशन प्रोग्रैम के अन्तर्गत यू० एस० ए० अध्ययन के लिए गईं।

श्री हरिदेव शर्मा एम० ए०, लाइब्रेरियन, डी० ए० वी० कालेज, जालंधर ने २।। वर्ष अमेरिका में विताया। उन्होंने मिचिगन यूनिवर्सिटी से ए० एम० एल० एस० परीक्षा जून १९५५ में पास की। उन्होंने ब्रुकलेन पब्लिक लाइब्रेरी न्यूयार्क में कार्य भी किया तथा लौटते समय अन्य देशों के पुस्तकालयों को भी देखा।

श्री एन० एम० केतकर महोदय ने १९५१ में 'कोलम्बिया यूनिवर्सिटी आफ लाइब्रेरी साइंस' में ट्रेनिङ्ग ली।

डा० जगदीशशरण शर्मा, ने दो बार पुस्तकालय-विज्ञान सम्बधी विशेष अध्ययन के लिए विदेश यात्रा की। पहली बार १४ अगस्त १६४८ ई० को प्रस्थान करके अमेरिका की मिचिगन यूनिवर्सिटी से ए० एम० एल० एस० की परीक्षा पास करके १४ अगस्त १६५० को स्वदेश लौटे। दूसरी बार मिचिगन विश्वविद्यालय से एक फेलोशिप पाने पर राष्ट्रपिता बापू की बिब्लियोग्रैफी को रिसर्च विषय के रूप में लेकर १० जुलाई १६५२ को फिर अमेरिका गए और वहाँ मिचिगन यूनिवर्सिटी से पी० एच० डी० की उपाधि प्राप्त की। उसके बाद अनेक बड़े-बड़े पुस्तकालयों की कार्य-प्रणाली को देख कर सितम्बर १६५४ को भारत लौटे।

नेशनल लाइब्रेरी के श्री वैद्यनाथ वन्द्योपाध्याय चौधरी को ह्वीट लोन फण्ड प्रोग्राम के अन्तर्गत पुस्तक-सुरक्षा और जिल्दबदी के प्रशिक्षण के लिए भेजा गया।

त्याग, नटराजन (इंडियन नेशनल बिब्लियोग्रैफी विभाग) को लाइब्रेरी आफ कांग्रेस में बिब्लियोग्रैफिकल अध्ययन के लिए पूर्ण छात्रवृत्ति ग्यारह माह के लिए प्राप्त हुई।

इनके अतिरिक्त श्री राधेश्याम सक्सेना (लखनऊ) तथा मिस थामस (ऐग्रिकल्चर इन्स्टीट्यूट नैनी लाइब्रेरी) आदि ने भी प्रशिक्षण के लिए विदेश यात्राएँ कीं।

पुस्तकालयाध्यक्षों का सम्मान

पुस्तकालय-विज्ञान को स्वतन्त्र विषय स्वीकार करने और लाइब्रेरी प्रोफेशन को सम्मान देने के लिए इस बीच कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य हुए :—

अन्तिम गवर्नर जनरल माउन्टबेटेन ने दिल्ली यूनिवर्सिटी के वाइस-चान्सलर की हैसियत से डा० एस० आर० रंगनाथन को ७ मार्च १६४८ ई० के स्पेशल कन्वोकेशन में आनरेरी डी० लिट० (डाक्टर आफ लेटर्स) की उपाधि प्रदान की। इस अवसर पर डा० साहब को अनेक पुस्तकालयाध्यक्षों की ओर से बधाई के संदेश भी प्राप्त हुए।

भारत सरकार ने डा० रंगनाथन जी को उनकी पुस्तकालय सम्बन्धी बहुमूल्य सेवाओं के उपलक्ष में 'पद्म-विभूषण' उपाधि से अलकृत किया।

अलीगढ़ यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी के लाइब्रेरियन श्री एस० वशीरुद्दीन साहब को अमेरिका से लौटने पर यूनिवर्सिटी सीनेट ने प्रोफेसर ग्रेड (८०० से १२५० रु०) पर नियुक्ति करके उनको सम्मानित किया।

श्री एस० दास गुप्ता महोदय को भी प्रोफेसर ग्रेड प्रदान दिया गया।

डा० रंगनाथन का महान त्याग

भारतीय पुस्तकालय-जगत् के महान विद्वान डा० रंगनाथन ने अपने जीवन भर की कमाई को उस भारतीय विश्वविद्यालय को देने की घोषणा की जो उतनी ही रकम अपनी ओर से मिला कर पुस्तकालय-विज्ञान के विशेष अध्ययन और खोज के लिए एक 'चेयर' स्थापित कर सके। सभी नें इस उदारता की मुक्तकंठ से सराहना की है।

स्वाधीन भारत में पुस्तकालय-विज्ञान सम्बन्धी साहित्य का विकास

१६४७	कुरुनकर, नायर वी०	: लाइब्रेरी मूवमेण्ट इन ट्रावनकोर।
१६४७	,, ,,	: लाइब्रेरीज़ ऐण्ड मॉस एजुकेशन।
१६४७	नागभूषणम, जी०	: लाइब्रेरीज ऐण्ड रजिस्ट्रेशन।
१६४७	रंगनाथन, एस० आर०	: कोलन क्लैसीफिकेशन आफ तैलगू-लिटरेचर।
१६४७	,, ,,	: लाइब्रेरी डवलपमेण्ट प्लान, विद ए ड्राफ्ट लाइब्रेरी बिल फार द प्राविन्स आफ बाम्बे।
१६४८-४६	इण्डिया हेल्थ सर्विसेज़ —डाइरेक्टर जनरल आफ—	: कन्सोलीडेटेड कैटलाग आफ जरनल्स ऐण्ड पीरियाडिकल्स इन द लाइब्रेरीज़ आफ सरटेन मेडिकल रिसर्च इंस्टीट्यूट इक्सट्रा आफ इंडिया।
१६४८	कुधालकर, वी० जी०	: ग्रन्थालयों वर्गीकरण।
१६४८	कोलहाटकर, वी० पी०	: ग्रन्थालयों सूचीलेख।
१६४८	रंगनाथन, एस० आर०	: एजुकेशन फार लेजर।
१६४८	,, ,,	: क्लैसीफिकेशन ऐण्ड इण्टरनेशनल डाकुमेन्टेशन।
१६४८	,, ,,	: प्रीफेस टु लाइब्रेरी साइंस।
१६४८	भोलानाथ 'विमल'	: पुस्तकालय-परिचय।
१६४८	मथुराप्रसाद आदि	: पुस्तकालय।
१६४६	नागभूषणम, जी०	: ग्रन्थालय गीताञ्जु।
१६४६	पारखी, आर० एस०	: ग्रन्थ और ग्रंथालय।

१९४९	रंगनाथन, एस० आर०	: लाइब्रेरी डव्लपमेण्ट प्लान विद ए ड्राफ्ट लाइब्रेरी बिल फार द यूनाइटेड प्राविंसेज ।
१९४९	हिंग्वे, के० एस०	: इतिहासाचे वर्गीकरण ।
१९५०	नागभूषणम, जी०	: क्लैसीफिकेशन आफ तेलगु बुक्स ।
१९५०	नागभूषणम, जी०	: ग्रन्थालय सूत्रालु ।
१९५०	,, ,,	: लाइब्रेरी पब्लिसिटी ऐण्ड इक्सटेन्शन वर्क्स ।
१९५०	पारखी, आर० एस०	: प्रिंसिपल्स आफ लाइब्रेरी क्लैसीफिकेशन विद स्पेशल रिफ्रेंस टु कोलन ऐण्ड डेसिमल क्लैसीफिकेशन ।
१९५०	रंगनाथन, एस० आर०	: क्लैसीफिकेशन, कोडिङ्ग ऐण्ड मैशिनरी फार सर्च ।
१९५०	,, ,,	: ग्रन्थ अध्ययनार्थ है (अनुः मुरारीलाल नागर) ।
१९५०	,, ,, ऐण्ड कौल पी० एन०, कोरानी, टी० एन०	: यूनियन कैटलाग आफ पीरियडिकल्स पब्लिकेशंस इन द लाइब्रेरीज आफ साउथ एशिया ।
१९५०	रंगनाथन, एस० आर०	: लाइब्रेरी कैटलाग फण्डामेंटल ऐण्ड प्रोसीजर ।
१९५०	रंगनाथन, एस० आर०	: लाइब्रेरी डव्लपमेण्ट प्लान ।
१९५०	हिन्दी समाचार-पत्र संग्रहालय, हैदराबाद	: हिन्दी समाचार-पत्र सूची ।
१९५१	इण्डियन लाइ०एसोसिएशन	: इण्डियन लाइब्रेरी डाइरेक्टरी, सम्पादक रङ्गनाथन एस० आर०, दास गुप्ता एस० और मगनानन्द ।
१९५१	जुवेर, एम०	: प्रैक्टिकल कैटलागिंग ।
१९५१	,, ,,	: शाहान मुगलियान के कुतुबखाने ।
१९५१	नवकोंकण प्रकाशन	: पंचामृत ।
१९५१	नागभूषणम् , पी०	: रीडिंग रूम ।
१९५१	पैंढोले, एल० बी० सम्पा०	: मराठी ग्रन्थालया चा इतिहास ।
१९५१	बोस, पी० सी०	: ग्रन्थागारम् ।

१६५१	महाराष्ट्र ग्रंथालय संघ	: विसर्ग व दशांश वर्गीकरण सहाय के कोष्टक ।
१६५१	रंगनाथन, एस० आर०	: कैलसीफिकेशन ऐण्ड कम्युनिकेशन ।
१६५१	,, ,, ,,	: लाइब्रेरी मैनुअल ।
१६५१	,, ,, ,,	: ग्रन्थालय प्रक्रिया (अनु० मुरारिलाल नागर) ।
१६५१	,, ,, ,,	: फिलासफी आफ लाइब्रेरी क्लैसी-फिकेशन ।
१६५१	विश्वनाथ शास्त्री	: पुस्तकालय प्रवेशिका ।
१६५२	भारत सरकार-शिक्षा विभाग	: लाइब्रेरीज़ इन इंडिया (डाइरेक्टरी)
१६५३	,, ,, ,,	: नेशनल लाइब्रेरी आफ इण्डिया ।
१६५३	रंगनाथन, एस० आर०	: अनुवर्ग-सूची-कल्प (अनु० मुरारी लाल नागर) ।
१६५४	विश्वनाथन, सी० जी०	: कैटलागिङ्ग थ्योरी ऐण्ड प्रैक्टिस ।
१६५५	,, ,,	: पब्लिक लाइब्रेरी विद स्पेशल रिफ्रेंस टु इंडिया ।
१६५५	इन्देवद्रनारायण सिनहा	: ए गाइड टु लाइब्रेरियन ।
१६५५	जगदीशशरण शर्मा (डा०)	: महात्मागाधी ; ए डिस्क्रिटिव विब्लि-योग्रैफी ।
१६५५	,, ,,	: जवाहरलाल नेहरू, ए डिस्क्रिप्टिव विब्लियोग्रैफी ।
१६५६	,, ,,	: विनोबा ऐण्ड भूदान ।
१६५६	,, ,,	: इंडियन नेशनल काग्रेस सरकुलर।
१६५६	नेशनल इनफर्मेशन सर्विस, पूना	: निफर गाइड टु इण्डियन पीरिय-डिकल्स १६५५-५६ ।
१६५६	अनुज शास्त्री	: पुस्तकालय क्यों और कैसे ?
१६५६	द्वारकाप्रसाद शास्त्री	: पुस्तकालय संगठन और संचालन ।
१६५६	विमलकुमार दत्त	: प्रैक्टिकल गाइड टु लाइब्रेरी प्रोसीजर।
१६५७	द्वारकाप्रसाद शास्त्री	: पुस्तकालय-विज्ञान
१६५७	,, ,,	: भारत में पुस्तकालयों का उद्भव और विकास ।

अध्याय १०

भारत में पुस्तकालयों का भविष्य

सिंहावलोकन

इस पुस्तक के पिछले अध्यायों के अध्ययन करने से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि भारत में पुस्तकालयों की एक शानदार परम्परा रही है। ग्रंथों के संग्रह और उनके संरक्षण और उपयोग के प्रति भारतीय अति प्राचीन काल से सजग रहे हैं। हमारे केन्द्रीय शिक्षा-मन्त्री माननीय मौलाना आजाद महोदय ने ६ अक्टूबर १९५५ को यूनेस्को सेमिनार का उद्घाटन करते हुए विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों को भी भारतीय पुस्तकालय-परम्परा का दिग्दर्शन कराते हुए कहा था :—

"उस समय यह बात विशेष रूप से स्पष्ट हो जाती है जब हम अपने अतीत के इतिहास का स्मरण करते हैं। ऐसा नहीं है कि अतीत में भारतवर्ष में पुस्तकालयों का अभाव रहा हो। प्राचीन विश्वविद्यालयों और बौद्ध विश्व-विद्यालयों में विशाल पुस्तकालयों के निर्माण की परम्परा रही है। मध्य युग में सुल्तानों के काल में और तत्पश्चात् मुगल सम्राटों में भी पुस्तकों के प्रति अत्यधिक प्रेम विद्यमान था। वास्तव में मुगलकाल में प्रत्येक अमीर के लिए अपना निजी पुस्तकालय बना लेने की एक प्रथा सी चल पड़ी थी। जब तक कि उसके पास अपना पुस्तकालय नहीं होता था, उसे राज्य से सम्मानित उच्चवर्गीय व्यक्ति नहीं समझा जाता था।"

उपर्युक्त उद्धरण एक सूत्र रूप में है जिसकी पर्याप्त व्याख्या पिछले अध्यायों में मिल सकेगी। अब प्रश्न यह उठता है कि यदि हमारी संस्कृति में पुस्तकालयों का इतना महत्त्वपूर्ण स्थान था तो देश में इतने व्यापक स्तर पर निरक्षरता क्यों फैल गई ? इसके कारण का संकेत भी इस पुस्तक के पिछले अध्यायों में यत्र-तत्र कर दिया गया है। केन्द्रीय शिक्षा-मन्त्री महोदय ने अपने उक्त उद्घाटन भाषण में इसी बात को स्पष्ट करते हुए प्रतिनिधियों को बताया था :—

"कुछ भी हो इन पुस्तकालयों का लाभ राजवंशों तथा कुछ अमीरों तक

ही सीमित था। परिणाम-स्वरूप ज्ञान क्षेत्र का विस्तार सर्वसाधारण जनता तक नहीं हो सका। भारत के योरप से पीछे रह जाने का एक मुख्य कारण वास्तव मे पुस्तकालयों का उपयोग कुछ चुने हुए लोगों के लिए ही नियन्त्रित होना भी है। अतः आज प्रजातान्त्रिक भारत ने अपने अतीत से शिक्षा-ग्रहण की है और ज्ञान-प्राप्ति के साधनों को अपने समस्त सन्तानों के लिए सुगम बनाने में लगा है।"

यह सत्य है कि भारत की ज्ञान प्रचारक अनेक एजेंसियों में शनैः शनैः शिथिलता आती गई। धर्म-गुरु तथा वीतराग साधु-संन्यासी कथा, प्रवचन एवं उपदेशों के द्वारा जनता के बौद्धिक स्तर को ऊँचा उठाने के बजाय किसी दूसरी ही धारा में बह गए। पुस्तकालयों में संचित ज्ञान-राशि पर कुछ विशिष्ट वर्गों का एकाधिकार सा हो गया। राजनीतिक उथल-पुथल का भी घातक प्रहार हुआ। फलतः हमारे ज्ञान-स्रोत सूख गए और हम उन देशों से बौद्धिक विकास में पीछे रह गए जिनके निवासी हमारी सभ्यता के उस काल में अर्द्धनग्न और अशिक्षित थे।

पुनर्जागरण

यह हर्ष की बात है कि स्वाधीनता काल में अनेक संघर्षों के बीच गुजरते हुए भी भारत ने पुस्तकालय-क्षेत्र में आशातीत सफलता प्राप्त की है। यूनेस्को सेमिनार में पुस्तकालय सम्बन्धी भारतीय नीति को स्पष्ट करते हुए माननीय केन्द्रीय शिक्षा-मन्त्री महोदय ने कहा था :—

"जिन देशों ने प्रजातान्त्रिक शासन-प्रणाली को सार्वजनिक रूप से चुना है, वे अपनी अधिकांश प्रजा को अविकसित और अज्ञानी नहीं बनाए रख सकते। किसी राष्ट्र की स्थिति उसका स्तर, सम्मान और भविष्य अन्त में वहाँ की जन-शक्ति के गुणों पर ही निर्धारित होता है। हम लोगों को पुस्तकालय सम्बन्धी सुविधाओं की उन्नति के लिए विशेष प्रयत्न करना चाहिए जिससे शेष संसार के साथ भविष्य में आने वाले अवसरों को हम अपने समस्त नागरिकों को प्रदान कर सकें।"

हमारे प्रधान मन्त्री पण्डित नेहरू ने तो अनेक अवसरों पर यह इच्छा व्यक्त की है कि 'हर गाँव में एक पुस्तकालय' की स्थापना हो। अन्य अखिल भारतीय एवं प्रान्तीय राजनीतिक एवं सामाजिक नेताओं ने भी पुस्तकालय की महत्ता स्वीकार की है और उसे जन-जीवन का आवश्यक अङ्ग कहा है। इन विचारों से तथा केन्द्रीय एवं प्रान्तीय सरकारों द्वारा किए गए पुस्तकालय-विकास सम्बन्धी कार्यों से यह स्पष्ट है कि सम्पूर्ण देश में पुस्तकालय

सम्बन्धी पुनर्जागरण की एक लहर दौड़ गई है और एक नया युगारम्भ हो गया है। प्रत्येक क्षेत्र के विद्वानों के साथ पुस्तकालय-क्षेत्र के प्रसिद्ध विद्वान् डा० रङ्गनाथन जी को डाक्टरेट और पद्मविभूषण उपाधि से अलकृत किया जाना, विदेशों में उनके मौलिक विचारों का स्वागत, भारतीय पुस्तकालयाध्यक्षों की विदेश यात्राएँ और उनके वेतन-स्तर में वृद्धि, महिलाओं का भी इस क्षेत्र में सहर्ष प्रवेश और प्रशिक्षण प्राप्त करना, सर्वत्र प्रशिक्षित पुस्तकालयाध्यक्षों की माँग, पुस्तकालय-विज्ञान के प्रशिक्षण की सभी अचलों में व्यवस्था, लाइब्रेरी इक्विपमेण्ट सप्लाई करने वाली अनेक कम्पनियों की स्थापना, पुस्तकालयों के वैज्ञानिक सगठन और सचालन पर जोर दिया जाना तथा पुस्तकों के सरक्षण से अधिक उनके उपयोग पर ध्यान देना आदि ऐसी बातें हैं जिनसे पुनर्जागरण की पुष्टि होती है। अखिल भारतीय स्तर पर प्रत्येक जिले को केन्द्र मान कर पुस्तकालयों को सर्व सुलभ बनाने की योजना, प्रदेशों में पुस्तकालयों का सर्वेक्षण, विश्वविद्यालयों तथा अन्य शिक्षण सस्थाओं को पुस्तकालय-विकास के लिए विशिष्ट अनुदान, तथा विविध रूपों के नए पुस्तकालयों की स्थापना और विकास आदि कार्य भारत में पुस्तकालयों के उज्ज्वल भविष्य के द्योतक हैं।

इतना होते हुए भी हम निःसंकोच कह सकते हैं कि अभी हमारा लक्ष्य बहुत दूर है और वहाँ तक पहुँचने के लिए अभी अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य अपेक्षित हैं। हमें आशा है कि 'लाइब्रेरी ऐडवाइजरी कमेटी' के विद्वान् सदस्य उन समस्याओं की ओर विशेष रूप से ध्यान देंगे और उनके समाधान का समुचित सुझाव भी प्रस्तुत करेंगे जिसके फलस्वरूप हमारे पुस्तकालय भारत के बौद्धिक, आर्थिक, एव सास्कृतिक उत्थान में सहायक हो सकेंगे।

अनुक्रमणिका

सहायक सामग्री

आजादी के सात वर्ष	: भारत सरकार शिक्षा मंत्रालय ।
इण्डियन लाइब्रेरी डाइरेक्टरी	: इण्डियन लाइब्रेरी एसोसिएशन
एजुकेशन इन मुस्लिम इण्डिया	: जफर ।
ऐन्सेण्ट इण्डियन एजुकेशन	: राधाकुमुद मुकर्जी ।
डाइरेक्टी आफ आंध्र लाइब्रेरीज़	: आंध्र लाइब्रेरी एसोसिएशन ।
दि अल्फावेट	: डैविड डिरिंगर ।
दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी एण्ड ह्वाट इट आफर्स यू	: डी० आर० कालिया ।
द्वितीय पंचवर्षीय योजना	: भारत सरकार-शिक्षा-विभाग ।
नेशनल लाइब्रेरी इन इण्डिया	: " "
पुस्तकालय	: पुस्तक जगत, पटना ।
प्रथम पंचवर्षीय योजना	: भारत सरकार-पब्लिकेशन ब्रॉंच ।
प्राचीन भारत	: डा० रामशंकर त्रिपाठी ।
प्राचीन भारत	: एन० एन० घोष ।
प्राचीन भारतीय लिपिमाला	: श्री गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ।
बड़ौदा लाइब्रेरी मूवमेण्ट	: कुधालकर, जे० एस० ।
भारत के प्राचीन पुस्तकालय	: ओंकारनाथ श्रीवास्तव ।
भारत में अंग्रेजी राज्य	: सुन्दरलाल ।
भारतवर्ष का इतिहास	: डा० ईश्वरी प्रसाद ।
भारतीय शिक्षा का इतिहास	: प्यारेलाल रावत ।
भारतीय शिक्षा का संक्षिप्त इतिहास	: वंशीधर सिंह, भूदेव शास्त्री ।
मराठी ग्रन्थालयों च इतिहास	: पेंडोले, एल० वी० संपा० ।
लाइब्रेरीज़ इन इण्डिया	: भारत सरकार-शिक्षा मन्त्रालय ।
लाइब्रेरी डब्लपमेण्ट प्लान	: डा० एस० आर० रङ्गनाथन

लाइब्रेरी मूवमेण्ट : मद्रास लाइब्रेरी एसोसिएशन।
लाइब्रेरी मूवमेण्ट : रमन, वाई० एल० वी०।
लाइब्रेरी मूवमेण्ट इन ट्रावनकोर : कुरुनकर नायर, वी०।
शाहान मुगलियान के कुतुबखाने : जुबेर० एम०
सिंधु सभ्यता : डा० सतीशचन्द्र काला।
हिस्ट्री आफ नालन्दा : सकालिया।

भारतीय पुस्तकालय-जगत की निम्नलिखित पत्रिकाओं की पुरानी और नई फाइलों से भी सहायता ली गई है :—

अबगिला
इण्डियन लाइब्रेरियन
ग्रन्थालय
जनरल आफ ऑल इण्डिया लाइब्रेरी एसोसिएशन
पुस्तकालय
पुस्तकालय-संदेश
माडर्न लाइब्रेरियन
लाइब्रेरी बुलेटिन

इनके अतिरिक्त 'गगा पुरातत्त्वाङ्क' हिन्दी प्रचारक, प्रकाशन समाचार तथा कुछ फुटकर पत्रिकाओं की फाइलों, यूनिवर्सिटी कमीशन, एवं हायर सेकेण्डरी एजुकेशन कमीशनों की रिपोर्टों, राजकीय गजट तथा सरकारी शिक्षा विभागों के वार्षिक विवरणों से भी सहायता ली गई है।